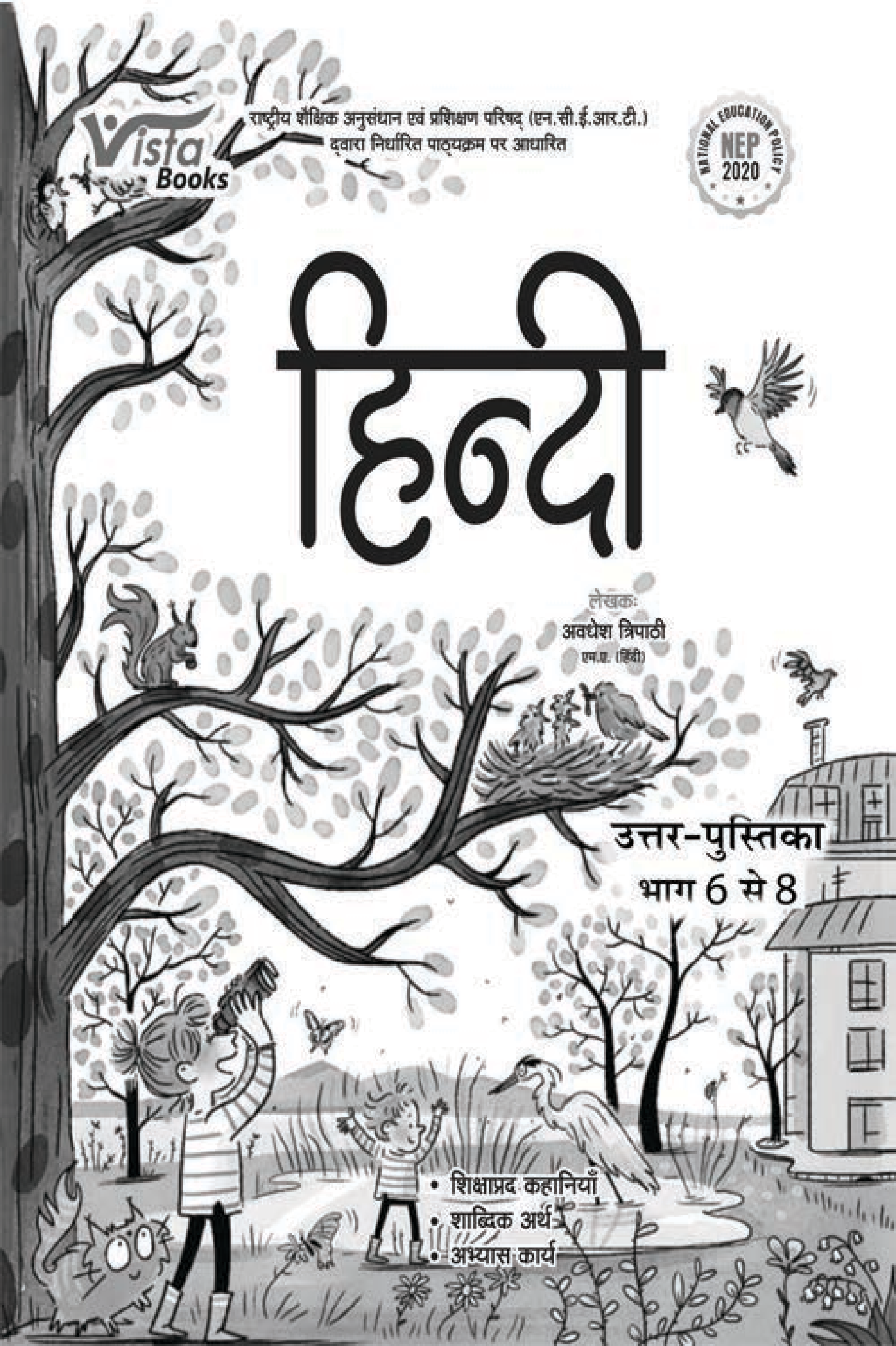

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.)
द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित

Vista Books

NEP 2020
NATIONAL EDUCATION POLICY

हिन्दी

लेखकः
अवधेश त्रिपाठी
एम.ए. (हिंदी)

उत्तर-पुस्तिका
भाग 6 से 8

- शिक्षाप्रद कहानियाँ
- शाब्दिक अर्थ
- अभ्यास कार्य

कक्षा-6

पाठ–1 : प्रभाती

मौखिक प्रश्न

(क) इस कविता के कवि रघुवीर सहाय जी हैं।

(ख) तारों को गिनकर लंबी रात काटी जाती है।

(ग) कवि ने स्वप्नलोक के पलों को अच्छी तरह से बिताया।

(घ) श्रमजीवी को धरती का प्यारा कहा गया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (घ) चंदा ने, 2. (क) तेज, 3. (क) प्रकाशवान।

लिखित प्रश्न

(क) किरणों की भीड़ में तारे खो गये।

(ख) समय की तेज़ चाल को सर्दी रोक रही थी।

(ग) तपती दुपहर में श्रमजीवी काम करने के लिए निकल पड़े।

(घ) कवि ने लोगों के दिन के लिए कामना की है क्योंकि वह सुबह होते ही तपती धूप में काम करते हैं।

(ङ) समय को गतिमान इसलिये कहा गया है क्योंकि समय किसी का इंतजार नहीं करता।

(च) सुबह को गरम धूप और दुपहर को तपती धूप कहा गया है।

(छ) स्वप्नलोक के पलों को क्षण-भंगुर के समान इसलिये कहा गया है क्योंकि सपनों की दुनिया जरा सी देर में नष्ट हो जाती है।

(ज) जागे सारा संसार प्रकाशमय हो दिन का क्षण क्षण।

भाषा और व्याकरण

2. (क) व्यक्तिवाचक, (ख) जातिवाचक, (ग) भाववाचक, (घ) जातिवाचक, (ङ) जातिवाचक 3. (ख) घबराहट, (ग) पिसावट, (घ) लिखावट, (ङ) पढ़ाई, (च) सिलाई, 4. (क) शाम, (ख) गरमी, (ग) चुस्त (घ) नीचे, (ङ) पराया, (च) आसमान 5. (क) दूरदर्शी, (ख) अदृश्य, (ग) अजेय, (घ) अनुदार (ङ) नीरस।

पाठ–2 : मित्रता

मौखिक प्रश्न

(क) व्यक्ति के जीवन में सबसे पहली कठिनाई उसे मित्र चुनने में होती है।

(ख) स्वयं से अधिक दृढ़ संकल्प वाले लोगों के साथ इसलिये बुरा होता है क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ देना और भी बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई नियंत्रण रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा होता है। दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवकों को प्राय: बहुत कम रहता है।

(ग) विश्वासपात्र मित्र मिलने पर व्यक्ति को समझना चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, उत्तमतापूर्वक जीवन–निर्वाह करने में हर तरह से हमारी सहायता करेंगे।

(घ) छात्रावस्था में मित्रता की धुन सवार रहती है। मित्रता हृदय से उमड़ी रहती है।

(ङ) राम और लक्ष्मण की मित्रता खूब इसलिये निभी क्योंकि राम धीर और शांत प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे, पर दोनों भाइयों में अत्यंत स्नेह था।

(च) कुसंग का ज्वर भयानक होता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) मित्र की संगति का प्रभाव हमारे आचरण पर पड़ता है। 2. (ख) सच्चा मित्र उत्तम वैद्य होता है। 3. (ग) बुरी बातों की ओर ध्यान जल्दी जाता है।

लिखित प्रश्न

(क) हमारी बात को ऊपर रखने वालों के साथ मित्रता रखना उचित नहीं है क्योंकि ऐसे लोगों का साथ रहना हमारे लिये बुरा हो सकता है जो हमसे अधिक दृढ़–संकल्पी हैं, क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है।

(ख) हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढ़ंग, थोड़ी चतुराई या साहस की दो चार बात किसी में देखकर लोग झटपट उसे अपना बना लेते हैं। इन बातों से प्रभावित होकर हम किसी को जल्दी ही अपना बना लेते हैं।

(ग) व्यक्ति अपने मित्र में देखना चाहता है कि वह विश्वासपात्र हो कि वह उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाए, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करे। हमें कुमार्ग से बचाये।

(घ) बुरी संगति युवा पुरुष को अवनति के गड्ढे में ले जायेगी।

(ङ) विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाए, उसे समझना चाहिए कि उसे एक अच्छा दोस्त मिल गया।

(च) सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी-से-अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए।

(छ) इंग्लैंड के एक विद्वान को युवावस्था में राज-दरबारियों में जगह नहीं मिली। इसके लिए ज़िंदगी भर वह अपने भाग्य को सराहता रहा।

(ज) जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर वह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रख रहा है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते उससे तुम्हारी घृणा कम हो जाएगी, पीछे तुम्हें इनसे चिढ न मालूम होगी। अंत होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे।

(झ) बुरे लोगों की संगति में जाने से अपने-आप को कितना भी बचाएँ, बुरा प्रभाव पड़ ही जाता है।

भाषा और व्याकरण

1. (क) धर्मार्थ (ख) बाल्यवस्था (ग) परोपकार (घ) सहानुभूति (ङ) पदार्पण (च) सूर्योदय (छ) युवावस्था (ज) उज्जवल 2. (क) विशाल (ख) कठोर (ग) कोमल (घ) हरा (ङ) खट्टी (च) चमकदार (छ) सफेद (ज) मीठा 3. (क) के नीचे (ख) को (ग) के पीछे (घ) से पहले (ङ) के पीछे 4. (क) और (ख) और (ग) और (घ) अन्यथा (ङ) अन्यया।

पाठ-3 : प्रेम में परमेश्वर

मौखिक प्रश्न

(क) मूरत बनिया गाँव में रहता था।

(ख) बढ़ती उम्र के साथ उसके मन में विचार आया कि वह भगवत भजन प्रेमी हो जाये।

(ग) मूरत के भाग्य में औलाद का सुख नहीं था।

(घ) भक्तमाला ग्रंथ के श्रवण, पठन, मनन करने की सलाह उसके मित्र ने दी थी।

(ङ) लालू बर्फ़ हटाने लगा। बूढ़ा आदमी था। शीत के कारण बर्फ़ न हटा सका। थककर बैठ गया और शीत के मारे काँपने लगा। मूरत ने सोचा कि लालू को ठंड लग रही है वह हाथ सेंकने लगा।

(च) मूरत ने गरीब स्त्री को ओढ़ने के लिए लोई तथा बच्चे को खाने के लिए मिठाई दी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) आठ वर्षों से, 2. (ग) परमात्मा की निष्काम भक्ति करने से, 3. (ग) अपने तीन साल के बच्चे के लिए।

लिखित प्रश्न

(क) मूरत अपने तीन साल के बालक का पालन पोषण इसलिये करने लगा क्योंकि यह बालक उनके जीवन का आधार बन गया था।

(ख) परम-आनंद की प्राप्ति तब होती है जब सब काम परमेश्वर को अर्पण करके जीवन व्यतीत करोगे।

(ग) ईश्वर ने मूरत को लालू के रूप में, स्त्री और बच्चे के रूप में और सेब बेचने वाले के रूप में मे दर्शन दिए।

(घ) वह बड़ा सदाचारी, सत्य-वक्ता व्यावहारिक और सुशील था। जो बात कहता उसे जरूर पूरा करता था। कभी धेले भर भी कम न तोलता और न ही मिलावट करता, अच्छी चीज न होती तो साफ-साफ कह देता।

(ङ) भगवत भजन के प्रेमी मूरत ने मंदिर जाना इसलिये छोड़ दिया क्योंकि बीस वर्ष की अवस्था में उनका पुत्र यमलोक सिधार गया।

(च) दुखी मूरत के मन में ईश्वर भक्ति का विश्वास उसके मित्र ने जगाया। उसका मित्र बोला ''परमात्मा की निष्काम भक्ति करने से अंत: करण शुद्ध होता है। जब सब काम परमेश्वर को अर्पण करके जीवन व्यतीत करोगे तो तुम्हे परमआनंद प्राप्त होगा''।

(छ) प्रभु का गुणगान करने से मूरत का जीवन आनंदपूर्वक बीतने लगा।

(ज) मैं एक सिपाही की स्त्री हूँ। आठ महीने से न जाने कर्मचारियों ने मेरे पति को कहाँ भेज दिया है, कुछ पता नहीं लगता गर्भवती होने पर मैं एक जगह रसोई का काम करती थी। ज्योंही यह बालक उत्पन्न हुआ तो उन्होंने इस भय से कि दो जीवों का अन्न देना पड़ेगा, मुझे निकाल

दिया। मैं तीन महीने से मारी-मारी फिर रही हूँ, कोई काम पर नहीं रखता। जो कुछ पास था, सब बेचकर खा गई। इधर साहूकार के पास जा रही हूँ। शायद काम पर रख लेगा।

भाषा और व्याकरण

(क) विस्मयवाचक वाक्य (ख) विधानवाचक वाक्य (ग) प्रश्नवाचक वाक्य (घ) इच्छावाचक वाक्य (ङ) संकेतवाचक वाक्य (च) आज्ञावाचक वाक्य (छ) संदेहवाचक वाक्य (ज) निषेधवाचक वाक्य।

पाठ-4 : छोटा जादूगर

मौखिक प्रश्न

(क) लेखक की पहली बार छोटे जादूगर से भेंट मेले में हुई।
(ख) छोटे जादूगर के परिवार में माँ और बाबूजी थे।
(ग) निशानेबाजी में छोटे जादूगर ने बारह खिलौने जीते।
(घ) छोटे जादूगर के पिता देश के लिए जेल गए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) माँ के लिए दवा खरीदना चाहता था। 2. (क) उसके पिता जेल में थे। 3. (ख) उसे लगता था कि उससे अच्छा खेल वह दिखा सकता है।

लिखित प्रश्न

(क) छोटा जादूगर अपनी जीविका खेल दिखाकर कमाता था।

(ख) लेखक की पत्नी द्वारा दिए रुपए से छोटे जादूगर ने पहले भरपेट पकौड़ी खायी फिर एक सूती कंबल लिया।

(ग) छोटा जादूगर गुड़िया का ब्याह, गुड्डा वर काना निकला, बिल्ली रूठने लगी, बंदर घुड़कने लगा, भालू मनाने लगा, इस तरह का खेल दिखाया करता था।

(घ) कार्निवाल में लेखक छोटे जादूगर को चूड़ी फेंकते हुए, खिलौनों पर निशाना लगाते हुए, तीर से नंबर छेदते हुए देखकर प्रभावित हुआ।

(ङ) 'माँ बीमार है और तब भी तुम खेल दिखाने चले आए' लेखक के ऐसा कहने पर छोटे जादूगर ने उसे तिरस्कार भरी दृष्टि से देखा और कहा ''तमाशा देखने नहीं; दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा।

(च) पाठ के आधार पर छोटे जादूगर की तीन विशेषताओं को निम्नलिखित प्रकार से दर्शाया गया है—

1. वह निशाना लगाने में पक्का निशानेबाज था।
2. वह झूठ नहीं बोलता था।
3. वह अपनी माँ से बहुत अधिक प्रेम करता था।

(छ) (i) उस छोटे जादूगर बच्चे के मुख पर गंभीर समस्या का दुख झलक रहा था। मैं बड़ी ही आसानी से देख पा रहा था।

(ii) उस बालक की माँ बीमार थी। पिताजी देश के लिये जेल चले गए। अब सारा भार उसके ऊपर आ गया। घर में माँ की दवाई लाने के लिये खेल दिखाता था। इस तरह से उस बालक को जल्दी बुद्धिमान बनना पड़ा।

(iii) लड़के की आँखों से ही सभी जादू का कार्यक्रम हो रहा था। वह धीरे-धीरे समझ गया था कि किस प्रकार का खेल दिखाकर वह अपने पास पैसे इकटठे कर सकता है।

भाषा और व्याकरण

2. (क) के पीछे (ख) के मारे (ग) के बिना (घ) के पीछे (ङ) के नीचे।

पाठ-5 : समय

मौखिक प्रश्न

(क) कवि ने किसी काम को मन लगाकर करने की प्रेरणा दी है।

(ख) आत्मविश्वास जगाने से कवि का यह तात्पर्य है कि किसी भी कार्य को आत्मविश्वास से करो और अपनी शंका को दूर रखो।

(ग) केवल सपने देखने का यह परिणाम होता है कि वे केवल मन की इच्छा बनकर ही रह जाते हैं।

(घ) कार्य पूरा न होने और समय बीत जाने पर हम पछताते रह जाते हैं।

(ङ) समय पर काम करने से व्यक्ति को जीवन के सभी सुख मिलते हैं।

(च) आलसी व्यक्ति को जीवन में सुख नहीं मिलता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (घ) समय 2. (क) सियाराम शरण गुप्त

लिखित प्रश्न

(क) सुयोग के पास खड़े होने का यह अर्थ है कि अभी हमारे पास समय है कार्य करने के लिए।

(ख) मन की इच्छा को पूरी करने के लिए हमें समय को नष्ट नहीं करना चाहिए।

(ग) आलस्य के कारण व्यक्ति को जीवन में कोई भी सुख नहीं मिल पाता है।

(घ) हम स्वयं को यह कहकर छलते हैं कि हमारा समय भी आएगा।

(ङ) उद्योगी व्यक्ति के लिए हर पल ही 'सुसमय' होता है क्योंकि वह अपना समय नष्ट नहीं करता है।

(च) हम अपने जीवन रूपी वृक्ष को समय का सदुपयोग करके सुविकसित कर सकते हैं।

(छ) इस कविता के द्वारा कवि लोगों को यह प्रेरणा देना चाहते हैं कि हमें अपने आलस्य के कारण समय को नष्ट नहीं करना चाहिए।

(ज) जीवन में एक-एक पल का सदुपयोग कर व्यक्ति इस प्रकार महान बनता है क्योंकि इससे वह जीवन में प्रत्येक देखे गये अपने सपने को सच करता है और ऊँचाईयों पर पहुँचता है।

भाषा और व्याकरण

1. (क) अकर्मक क्रिया, (ख) सकर्मक क्रिया, (ग) सकर्मक क्रिया, (घ) अकर्मक क्रिया, (ङ) सकर्मक क्रिया, (च) सकर्मक क्रिया, (छ) सकर्मक क्रिया, (ज) अकर्मक क्रिया

2. (क) उद्योगी, (ख) बुद्धी, (ग) विद्यालय, (घ) गंगा, (ङ) अद्र्ध, (च) शुद्ध, (च) चिह्न

3. (क) जिज्ञासी, (ख) सत्यवादी, (ग) अविश्वासी, (घ) उपकारी, (ङ) अनुयायी, (च) हार्दिक, (छ) चित्रकार, (ज) दर्शनीय

रचनात्मक कार्य

स्वयं कीजिए।

पाठ-6 : हींगवाला

मौखिक प्रश्न

(क) खान की आयु लगभग 35 वर्ष की थी।

(ख) हींगवाला सावित्री से हींग लेने का आग्रह इसलिए कर रहा था क्योकि उसे अपने देश जाना था।

(ग) हींगवाला ने सावित्री को पाँच तोले का दाम बताकर हींग सावित्री को बेची।

(घ) सावित्री की बेटी ने अपने भाई से कहा ''तुम माँ से पैसा ना माँगो। वे तुम्हे न देंगी। उनका बेटा वही खान है ''।

(ङ) दशहरे के दिन काली का जुलूस निकलने वाला था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) ढेर सारी हींग रखी थी। 2. (ग) खान द्‌वारा जबरदस्ती हींग तौलने पर। 3. (ग) सावित्री के छोटे बच्चे ने।

लिखित प्रश्न

(क) हींग बेचनेवाला खान सावित्री के घर में मौल सिरी के नीचे बने हुए चबूतरे पर बैठा करता था।

(ख) खान ने सावित्री से आग्रह किया अम्मा हींग ले लो।

(ग) खान ने हींग की विशेषता बताई की ''हेरा हींग है मां,''।

(घ) छोटे लड़के ने पैंतीस पैसे लेने की जिद की।

(ङ) बच्चे काली का जुलूस देखने जाने की जिद कर रहे थे।

(च) सावित्री ने बच्चों की नाराज़गी दूर करने के लिए उन्हें काली का जुलूस देखने के लिए भेज दिया।

(छ) होली में हुए दंगे की खबर सुनकर सावित्री इसलिये चिंतित होने लगी क्योंकि उसके तीनों बच्चे भी वहाँ पर थे।

(ज) सावित्री ने काली के जुलूस में न जाने के लिए बच्चों को पैसों का, खिलौनों का, सिनेमा का, न जाने कितने प्रलोभन दिए क्योंकि उसे सभी बच्चों की चिंता रहती है।

भाषा और व्याकरण

1. (i) जातिवाचक संज्ञा (ii) व्यक्तिवाचक संज्ञा (iii) भाववाचक संज्ञा (iv) भाववाचक संज्ञा (v) समूहवाचक संज्ञा (vi) समूह या समुदायवाचक संज्ञा (vii) द्रव्यवाचक संज्ञा 2. (क)हाथ–पाँव फूलना : अर्थ–(घबरा जाना)

वाक्य– पड़ोसी के साथ अपने भाई की लड़ाई को देखकर पूजा के हाथ पाँव फूलने लगे।

(ख) आसमान टूट पड़ना : अर्थ–(मुसीबत आ जाना)

वाक्य–रामू के पिता के निधन के बाद रामू पर तो मानो जैसे आसमान टूट पड़ा।

(ग) हाथ-पाँव ठंडे पड़ना : अर्थ—(घबरा जाना)
वाक्य—परीक्षा परिणाम को देखकर मेरे हाथ पाँव ठंडे पड़ गये।

4. (क) विकारी, (ख) अविकारी, (ग) विकारी, (घ) विकारी, (ङ) विकारी, (च) अविकारी।

पाठ-7 : कोणार्क

मौखिक प्रश्न

(क) कोणार्क दो शब्दों से मिलकर बना है- कोण और आर्क। कोण का अर्थ है- कोना और आर्क प्रयुक्त होता है सूर्य के लिए।

(ख) राजा नरसिंह देव ने सूर्य मंदिर की स्थापना 13वीं शताब्दी में की थी।

(ग) आदिकाल से सूर्य की आराधना इसलिए की जाती है क्योंकि हमें सूर्य से ऊर्जा, प्रकाश, ऊष्मा, शक्ति तथा चेतना मिलती है। समय का चक्र सूर्य है। इतिहास साक्षी है कि सभ्यता के आरंभ से ही मनुष्य ने सूर्य की शक्ति को पहचाना और उसकी पूजा आराधना की।

(घ) कोर्णाक मंदिर सूर्य के आकार का है। इसे बनाने में 12 वर्ष लगे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) सूर्य, 2. (ख) पेड़-पौधे, 3. (ख) बारह वर्ष, 4. (ग) स्थापत्य/वास्तुकला, 5. (ख) वायु, 6. (ग) सिंह, 7. (क) अपनी विजय पताका फहराने के लिए, 8. (घ) ये सभी।

लिखित प्रश्न

(क) कोणार्क मंदिर उड़ीसा की तीन स्वर्णिम नगरियों भुवनेश्वर, कोणार्क और पुरी के त्रिकोण में स्थित, भारत के पूर्वी समुद्र तट पर निर्मित एक अभूतपूर्व स्मारक, भारत के गौरवमय इतिहास का प्रतीक कला की उन्नत अवस्था का द्योतक और मानव की सबसे उत्कृष्ट और उदात्त भावना का उदाहरण है।

(ख) कोणार्क के सूर्य मंदिर के प्रवेश द्वार पर सिंह की मूर्तियाँ हैं।

(ग) सूर्य भारत के गौरव इतिहास का प्रतीक है।

(घ) सूर्य का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। सूर्य से हमें ऊर्जा, प्रकाश, शक्ति, ऊष्मा तथा चेतना मिलती है।

(ङ) प्रकाश-संश्लेषण तथा जल-चक्र सूर्य द्वारा ही संचालित हैं। जल-चक्र, नाइट्रोजन-चक्र सभी कुछ सूर्य द्वारा ही संचालित है।

(च) स्वयं कीजिए।

(छ) नट मंदिर तथा भोग मंदिर इसलिए बनवाए गए थे क्योंकि नट मंदिर में भगवान सूर्य के प्रति अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए नृत्य गायन, वादन होता था व भोग मंदिर में भगवान सूर्य का भोग तैयार होता था।

(ज) सूर्य मंदिर में सूर्य भगवान की तीन मूर्तियाँ हैं, एक पर प्रातःकालीन प्रकाश, दूसरी पर दोपहर के सूर्य की किरणें तथा तीसरी पर सूर्यास्त की रोशनी पड़ती है।

भाषा और व्याकरण

1. (क) बक-बक (ख) डबडबा (ग) खटपट (घ) टर्र-टर्र (ङ) भिनभिना (च)टिक-टिक 2. (क) मानस- व्यक्तिवाचक संज्ञा, विद्यालय-एकवचन (ख) तुमने-कर्ताकारक, पढ़- संयुक्त क्रिया (ग) में नहीं- स्त्रीलिंग (घ) कल- संयुक्त क्रिया।

पाठ-8 : इच्छापूर्ति

मौखिक प्रश्न

(क) सुशील ने स्कूल से छुट्टी लेने के लिए पेट में दर्द का बहाना बनाया।

(ख) सुशील के पिता ने उसे पाचक पीने के लिए इसलिए दिया क्योंकि वह उसे सबक सिखाना चाहते थे।

(ग) सुबल और सुशील की इच्छा इच्छारानी ने पूरी की।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) वह रोज-रोज की पढ़ाई से तंग आ गया था। 2. (ग) पिताजी की तरह मन मरजी का काम कर सके। 3. (क) वह खूब खेल सके। 4. (क) वे बहुत प्रसन्न थे।

लिखित प्रश्न

(क) सुशील के कपड़े उसके बदन में इसलिये फँस गए थे क्योंकि इच्छारानी ने उनके पिता को बेटा बना दिया और बेटे को बाप बना दिया।

(ख) पिता सुबल बालक बनकर भी इसलिये खुश नहीं थे क्योंकि वह बालक बनकर परेशान हो गए थे।

(ग) बड़े सुशील को देखकर बच्चे इसलिये भाग जाते हैं क्योंकि वह छोटे बच्चों में बहुत बड़ा लगता था।

(घ) इच्छा रानी पिता-पुत्र की इच्छा पूरी करके उन्हें यह बताना चाहती थी कि मनुष्य का जो रूप हो उसे उसी में संतुष्ट रहना चाहिए।

(ङ) सब लोग बालक सुबल पर इसलिये हँसते थे क्योंकि वह बड़े रूप मे परिवर्तित होकर छोटे बच्चों वाली हरकतें करता था।

(च) अपने पुराने रूप में लौटने पर दोनों ने चैन की साँस इसलिये ली क्योंकि वह उस रूप से काफी परेशान हो गये थे।

(छ) इस नाटक से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने कर्तव्यों को समझना चाहिये, कार्य को पूरी लगन से करना चाहिए और समय की गति को समझना चाहिए।

भाषा और व्याकरण

1. (क) श्रृंखला (ख) गुलदस्ता (ग) ढेर (घ) दल (ङ) मंडली (च) समूह

2. रंगीन विराम चिह्न का सही नाम चुनिए—

1. (ख) प्रश्नवाचक चिह्न
2. (ग) विस्मयादिबोधक चिह्न
3. (ग) उद्धरण चिह्न
4. (घ) लाघव चिह्न
5. (क) योजक
6. (ग) अल्पविराम
7. (ख) उद्धरण चिह्न।

पाठ-9 : श्रेय

मौखिक प्रश्न

(क) किसी ने इसलिये कहा कि पेड़ अपनी जगह पर अड़ा हुआ है क्योंकि गर्मी हो, सर्दी हो या बरसात हो सभी को वह झेलता रहता है।

(ख) पेड़ लौह-स्तंभ की तरह खड़ा है।

(ग) पेड़ अनहोनी को भाँप गया और कहा कि मुझे झूठा श्रेय नहीं चाहिये अगर श्रेय देना है तो मेरी नीचे की जो मिट्टी जिसने मेरी जड़ों को पकड़ रखा है, उसको श्रेय दो।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) आँधी-पानी में (ग) विनम्रता की (घ) झूठा श्रेय।

लिखित प्रश्न

(क) कविता में पेड़ को 'लौह-स्तभ' इसलिये कहा गया है क्योंकि वह काफी समय तक सीधा खड़ा है।

(ख) पेड़ अनहोनी को देखकर काँप उठा।

(ग) 'पत्तियाँ चुप न रह सकीं' क्योंकि वह कह रही थी श्रेय देना है तो मुझे मत दो, मेरी पैरों तलों की मिट्टी को दो।

(घ) किसी ने पेड़ से कहा तुम सालों तक यूँ ही खड़े रहते हो, आँधी पानी में, सूरज उगता है, चाँद बढ़ता-घटता है, ऋतुएँ बदलती हैं लेकिन तुम ऐसे ही खड़े रहते हो।

(ङ) पेड़ ने मिट्टी को श्रेय इसलिये दिया क्योंकि मिट्टी ने ही पेड़ों की जड़ों को पकड़ रखा है।

(च) 'विनम्रता की हरियाली को ओढे' से कवि का तात्पर्य है कि तुम इतने लंबे समय सभी कुछ सहते आ रहे हो इतना कुछ तुमने सभी को दिया है।

(छ) 'अनहोनी को भाँप उठा' से कवि उस अनहोनी की बात कर रहा है मौसम खराब होने वाला है पत्तियों की सन-सन की आवाज सुनाई देने लगी है।

(ज) पेड़ ने लौह-स्तंभ की तरह खड़े होने का झूठा श्रेय नहीं लिया।

भाषा और व्याकरण

1. (क) पुल्लिग (ख) पुल्लिग (ग) स्त्रीलिंग (घ) पुल्लिग (ङ) स्त्रीलिंग (च)स्त्रीलिंग (छ) पुल्लिग (ज) स्त्रीलिंग, (झ) स्त्रीलिंग (ञ) स्त्रीलिंग।

2. (क) तत्सम शब्द—अग्नि, हास्य, मूर्खता, दुभाषिये, सूर्य (ख) तद्भव शब्द—नींद, उपजाऊ, गरमी, सौदागार, अभिलाषा, धौंकनी (ग) देशज शब्द—टेकड़ी, मुश्किल, निशान, मुकाम, क्षेत्र, हिमाकत (घ) विदेशी शब्द—फैंसी, थियेटर, टोपी।

3. समान तुक वाले शब्द लिखो—

(क) कड़े हो (ख) भाँप उठा (ग) उजड़ा (घ) गिरती है (ङ) उखड़ा (च) पढ़ती

4. रिक्त स्थानो में पर्यायवाची शब्द लिखिए—

(क) घर - गृह, सदन (ख) अँधेरा - अन्धकार, तिमिर

(ग) अतिथि - मेहमान, अभ्यागत (घ) जंगल- विपिन, कानन

(ङ) नदी - सरिता, तरंगिणी (च) पुत्री - बेटी, तनया

5. निम्नलिखित शब्दों के अनेकार्थी शब्द लिखिए—

(क) कर- टैक्स, चुंगी (ख) अंबर- आसमान, गंगन (ग) धन- पैसा, पूँजी (घ)पत्र- चिट्ठी, खत।

पाठ-10 : क्या निराश हुआ जाए

मौखिक प्रश्न

(क) समाचार पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। इन समाजिक बुराइयों को देख लेखक का मन दुखी हो जाता है।

(ख) बस के कुछ यात्री बस ड्राइवर को मारने पर इसलिये उतारु हो गये थे क्योंकि ड्राइवर ने बस एक निर्जन सुनसान स्थान पर रोक दी थी। बस मे बैठे लोग तरह-तरह की बातें करने लगे " यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था।

(ग) इस पाठ से हमें यह संदेश मिलता है कि हमें पहले किसी व्यक्ति की बात को समझ लेना चाहिये तब उस बात पर फिर चर्चा करनी चाहिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) भौतिक वस्तुओं के, 2. (ग) दस के बजाय सौ रुपए का नोट दिया। 3. (ग) इस कंडक्टर ने डाकुओं को बुलाने के लिए भेज दिया है, 4. (ग) आक्रोश है।

लिखित प्रश्न

(क) तिलक और गाँधी ने अच्छे भारत का सपना देखा।

(ख) टिकट बाबू लेखक को ढूँढते हुए सेकेंड क्लास के डिब्बे में आया।

(ग) लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यामान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्तिमान लेना और मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचारण है।

(घ) भ्रष्टाचार के विरूदध लोगों का आक्रोश यह सिद्ध करता है, कि हमें ऐसी चीजों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

(ङ) जीवन के महान मूल्यों पर से आज हमारी आस्था डगमगाने लगी है क्योंकि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और

भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं, ईमानदारी की मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरू और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है।

(च) वर्तमान परिस्थिति में भी हताश हो जाना ठीक नहीं है। सदा मनुष्य-बुद्धि नई परिस्थितियों का सामना करने के लिए नए सामाजिक विधि-निषेधों को बनाती है, उन्हें ठीक साबित होने पर उन्हें बदलती है, नियम कानून सबके लिए बनाए जाते हैं, पर सबके लिए कभी-कभी एक ही नियम सुखकर नहीं होते। सामाजिक कायदे कानून कभी-कभी युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते हैं।

(छ) एक बाद रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाए सौ रुपए का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकेंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपए रख दिए और बोला—"यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा मैंने भी नहीं देखा।" उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया। कैसे कहूँ कि दुनिया से सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

(ज) (i) इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरू और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

(ii) दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष पर उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एक मात्र कर्त्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बाता है। अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

(iii) भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा

नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरू हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

भाषा और व्याकरण

2. (क) बेटा, वत्स, तनय (ख) शंका, संशय, खटका (ग) हिंदुस्तान, भारतवर्ष, इंडिया (घ) संसार, जगत, लोक (ङ) मर्यादा, शान, वैभव (च) अक्ल, मेद्या, प्रज्ञा।

पाठ-11 : अशोक का शस्त्र-त्याग

मौखिक प्रश्न

1. (क) कलिंग के साथ चार वर्षों से युद्ध हो रहा था।
   (ख) कलिंग-दुर्ग के फाटक इसलिये बंद थें क्योंकि कलिंग को जीत नहीं पाए थे। दुर्ग पर मगध का पताका नहीं फहराया था। कलिंग के महाराज मारे गए थे। उनके सेनापति पहले ही कैद हो चुके थे फिर भी कलिंग आत्मसमर्पण नहीं कर रहा था।
   (ग) पद्मा कलिंग की राजकुमारी थी।
   (घ) अशोक स्त्रियों पर हथियार इसलिये नहीं उठाना चाहता था क्योंकि यह शास्त्र की आज्ञा है।
   (ङ) राजकुमारी ने अशोक पर हथियार इसलिये नहीं उठाया, क्योंकि अशोक ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया और राजकुमारी निहत्थे पर वार नहीं करती।
   (च) अशोक ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

2. (क) अशोक कलिंग के दुर्ग पर विजय की पताका फहराना चाहता था।
   (ख) अशोक ने अपने सैनिकों को सूचना दी, मेरे वीर सैनिकों! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम इस कलिंग को जीत नहीं पाए।
   (ग) अशोक ने सैनिकों के साथ प्रतिज्ञा की आओ, आज हम अपनी मातृभूमि की शपथ लेकर प्रण करें कि या तो हम कलिंग-दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे या सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जाएंगे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) मगध के, 2. (ग) चार।

लिखित प्रश्न

1. (क) अशोक की चिंता का मूल कारण कलिंग पर विजय प्राप्त करना है।
   (ख) संवाददाता ने सूचना दी कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए हैं।
   (ग) अशोक ने स्वयं सेना का संचालन करने का निर्णय इसलिये लिया कि कल या तो कलिंग-दुर्ग के फाटक खुल जाएँगे या मगध की सेना वापस चली जाएगी।
   (घ) अशोक ने अपनी तलवार इसलिये फेंक दी, क्योंकि वह राजकुमारी से युद्ध नहीं करना चाहते थे।
   (ङ) अशोक को बौद्ध धर्म की दीक्षा बौद्ध भिक्षु ने दी।
   (च) कलिंग दुर्ग का फाटक खुलने पर अशोक और उसके सैनिक आश्चर्य चकित हो जाते हैं, क्योंकि अचानक दुर्ग का फाटक खुल जाता है।
   (छ) राजकुमारी पद्मा ने अपनी स्त्री सेना को ललकारते हुए कहा, बहिनों! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर-पत्नी हो। मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना जिस सेना ने तुम्हारे पिता, भाई, पुत्र और पति की हत्या की है, वह तुम्हारे सामने खड़ी है। आज उसी से तुम्हें लोहा लेना है।
   (ज) मैं कलिंग महाराज की कन्या हूँ। मैं हत्यारे अशोक की सेना से लड़ने आई हूँ। जब तक मैं हूँ, मेरी ये वीरांगनाएँ हैं, कलिंग के अंदर कोई पैर नहीं रख सकता।
   (झ) अशोक ने पद्मा के आगे सिर झुकाते हुए कहा, बहुत हो चुका राजकुमारी! मैं अब युद्ध नहीं करूँगा, कभी युद्ध नहीं करूँगा।
   (ञ) पद्मा ने अशोक को जीवन-दान इसलिये दे दिया, क्योंकि वह निहत्थों पर वार नहीं करती।

भाषा और व्याकरण

1. सामासिक पद — विग्रह
   समास का नाम
   (क) देशभक्ति — देश की भक्ति
   तत्पुरुष समास
   (ख) राजकुमारी — राजा की कुमारी
   तत्पुरुष समास

(ग) यथाविधि — विधि के अनुसार
अव्ययीभाव समास

(घ) फूल-काँटा — फूल और काँटा
द्वंदव समास

(ङ) युद्धभूमि — युद्ध की भूमि
अव्ययीभाव समास

(च) प्रतिपल — प्रत्येक पल
अव्ययीभाव

(छ) मानव-दानव — मानव और दानव
द्वंदव समास

(ज) विजय-लालसा — विजय और लालसा
द्वंदव समास

2. (क) पाप-कर्म, (ख) कंजूस, (ग) साथ, (घ) पुस्तक, (ङ) गौ, (च) युवा।

3. (क) अन्याय, (ख) अपकार, (ग) कायर, (घ) उपकारी, (ङ) वाचाल।

4. (क) संख्यात्मक विशेषण, (ख) सार्वनामिक विशेषण, (ग) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, (घ) सार्वनामिक विशेषण, (ङ) संख्यात्मक विशेषण।

पाठ-12 : काका हाथरसी के पत्र

मौखिक प्रश्न

(क) काका जी को पद्मश्री पुरस्कार मिला।
(ख) काका जी को पुरस्कार राष्ट्रपति भवन में दिया गया।
(ग) नई दिल्ली के लोधी होटल से।
(घ) न्यूयार्क से
(ङ) 2 महीने 22 दिन।
(च) वे अमेरिका से भेंटस्वरूप काफी सामान लाए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 18 घंटे, 2. (क) 40 कार्यक्रम 3. (ख) सफाई एवं ईमानदारी से

लिखित प्रश्न

(क) महामहिम ने अवार्ड देकर हाथ मिलाया, फिर उनकी छाती पर मैडल लटकाया।

(ख) उन्होंने कहा, ''काका जी! आपको तो पद्मभूषण मिलना चाहिए था।''

(ग) सरकार ने पद्मश्री अवार्ड पाने वालों के रहने एवं खाने पीने के लिए होटल में व्यवस्था की थी।

(घ) काकी जी ने अमरीका में हवाई यात्राएँ, कार-यात्राएँ एवं रेल यात्राएँ की।

(ङ) काकाजी ने कहा कि वहाँ के लोग ईमानदार हैं।

(च) काका जी वहाँ शाही महलों में रहे, खूब खाया-पिया और सैर-सपाटा किया।

(छ) काका जी गरम कुरता-पाजामा डालकर, मफलर गले में कसकर हाथों में दस्ताने, पैरों में मौजे फिट करके चले जाते थे और आधा घंटे कुदन्ना मारकर लौट आते थे।

(ज) क्योंकि भारत उनकी जन्मभूमि थी, वहाँ उनकी काकी भी थी। इसी कारण उन्हें भारत की याद आई।

भाषा और व्याकरण

1. (क) अजन्मा (ख) अजर (ग) अमर (घ) अनुदार (ङ) दूरदर्शी
   (च) मांसाहार

2. (क) उसने संतोष की सांस ली।
   (ख) सविता जोर से हँसी।
   (ग) वह धीमे स्वर में बोला।
   (घ) मुझे बहुत आनंद आता है।
   (ङ) मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
   (च) उसने अनेक ग्रंथ लिखे।

3. (क) प्रहार, विहार, निहार
   (ख) अशिक्षा, शिक्षार्थी, शिक्षालय
   (ग) राष्ट्रीय, राष्ट्रगान, राष्ट्रभाषा
   (घ) अज्ञान, अभिज्ञान, विज्ञान

4. (क) वैज्ञानिक (ख) व्यक्ति (ग) परिणाम (घ) अधिकारी (ङ) व्यंजन (च) परिधान

5. (क) छक्के छुड़ाना- हरा देना
   भारतीय क्रिकेट टीम ने पाकिस्तानी टीम के छक्के छुड़ा दिए।
   (ख) बाछें खिलना- प्रसन्न होना
   परीक्षा में अव्वल आने पर राकेश के पिता जी की बाछें खिल गयीं।

(ग) काला अक्षर भैंस बराबर– निरक्षर होना
रामलाल पत्र नहीं पढ़ सकता क्योंकि उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।

(घ) पापड़ बेलना– कठिन परिश्रम करना
क्रान्तिकारियों ने आजादी के लिए दिन–रात पापड़ बेले थे।

(ङ) इधर–उधर की हाँकना– फिजूल बातें करना
राम के दादा जी जब भी गाँव से आते हैं, तो इधर–उधर की हाँकने लगते हैं।

6. (क) इस कठिन कार्य को तुम ही कर सकते हो।
(ख) मैं भी मन लगाकर पढ़ाई करूँगा।

7. (क) दुर्भाग्य (ख) नीरस (ग) कृतघ्न (घ) विदेश (ङ) उष्ण

पाठ 13 : माँ, कह एक कहानी

मौखिक प्रश्न

(क) माँ अपने बेटे को कहानी सुना रही है।

(ख) प्रात:काल उपवन में पिता भ्रमण कर रहे थे।

(ग) शिकारी का बाण लगने से हंस घायल हो गया।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) शिकारी और सिद्धार्थ
2. (ख) अपना विषय
3. (क) दो व्यक्ति
4. (ख) बात राजा तक पहुँच गई
5. (ख) वह अपने को केवल श्रोता मान रहा था
6. (ख) निरपराध को
7. (ख) उसने समझा कि रक्षक भक्षक से बड़ा होता है।

लिखित प्रश्न

1. (क) बुद्ध की पत्नी यशोधरा ने मानधन शब्द का प्रयोग राहुल के लिए किया है।
(ख) उपवन में हंस आहत होकर गिर पड़ा था।
(ग) राहुल के पिता का विवाद शिकारी के साथ हुआ।
(घ) शिकारी घायल पक्षी पर अपना अधिकार इसलिये मानता है, क्योंकि उसे लगता था कि मारने वाले का अधिकार होता है।

(ङ) दोनों राजा के दरबार में न्याय के लिए गये। वहाँ पक्षी के पक्ष में निर्णय सिद्धार्थ को दिया गया।

(च) कविता में हमें सबसे अच्छा सिद्धार्थ लगा, क्योंकि उन्होंने हंस को बचाया।

(छ) (i) सिद्धार्थ का लक्ष्य हंस को बचाना था।
यह थी हृदय को करुणा से भरने वाली कहानी।

(ii) बचाने वाले का अधिकार अधिक होता है, जबकि मारने वाले का अधिकार नहीं होता है। न्याय करने वाला राजा दया का दानी था।

(iii) एक पक्ष को नुकसान हुआ।
दुखों से भरी थी यह कहानी।

भाषा और व्याकरण

1. (क) हिले–मिले (ख) पक्षी–रक्षी (ग) चेटी–बेटी (घ) पाया–आया

2. (क) मीठी (ख) गुदगुदी (ग) तरल (घ) नखरीला (ङ) चंचल (च) रंगीन 3. (क) निर्दयी (ख) कठिन (ग) भक्षक (घ) विरोधी (ङ) न्याय (च) हानि (छ) बुरा (ज) जाना (झ) विदेश 4. (क) वर्ण–पत्र (ख) कल–आने वाला कल (ग) पक्ष–पहलू (घ) कर–टैक्स।

पाठ–14 : बूढ़ी काकी

मौखिक प्रश्न

(क) काकी ने सारी संपत्ति अपने भतीजे पंडित बुद्धिराम के नाम लिख दी थी।

(ख) बुद्धिराम की पत्नी का नाम रूपा था।

(ग) परिवार में लाडली काकी से प्यार करती थी।

(घ) बुद्धिराम के द्वार पर शहनाई इसलिए बज रही थी क्योंकि बुद्धिराम के बड़े लड़के मुखराम का तिलक आया था।

(ङ) बूढ़ी काकी पश्चाताप इसलिये कर रही थी क्योंकि बुद्धिराम ने उसको घसीटा, पटका और उन्हीं पूड़ियों के लिए रूपा ने सबके सामने उन्हें गालियाँ दी।

(च) बूढ़ी काकी पत्तलें इसलिए चाट रही थी क्योकि उन्हें भूख लग रही थी।

(छ) काकी के लिए रूपा थाली परोसकर लायी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) किसी ने 2. (ख) रूपा ने 3. (ख) रूपा ने 4. (ख) काकी ने

लिखित प्रश्न

(क) काकी ने अपनी सारी संपत्ति अपने भतीजे बुद्धिराम को दे दी थी क्योंकि उनके अब एक भतीजे के सिवाय और कोई न था।

(ख) काकी की संपत्ति की वार्षिक आय डेढ़-दो सौ रुपए से कम न थी।

(ग) बुद्धिराम की सुचेष्टा को व्यय का भय दबाए रखता था।

(घ) काकी की शरण लेना लाडली को उनकी लोलुपता के कारण बहुत महँगी पड़ती थी।

(ङ) रूपा की कड़वी बातें सुनकर काकी चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चली गई।

(च) बुद्धिराम ने काकी के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया।

(छ) लाडली को काकी को पूड़ियाँ खिलाने की ख़ुशी में नींद नहीं आ रही थी।

(ज) बुढ़ापे में बचपन का भोले-भाले बच्चों की भाँति, जो मिठाइयाँ पाकर मार और तिरस्कार भूल जाते हैं।

(झ) बुद्धिराम द्वारा काकी से किए गए वादे केवल सब्ज़बाग थे क्योंकि बुद्धिराम ने उनमें से एक भी कार्य नहीं किया था।

(ञ) लड़के काकी के कोई चुटकी काटकर भागता, कोई उन पर पानी की कुल्ली करके सताया करते थे क्योकि लड़कों को बुड्ढों से स्वाभाविक विद्वेष होता है।

(ट) काकी धीरे-धीरे रेंगती हुई कड़ाहे के पास खाने की महक सूघँने और खाना-खाने के लिए आकर बैठ गई।

(ठ) लाडली की आवाज़ सुनकर काकी झटपट उठ बैठी और दोनों हाथों से लाडली को टटोला और उसे गोद में बैठा लिया।

भाषा और व्याकरण

4. (क) अविकारी (ख) विकारी (ग) अविकारी (घ) विकारी

5. (क) शाबाश (ख) लगी थी, इसलिए (ग) के बाहर (घ) के भीतर (ङ) के बिना

6. (क) के पास (ख) के सहारे (ग) खा-पीकर (घ) चीख मारकर (ङ) ने काकी

पाठ-15 : देवताओं का अंचलः कुल्लू

मौखिक प्रश्न

1. (क) कुल्लू जाने के लिए व्यास नदी को रस्सी से झूलना पुल से पार करना पड़ता है।

(ख) लारी की रफ्तार कम करने के लिए पुल का चौकीदार अपनी पीठ पर एक तख्ती टाँगे (जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा रहता है—(चार मील रफ्तार। इस आदमी के पीछे-पीछे इसी की चाल से चलो) आगे-आगे चलता है मोटर उसके पीछे चलती है। पुल के दोनों ओर पहरा रहता है, जबकि चौकीदार की अनुमति के बिना कोई आर-पार नहीं जा सकता है।

(ग) 'मणिकर्ण' में गरम पानी के कई स्त्रोत हैं जिनकी उष्णता अलग-अलग है। कोई नहाने के लिए ठीक है, तो किसी में चावल भी उबाले जा सकते हैं।

(घ) कुल्लू का सबसे बड़ा मेला दशहरे का मेला है।

(ङ) कुल्लू से मनाली 23 मील दूर है।

(च) हिडिंबा भीम की पत्नी थी।

2. (क) 3 (ख) 4 (ग) 5 (घ) 6 (ङ) 2 (च) 1

3. (क) देवताओं के अंचल का सुनहला ऊपरी छोर है।

(ख) आँखें उस सौंदर्य को पीती जाती थीं और मानो अपने पर विश्वास नहीं कर पा रही थीं।

(ग) कि मैं बाहर बिखरी हुई सौंदर्य-राशि को देखकर भी भीतर-ही-भीतर अपने पुराने बंदी-जीवन की स्मृतियाँ निकालता जाता था।

(घ) मानो उनकी स्मृतियों पर अपनी छाप डाल दी—अपने आप में कटु स्मृतियाँ मानो सुंदरता के एक ढाँचे में ढल कर निकलने लगीं।

लिखित प्रश्न

(क) व्यास नदी पर बने पुल से गाड़ियाँ चार मील रफ्तार से गुजरती है।

(ख) शिमला से मनाली तक पक्की सड़क बन जाने से यह फायदा हुआ है कि हम फैशनेबल सैलानी 'वीक-एड' बिताने के लिए मोटर में बैठकर सीधे मनाली आ सकते हैं।

(ग) दशहरे के दिन विजयी राम उत्सव कुल्लू में मनाया जाता है।

(घ) कुल्लू को प्राचीन हिंदू सभ्यता का गहवारा इसलिये कहा जाता है। यहाँ प्रत्येक कस्बे और ग्राम के अपने-अपने देवता हैं, जो अपने-अपने मंदिरों में बैठे हुए लोगों की पूजा पाते हैं और साल में एक बार अपने-अपने रथों में बैठकर कुल्लू के रघुनाथ मंदिर में प्रतिष्ठित राम की उपासना करते हैं।

(ङ) कुल्लू को देवताओं का अंचल इसलिये कहा गया है क्योंकि 'यहाँ से देवताओं का अंचल प्रारंभ होता है, इसका बड़ा बढ़िया प्रमाण यह मिला

कि मानवों की सृष्टि मोटर को देवताओं की सृष्टि मानव के पीछे-पीछे चलना पड़ा। मंडी से कुल्लू प्रदेश में जाते हुए व्यास नदी को रस्सी से झूलना पुल से पार करना पड़ता है।

(च) मनाली या मुनाली से यह नाम 'मुनाल' नामक पक्षी से पाया, जो यहाँ बहुतायात में होता है। फेजेट जाति का हिमालय का यह पक्षी अत्यंत सुंदर होता है। इसके संबंध में यहाँ के लोगों में कई किवदंतियाँ भी सुनने में आती हैं, लेकिन मैदानी भाग में रहने वाले लोग मनाली को वहाँ के सेबों के कारण ही जानते हैं।

(छ) वशिष्ठ गाँव की यह विशेषता है कि यह गरम पानी के कुंड हैं। कहते हैं कि वशिष्ठ ऋषि यहीं तपस्या करते-करते पाषाण हो गए थे, उनकी पाषाण मूर्ति वहाँ पूजी भी जाती है। यहाँ पानी में गंधक की मात्रा का. फी है और यह स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा है।

(ज) दाना के दूसरी ओर पहाड़ की ढलान पर चीड़ के जंगल में हिडिंबा देवी का मंदिर है। यह चीड़ वृक्ष के तने के आस-पास बना हुआ है। यह लकड़ी का चार-मंजिला मंदिर दर्शनीय है। इसके द्‌वारों पर नक्काशी का जो काम है, वह कई सौ बरस पुराना है। एक पट्‌टे पर लेख भी खुदा हुआ है। मंदिर से मनाली की ओर जाते हुए मार्ग दो चट्‌टानों के बीच होकर गुजरता है, जो अपने आकार के कारण 'देवी का चूल्हा' के नाम से प्रसिद्‌ध है। कहते हैं कि हिडिंबा देवी मनुष्य को भून-भूनकर अपना भोजन तैयार करती थी।

भाषा और व्याकरण

1. खग — पशु, चीर — फटन, गुरु — शिक्षक, अनंत — असंख्य

2. (क) किनारे-किनारे — स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
   (ख) दस बजे — कालवाचक क्रिया-विशेषण
   (ग) धीरे-धीरे — परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण
   (घ) कहीं-कहीं — रीतिवाचक क्रिया-विशेषण
   (ङ) मात्रा काफी — परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण
   (च) आस-पास — स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
   (छ) दिनभर — कालवाचक क्रिया-विशेषण
   (ज) यहीं तपस्या — स्थानवाचक क्रिया-विशेषण।

3. (क) सरल वाक्य
   (ख) मिश्रित वाक्य

4. (क) बड़ा प्रविशेषण
   (ख) 'बहुत' प्रविशेषण

(ग) संयुक्त वाक्य

(घ) संयुक्त वाक्य

(ङ) सरल वाक्य

(च) मिश्रित वाक्य।

(ग) 'बड़ी' प्रविशेषण

(घ) 'अत्यधिक' प्रविशेषण

पाठ–16 : पंच परमेश्वर

मौखिक प्रश्न

(क) खाला ने जुम्मन से अलग गुजारे की माँग इसलिये की, क्योंकि प्राय: नित्य ही खाला को कड़वी बातें सुननी पड़ती और अपमान सहना पड़ता था।

(ख) अलगू चौधरी ने खाला के पक्ष में निर्णय दिया।

(ग) अलगू चौधरी ने फैसला करने के लिए पंचायत बुलायी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) समान विचार, 2. (ग) अलगू चौधरी को, 3. (क) जिम्मेदारी का भाव, 4. (ख) जुम्मन ने निष्पक्ष होकर फैसला लिया। 5. (ग) खाला ने, 6. (क) अलगू चौधरी ने

लिखित प्रश्न

1. (क) खाला पंचायत इसलिये बुलाना चाहती थी क्योंकि जुम्मन शेख ने अपनी खाला की मिलकियत अपने नाम लिखवा ली थी। जब तक दानपत्र की रजिस्ट्री न हुई थी, तब तक खाला का खूब आदर-सत्कार किया गया। कुछ दिन उसने सुना और सहा, पर जब न सहा गया तो खाला ने पंचायत बुलाने का निश्चय किया।

(ख) अलगू चौधरी ने अपना बैल समझू साहू को बेचा।

(ग) समझू साहू इक्का गाड़ी हाँकते थे।

(घ) मित्रता का मूल मंत्र यह है कि सुख-दुख गरीबी-अमीरी में सभी तरह से मित्र का साथ देना चाहिए।

(ङ) ये जानते हुए कि जुम्मन शेख और अलगू चौधरी अभिन्न मित्र है। खाला ने अलगू को ही सरपंच इसलिये बनाया, क्योंकि उन्हें उन पर पूर्ण विश्वास था।

(च) अलगू और जुम्मन दोस्ती की मिसाल थे। अचानक उनकी मित्रता दुश्मनी में इसलिए बदल गयी, क्योंकि दोनों में अलग-अलग स्थिति देखने को

मिली और एक-एक बार दोनों को पंच बनने का मौका मिला और आपस में एक-दूसरे का सामना हुआ।

(छ) समझू साहू का नया बैल इस प्रकार मरा, वह उस बैल से तीन-तीन, चार-चार खेप करने लगे न चारे की फ्रिक थी, न पानी की, बस खेपों का काम था। मंडी ले गए, वहाँ कुछ सूखा भूसा सामने डाल दिया। बेचारा जानवर अभी दम भी न ले पाया था कि फिर जोत दिया। महीने-भर में वह पिस-सा गया। एक दिन चौथी खेप में साहू ने दूना बोझ लादा। दिन भर का थका जानवर, पैर न उठते थे बैल धरती पर ऐसा गिरा फिर ना उठा।

(ज) जुम्मन शेख का चरित्र अच्छा नहीं है, उसने अपनी खाला की मिलकियत अपने नाम लिखवा ली और वह अपने संस्कारों को भी भूल गया। अपनी खाला को सताने लगा।

(झ) (i) जुम्मन को पूरा विश्वास था कि अब बाजी मेरी है। पर जब अलगू चौधरी ने जुम्मन से जिरह शुरू की तो एक-एक प्रश्न जुम्मन के हृदय पर हथौड़े की चोट की तरह लगने लगा। जुम्मन चकित थे कि अलगू को क्या हो गया, अभी यह मेरे साथ बैठा हुआ था, इतनी देर में ऐसी क्या काया पलट हो गई कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है। क्या इतने दिनों की दोस्ती कुछ भी काम न आएगी।

(ii) सरपंच का मुख्य आसन ग्रहण करते हुए शेख के मन में अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उन्होंने सोचा-'मैं इस वक्त न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से इस समय जो कुछ भी निकलेगा वह देववाणी के सदृश है और देववाणी में मेरे मनोविकारों का कदापि समावेश न होना चाहिए।

(iii) सरपंच का फैसला सुनकर अलगू चौधरी फूले न समाए। उठ खड़े हुए और जोर से बोले—"पंच परमेश्वर की जय!" इसके साथ ही चारों ओर ध्वनि हुई—"पंच परमेश्वर की जय!" थोड़ी देर के बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले लिपटकर बोले—"जबसे तुमने मेरी पंचायत की तबसे मैं तुम्हारा शत्रु बन गया था, पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता।

भाषा और व्याकरण

(क) मेरी मौसी का लड़का मेरे भाई के समान है।

(ख) राजू ने अपनी भाभी के सामने मुझे मारा।

(ग) हमें ईश्वर के प्रति आस्था रखनी चाहिये।

(घ) हमें बड़ों के सहारे निर्भर रहना चाहिये।

(ङ) परिश्रम के द्वारा ही हम सफल हो सकते हैं।

(च) मम्मी पापा के अतिरिक्त हमें दादा–दादी से भी सलाह लेनी चाहिए।

2. (क) निष्कपट (ख) निश्चल (ग) निष्फल (घ) नीरस (ङ) निष्काम (च) निष्तेज (छ) मनोविकार (ज) निश्चिंत

3. (क) चित्रकार (ख) दर्शनीय (ग) निर्दय (घ) नीरस (ङ) हितैषी (च) विद्यार्थी।

■ ■ ■

कक्षा-7

पाठ–1 : चलना हमारा काम है

मौखिक प्रश्न

(क) इस कविता के माध्यम से निंरतर चलते रहना ही जीवन का लक्ष्य बताया है।

(ख) कवि अपना परिचय राही के रूप में देते हैं।

(ग) गति–मति न हो अवरूद्ध आठों प्रहर कवि को यह ध्यान रहता है।

(घ) लोगो को सुख–दुख सहना पड़ता है।

(ङ) कवि पूर्णता की खोज में भटकते रहते हैं।

लिखित प्रश्न

(क) साथी के मिल जाने से कवि ने कुछ कह लिया, कुछ सुन लिया।

(ख) कवि ने विश्व–प्रवाह के लिए विशद विशेषण प्रयुक्त किया है।

(ग) इसका अर्थ यह है कि इस बड़े से विश्व में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे संसार के प्रवाह में बहना न पड़ा हो।

(घ) जीवन मे उन्हें लक्ष्य की प्राप्ति होती है जो सही समय पर सही काम करते हैं।

(ङ) 'राही' कहकर परिचय देने का अभिप्राय है मनुष्य को निरंतर चलते रहने को ही सर्वोपरि धर्म बताया गया है। आशा–निराशा से घिरते हुए, हँसते–रोते हुए मनुष्य को हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए।

(च) कवि ने जीवन की अपूर्णता की ओर संकेत किया है कि कभी प्राणी को कुछ मिल जाता है, कुछ खोजाता है, आशा–निराशा से घिरा रहता है, कभी

खुश होता, कभी दु:खी होता है सभी को सब कुछ प्राप्त नहीं होता है।

(छ) कवि विधाता को अपने विरूद्ध इसलिये नहीं मानता क्योंकि संसार में सभी को सुख-दुख सहना पड़ता है। सभी को इन्हीं धारा में बहना पड़ता है।

2. (क) जब तक मैं अपने लक्ष्य को नहीं पा सकता, तब तक मैं ठहर नहीं सकता। बस चलते रहना ही हमारा काम है।

(ख) कुछ कह लिया तुमसे, और कुछ सुन लिया तुमसे मन के अंदर जो भाव उथल-पुथल हो रहे थे वे शांत हो गये और अपना भार भी हल्का हो गया। अच्छा हुआ दोस्त तुम मिल गये कुछ सफर कट गया।

भाषा और व्याकरण

1. (क) कोई (ख) कुछ
(ग) कोई (घ) किसी
(ङ) कोई (च) किसी
(छ) कुछ

2. (क) नहीं (ख) न
(ग) मत (घ) नहीं
(ङ) मत (च) मत

3. (क) फिर क्यों दर-दर खड़ा है जब रास्ता इतना पड़ा है।
(ख) कुछ कह लिया, कुछ सुन लिया कुछ बोझ अपना बँट गया।

4. (क) जल — पानी, नीर (ख) संसार — विश्व, जगत
(ग) पत्थर — कंकड, रोड़ा (घ) शक्ति — बल, ताकत
(ङ) पवन — हवा, वायु

5. (क) कत्री (ख) लेखिका
(ग) गुणवती (घ) तपस्वनी
(ङ) आज्ञाकारिणी (च) पुजारिन
(छ) स्वामिनी (ज) कवयित्री

पाठ-2 : हँसते-हँसते जीना

मौखिक प्रश्न

(क) स्टालिन तानाशाह और गाँधी जी अंहिसावादी थे।

(ख) स्टालिन तानाशाह था। लाखों-करोड़ों से डंडे के बल पर अपनी बात मनवाता था लेकिन गांधी जी कौन-से कम थे? उनकी बात करोड़ों मानते थे और कितने ऐसे माई के लाल हैं जो उसे टाल जाएँ?

(ग) झगड़ा इसलिए होता, क्योंकि हम में अक्सर हास्यप्रियता और हास्य की क्षमता की कमी होती है और जहाँ खुलकर हँसने की जरूरत होती है, हम भृकुटि तानकर और डंडा लेकर पिल पड़ते हैं; छोटी-छोटी बातों को प्रतिष्ठा और सम्मान का प्रश्न बना लेते हैं।

(घ) हँसने वाले की सदा जीत होती है।

(ङ) प्रेमचंद्र को कलम का सिपाही कहा गया है।

(च) जीवन को हँसी-खुशी से जीने का ढंग, कठिन परिस्थितियाँ, क्रोध में भरे और दुर्जन लोगों से भी हँसते-मुसकराते निपटने की कला जिंदगी है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) व्यापारी से, 2. (क) लायड जॉर्ज से, 3. (ख) सुकरात का, 4. (घ) अब्राहम लिंकन का, 5. (क) नेहरू जी का

लिखित प्रश्न

(क) जो हँस सकता है, वह मित्र बनाने योग्य है उसका विश्वास किया जा सकता है।

(ख) समाज में होने वाले झगड़ों का कारण मूर्खता है।

(ग) जो हँस सकता है वह पराजय में भी हास्य की सृष्टि कर लेता है और इस तरह पराजय भी जीत में बदल जाती है।

(घ) जो हँस नहीं सकता, वह दुखी तो है ही, खतरनाक भी है, क्योंकि शायद वह दूसरों को भी दुखी देखना चाहता है इसलिए वह व्यक्ति मित्र बनाने योग्य नहीं है।

(ङ) हँसना एक नियामत है और जो इस नियामत से वंचित है वह दया का पात्र है।

(च) अनजाने में टकरा जाने वाले व्यक्ति ने कहा ''महाशय, यदि इसमें मेरी गलती थी तो कृपया क्षमा करें और आपकी गलती थी तो चिंता न करें'', इसी बात पर दोनों में झगड़ा नहीं हुआ।

(छ) चुनाव में हारे व्यक्ति को पता चला उसे कुल तीन वोट मिले थे। अगले दिन जब बाजार खुला तो व्यापारी की दुकान पर एक बड़ा-सा नोटिस

टँगा था भाइयों, क्या आप कृपा करके मुझे उन तीन बेवकूफों के नाम बताएँगे, जिन्होंने मुझे वोट दिए? किस्सागो कहता है कि शहर हँस तो अब भी रहा था लेकिन वह उस हारे हुए व्यापार पर नहीं, उसके साथ हँस रहा था।

(ज) लेखक ने स्टालिन और गाँधी में ये समानता व अंतर बताए हैं— स्टालिन तानाशाह हैं, लाखों-करोड़ों से डंडे के बल पर अपनी बात मनवा सकते हैं। लेकिन गाँधी जी कौन-से कम है उनकी बात करोड़ों मानते हैं और कितने ऐसे माई के लाल हैं जो उसे टाला जाएँ? फिर क्या अंतर है गाँधी और स्टालिन मे यही कि गांधी हँस सकते थे, स्वयं की गलतियों और कमियों पर ठहाका लगाकर मुक्त रूप से हँस सकते थे; स्टालिन से ऐसी आशा नहीं की जा सकती थी।

(झ) हमें अच्छी हँसी हँसनी चाहिए।

(ञ) प्रेमचंद्र की उन्मुक्त और निश्छल हँसी थी और लेनिन की संक्रामक हँसी थी।

2. (क) उधर उनके बड़े भाई और समझदार समझे जाने वाले बड़े लोग हैं; जरा-जरा सी बातों को अपने अंदर रखते हैं और मुँह को लटकाए रहते हैं और छोटी-सी बातों को साधारण से लेकर बड़े झगड़ों को उत्पन्न करते हैं।

(ख) जो मनुष्य हँसता रहता है वह हार में भी अपनी जीत की खुशी मना लेता है और इस तरह से हार भी जीत में बदल जाती है।

(ग) जिंदगी भी एक युद्ध है लेकिन उसे हम युद्ध की भूमि बनाएँ गाली-लौज देना सही बात नही हैं अगर किसी व्यक्ति को मारना है तो प्यार की बात से मारो लड़ाई से नहीं। लड़ाई से कभी कुछ नहीं मिलता।

भाषा और व्याकरण

1. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (iii) (घ) (i) (ङ) (iv)

2. इसीलिए, जिंदगी जिंदादिली का नाम है। हँसिए और खूब हँसिए। शर्तें सिर्फ़ तीन हैं—हँसी मुखौटा न हो, दुश्मनी के मुँह पर पड़ा झूठा नकाब न हो, हँसी ऐसी न हो कि दूसरा सुनकर रोए, साथ न हँस सके; हँसी ज़िंदगी से पलायन, असलियतों से दूर भागने का नाम न हो, जिंद़गी संग्राम तो है ही लेकिन उसे हम धर्मयुद्‌ध बनाएँ, गाली-गलौज वाला सस्ता फ़साद नहीं। और इस धर्मयुद्‌ध को हम हँसते-हँसते लड़ें, मुँह लटकाकर नहीं, मनहूसियत से नहीं।

पाठ-3 : नीलू

मौखिक प्रश्न

(क) नीलू की कथा उसकी माँ की कथा के बिना अपूर्ण है।

(ख) लूसी की मैत्री एक भूटिया कुत्ते से हुई।

(ग) जन्म के बाद लूसी के दोनों बच्चों में सें एक तो शीत के कारण मर गया और दूसरा उस ठिठुराने वाले परिवेश से जूझने लगा।

(घ) किसी विशेष परिचित को आया हुआ देखकर, वह धीरे-धीरे भीतर आकर कमरे के दरवाजे पर खड़ा हो जाता था। उसका इस प्रकार आना ही उनके लिए किसी मित्र की उपस्थिति की सूचना थी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) उसके बच्चे को, 2. (ग) माँ के पेट की उष्णता को, 3. (क) ऊन की गेंद जैसा।

लिखित प्रश्न

(क) शीतकाल में घ्राणशक्ति के कुछ कंठित हो जाने के कारण कुत्ते लकड़ बग्घे के आने की गंध पाने में असमर्थ रहते हैं और उसके अनायास आहार बन जाते हैं। लूसी के साथ भी कुछ ऐसी ही हुआ था।

(ख) हिरणी के समान वेगवती, साँचे में ढली हुई देह, जिस पर काला आभास देने वाले भूरे-पीले रोम, बुद्धिमानी का पता देने वाली काली पर छोटी आँखें, सजग खड़े कान और सघन, रोएँदार तथा पिछले पैरों के टखनों को छूने वाली पूँछ, सब कुछ उसे राजसी विशेषता देते थे।

(ग) आकृति की विशेषता के साथ उसके बल और स्वभाव में भी विशेषता थी। ऊँची दीवार भी, वह छलाँग में पार कर लेता था। रात्रि में उसका एक बार भौकंना भी वातावरण की स्तब्धता को कंपित कर देता था।

(घ) सबके सो जाने पर, वह गर्मियों में बाहर लॉन में और सर्दियों में बरामदे में तख्त पर बैठकर पहरेदारी का कार्य करता।

(ङ) एक रात मेरे खरगोश बिल खोदते-2 पड़ोस के दूसरे कंपाउंड मे जा निकले। उनमें से कई जो मार दिए गए किन्तु उनके सौभाग्य से नीलू ने संभवत: पत्तियों की सरसराहट से सजग होकर चारदीवारी के पार देखा होगा और उसने खरगोशों के संकट को पहचान लिया। उसके कूदकर दूसरी ओर पहुँचते ही बिल्ला तो भाग गया, परंतु खरगोशों को बाहर निकलने से रोकने के लिए वह रातभर ओस से भीगता हुआ सुरंग के द्वार पर खड़ा रहा।

(च) इसके उत्तर के लिए (लिखित प्रश्न) ख देखें।

(छ) बड़े होने पर रोमों के भूरे, पीले और काले रंगों के मिलन से जो रंग बना था, वह एक विशेष प्रकार का धूप–छाँही हो गया था। धूप पड़ने पर एक रंग की झलक मिलती थी, छाँह में दूसरे रंग की और दीये के उजाले में तीसरे रंग की। कानों की चौड़ाई और नुकीलेपन में भी कुछ नवीनता थी। सिर ऊपर की ओर अन्य कुत्तों के सिर से बड़ा और चौड़ा था और लंबोतरा, पर सुडौल। पूँछ अल्सेशियन कुत्ते के पैरों के समान लंबे, पर पंजे भूटिये के समान मजबूत, चौड़े और मुड़े हुए नाखूनों से युक्त थे। उन गोल और काली कोर वाली आँखों का रंग शहद के रंग के समान था, जो धूप में तरल सुनहरा हो जाता था और छाया में जमे हुए मधु–सा पारदर्शी लगता था।

(ज) 'नीलू का ध्वनि–ज्ञान विस्तृत था' कुत्ते भाषा नहीं जानते, केवल ध्वनि पहचानते हैं। नीलू का ध्वनि ज्ञान इतना विस्तृत और गहरा था कि उससे कुछ कहना भाषा जानने वाले मनुष्य से बात करने के समान हो जाता था। बाहर या रास्ते में घूमते हुए यदि उससे कह देता, ''गुरू जी तुम्हे ढूँढ रही थी; नीलू'' तो वह विदुयत गति से चारदीवारी कूदकर मेरे कमरे के सामने आकर खड़ा हो जाता। कभी–कभी किसी कार्य में व्यस्त होने के कारण उसकी उपस्थिति जान ही नहीं पाती और उसे बहुत समय तक बिना हिले–डुले खड़ा रहना पड़ता था।

(झ) पशु–पक्षियों के साथ हमारा व्यवहार अच्छा होना चाहिए पशु–पक्षियों की देखभाल सही ढंग से करनी चाहिए। उन्हें सही समय भोजन देना चाहिए और उन्हें समझना चाहिए और नियमित रूप से उनकी सुरक्षा भी करनी चाहिए।

(ञ) लेखिका के मोटर दुर्घटना में घायल होने पर मुझे मार्ग से ही अस्पताल जाना पड़ा तब संध्या तक मेरी प्रतीक्षा करके और कपड़े चादर–कंबल आदि सामान अस्पताल ले जाने वालों की हड़बडी देखकर उसे न जाने कैसे सब पता चला। सब उसको उदास देखकर हैरान थे। जब तीन दिन तक उसने कुछ खाया न पिया, तब डॉक्टर से अनुमति लेकर उसे अस्पताल लाया गया। मुझे अच्छी तरह चारों ओर घूमकर देखने के बाद मेरे सामने जमीन पर ही बैठ गया।

भाषा और व्याकरण

1. (क) वे (ख) उन्होने, वह (ग) मुझे (घ) वह (ङ) उससे

2. नीचे दिए गए विशेषण शब्दों के लिए उपयुक्त-विशेष्य लिखिए—

चतुर नीलू, वेगवती लूसी, बुद्धिमान नीलू, बर्फीला मार्ग, चंचल नीलू, जंगली बिल्ले, काली छोटी आँखे, कड़वी दवा

3. निम्नलिखित शब्दो में से उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए—

	उपसर्ग + मूल शब्द		**मूल शब्द + प्रत्यय**
असमर्थ	अ + समर्थ	नुकीलापन	— नुकीला + पन
सकुशल	स + कुशल	धार्मिक	— धर्म + इक
परिवेश	परि + वेश	घबराहट	— घबरा + हट
आकृति	आ + कृति	उदारता	— उदार + ता

पाठ–4 : लालच बुरी बला है

मौखिक प्रश्न

1. (क) बाबा अब्दुल्ला खलीफा को अपनी कहानी सुना रहे थे।
 (ख) बाबा अब्दुल्ला के पास अस्सी ऊँट थे।
 (ग) बसरा से लौटते समय उन्हें एक फकीर मिला।
 (घ) उन्होंने देखा कि भवन में असीम द्रव्य भरा हुआ था।
 (ङ) इसके परिणामस्वरूप बाबा अब्दुल्ला अंधे हो गए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) रत्नों से लदे चालीस ऊँट पाने पर
2. (ख) केवल रत्नों को
3. (घ) रत्नों से लदे अस्सी ऊँट

लिखित प्रश्न

(क) उन्होंने भोग-विलास में सारा धन शीघ्र ही उड़ा दिया।

(ख) फकीर ने कहा, ''तुम रात-दिन बेकार मेहनत करते हो। यहाँ से कुछ दूरी पर एक ऐसी जगह है, जहाँ अपार द्रव्य भरा पड़ा है। तुम इन अस्सी ऊँटों को बहुमूल्य रत्नों और अशर्फियों से लाद सकते हो और वह धन तुम्हारे जीवनभर के लिए काफी होगा।''

(ग) अशर्फियों के एक ढेर को देखकर वह उस पर ऐसे झपटा जैसे किसी शिकार पर शेर झपटता है। उसने ऊँटों की खुर्जियों में अशर्फियाँ भरनी शुरु की।

1.

(घ) वह सारे ऊँट और उन पर लदी हुई संपत्ति लेकर बसरा की ओर चला गया।

(ङ) अब्दुल्ला लालची था।

(च) फकीर ने चकमक पत्थर से सूखी लकड़ियों में आग लगाई। आग जलने पर उसने अपनी झोली में से एक सुगंधित द्रव्य निकालकर आग में डाला। उसमे से धुएँ का एक जबरदस्त बादल उठा और वह एक ओर चलने लगा। कुछ दूर जाकर वह बादल फट गया और उसे एक बड़ा टीला दिखाई दिया। जहाँ वे थे, वहाँ से टीले तक का रास्ता बन गया। वे दोनों उसके पास पहुँचे, तो टीले में एक द्वार दिखाई दिया। द्वार से आगे बढ़ने पर एक बड़ी गुफा मिली, जिसमें जिन्नों का बनाया हुआ एक भव्य भवन दिखाई दिया।

(छ) फकीर वहाँ मरहम की डिबिया लेने गया था।

(ज) उसने फकीर के हिस्से से दस ऊँठ और लेने का विचार किया।

(झ) फकीर ने कहा कि यदि उसने मरहम अपनी दांयी आँख में लगाया तो वह अन्धा हो जाएगा।

(ञ) क्योंकि मनुष्य को जितना मिलता है, उससे उसका मन नहीं भरता और उसकी अधिक पाने की लालसा बनी रहती है।

भाषा और व्याकरण

1. (क) गाय को चारा खाते-खाते बहुत देर हो गयी।
   (ख) रिश्तेदारी में लेना-देना लगा ही रहता है।
   (ग) रमेश ने बिना हीला-हुज्जत किए सारे पैसे लौटा दिए।
   (घ) प्रत्येक व्यक्ति जल्दी कामयाब होना चाहता है।
   (ङ) अजय ने खुशी-खुशी अपनी सारी संम्पत्ति दान कर दी।
2. (क) व्यक्तिवाचक (ख) व्यक्तिवाचक (ग) व्यक्तिवाचक
   (घ) जातिवाचक (ङ) व्यक्तिवाचक (च) व्यक्तिवाचक
   (छ) जातिवाचक (ज) भाववाचक
3. (क) (i) चालीस ऊँटो का। (ii) धन मेरे लिए पर्याप्त होगा।
   (ख) (i) रास्ते में चलते हुए मैं। (ii) थककर पेड़ की छाँव में बैठ गया।
   (ग) (i) तुम। (ii) दस ऊँट और ले लो।
4. (क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) मिश्र वाक्य (घ) मिश्र वाक्य।

पाठ–5 : इतने ऊँचे उठो

मौखिक प्रश्न

(क) हमें दुनिया को एक दृष्टि से देखना चाहिए।

(ख) हमारे भीतर धरती को स्वर्ग बनाने की चाह होनी चाहिए।

(ग) वर्तमान का रूप सँवारने के लिए हमें सभी से भेदभावों, ईर्ष्या और द्वेष को खत्म करना होगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) भेदभाव की अग्नि की, 2. (ख) मलय पर्वत की हवा, 3. (ग) नई पीढी के, 4. (ख) बीमारी।

लिखित प्रश्न

1. (क) जाति, धर्म और रंग का भेदभाव मिटाने के लिए समता का भाव रखना आवश्यक है।

(ख) गति जीवन का चिरंतन सत्य है।

(ग) हमारे साथ प्रतिपल सूरज, चाँद, चाँदनी और तारे रहते हैं।

(घ) नए हाथों से वर्तमान का रूप सँवारने के लिए हमें नये स्वरों का संयोजन, भाषा को नये अक्षरों का ज्ञान, दो समाज की नयी मूर्ति रचना में मौलिक बनकर स्वयं अच्छे व्यक्ति बन सकते हैं।

(ङ) गगन के समान ऊँचा उठने के लिए हमें सभी को एक दृष्टि से देखना चाहिए। कभी भी किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए।

(च) 'निरंतर गतिशील बने रहो' कवि ने ऐसा इसलिये कहा अगर तुम समय के साथ रहते हुए अपने कार्य को समझोंगे तो एक दिन निश्चित सफल होगे।

(छ) हमें धरती को स्वर्ग के समान सुंदर बनाने के लिए आपसी वैमनस्य को मिटाकर नवीन समाज की स्थापना करनी होगी।

2. युग की .... सृजन है।

प्रसंग— इसमें कवि ने बच्चों को भेदभावों, ईर्ष्या और द्वेष को त्यागकर समभाव से देखने का प्रयत्न किया है।

(क) जिस प्रकार संगीतकार अपने नए राग में स्वरों को पिरोता है, उसी प्रकार हमें भी अपने समाज को नया रूप देने के लिए सृजनात्मक बनना होगा और सृजन को हमें अपने अंदर मौलिक रूप से ग्रहण करना होगा।

(ख) हमें नफरत की आग को समाप्त कर समाज में मलय पर्वत से आने वाली हवा की तरह शीतलता और शांति लाने का प्रयत्न करना चाहिए।

(ग) जिस प्रकार हम किसी आर्कषण की ओर खिंचे चले जाते हैं उसी प्रकार अच्छी सोच के साथ हमें खुद को भी आकर्षक बनाना है।

3. (1) कविता मे ईर्ष्या, भेदभावों और द्‌वेष का त्याग करना बताया गया है।
   (2) हमें नये समाज की रचना करनी चाहिए।
   (3) हमें धरती को स्वर्ग के समान सुंदर समझना चाहिए।
   (4) हमें रंग के भेदभावों को खत्म करना चाहिए।
   (5) हमें बीते हुए कल को भुलाकर नए समाज की रचना करनी चाहिए।

भाषा और व्याकरण

1. (क) ममता (ख) समता (ग) सलोना (घ) अतीत (ङ) गगन।
2. (क) दिन (ख) व्यय (ग) विष (घ) नगद (ङ) विराग (च) शांत (छ) अंत (ज) अनुचित।

पाठ-6 : कश्मीरी सेब

मौखिक प्रश्न

(क) दुकान पर बहुत अच्छे, रंगदार, गुलाबी सेब सजे हुए देखकर लेखक का जी ललचा गया।

(ख) आजकल शिक्षित समाज में विटामिन और प्रोटीन के शब्दों पर विचार करने की प्रवृत्ति हो गई है।

(ग) लेखक के अनुसार सेब की टक्कर का दूसरा फल संसार में नहीं है।

(घ) चुने हुए कश्मीरी सेब के नाम पर दुकानदार ने सड़े हुए कश्मीरी सेब दिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) निबौरी, 2. (घ) ये सभी, 3. (क) आधा किलो।

लिखित प्रश्न

(क) हमें डॉक्टर के पास जाने से बचने के लिए एक सेब रोजाना खाना चाहिए।

(ख) दुकानदार ने लेखक से कहा—''बाबूजी! बड़े मजेदार सेब आए हैं, खास कश्मीर के। आप ले जाएँ, खाकर तबीयत खुश हो जाएगी''।

(ग) लेखक ने सेब खाने के लिए प्रात: काल के समय इसलिये निकाले क्योंकि रात को सेब या कोई दूसरा फल खाने का कायदा नहीं होता।

(घ) लेखकों को पाठकों से आशा है बाजार से कुछ भी खरीदते समय हमें सर्तक रहना बेहद जरूरी है। हमारी असावधानी सामने वाले को धोखा देने को प्रेरित करती है।

(ङ) ''आजकल शिक्षित समाज में विटामिन और प्रोटीन के शब्दो में विचार करने की प्रवृत्ति हो गई है।'' टमाटर की पहले कोई मुफ्त में भी न पूछता था। अब टमाटर भोजन का आवश्यक अंग बन गया है। गाजर भी पहले गरीबो के पेट भरने की चीज थी। अमीर लोग तो उसका हल्वा खाते थे; मगर अब पता चलता है कि गाजर में भी बहुत से विटामिन होते हैं; इसलिए गाजर को भी मेजों पर स्थान मिलने लगा है और सेब के विषय में तो यह कह जाने लगा है एक सेब रोज खाइए आपको डॉ क्टर की जरूरत न होगी।

(च) प्रात:काल लेखक ने जब खाने के लिए सेब निकाले तो उसने देखा तो वह सड़ा हुआ था। एक रुपये के आकार का छिलका गल गया था। समझा, रात को दुकानदार ने देखा न होगा। दूसरा निकाला। मगर वह भी आधा सड़ा हुआ अब संदेह हुआ, दुकानदार ने मुझे धोखा दिया होगा। तीसरा सेब निकाला। वह सड़ा तो न था: मगर एक तरफ दबकर बिल्कुल पिचक गया था। चौथा देखा तो वह बेदाग था; मगर उसमें एक काला सुराख था, जैसा अक्सर बोरों में होता है।

(छ) 'समाज का चारित्रिक पतन' के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि दुकानदार ने मेरे साथ जान-बूझकर मेरे साथ धोखबाजी का व्यवहार किया। एक सेब सड़ा हुआ होता तो मैं उसको क्षमा के योग्य समझता। सोचता उसकी निगाह न पड़ी होगी मगर चारों के चारों खराब निकले यह तो साफ धोखा है मगर इस धोखे मे मेरा भी सहयोग था मेरा उसके हाथ में रूमाल रख देना मानो उसे धोखा देने की प्रेरणा थी।

(ज) दुकानदार ने लेखक के बारे में भाँप लिया की यह महाशय अपनी आँखों से काम लेने वाले जीव नहीं है न इतने चौकस हैं घर से लौटाने आए।

(झ) मुहर्रम के मेले में एक खोमचे वाले से एक पैसे की रेवड़ियाँ ली थी और पैसे की जगह अठन्नी दे आया था। घर आकर अपनी भूल मालूम

हुई, तो खोमचे वाले के पास दौड़ा गया। आशा नहीं थी की वह अठन्नी लौटाएगा, लेकिन उसने प्रसन्नचित भाव से अठन्नी लौटा दी और मुझसे क्षमा मागी।

भाषा और व्याकरण

1. नीचे लिखे शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

(क) आदमी — मनुष्य, नर

(ख) प्रसन्न — खुश, हर्षित

(ग) प्रात:काल — प्रभात, सुबह

(घ) निगाह — नजर, दृष्टि

2. (क) अशिक्षित (ख) असुरक्षित (ग) दुखी

(घ) असहयोग (ङ) साय:काल (च) सम्पन्नता

(छ) ईमानदारी (ज) अनावश्यक

3. 1. विटामिन और प्रोटीन 2. म्यूनिसपिलिटि 3. महाशय

4. पिचक 5. जरूरत 6. डॉक्टर।

पाठ–7 : मेरा बचपन

मौखिक प्रश्न

(क) बचपन में रवींद्रनाथ ठाकुर का समय नौकर के साथ अधिक बीता।

(ख) ब्रजेश्वर एक नौकर था।

(ग) बालक रवींद्र पेट दर्द का बहाना तब बनाते थे जब उन्हें स्कूल नहीं जाना होता था।

(घ) बालक रवींद्र के बचपन के साथी सत्य और सोमेंद्र थे।

(ङ) रेलगाड़ी के बारे में सत्य कहता था कि रेलगाड़ी लोगों को इधर-उधर फेंकती हुई चलती है।

(च) बालक रवींद्र को विज्ञान और चित्रकारी विषय पसंद थे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) नौकर के पास, 2. (ग) शिक्षक, 3. (क) 1878 ई० में।

लिखित प्रश्न

(क) रवींद्रनाथ ठाकुर के परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक थी।

(ख) नौकर को दूध के कटोरे पंसद थे और बालक रवींद्र को दूध के कटोरे नापसंद थे।

(ग) नौकर लेखक को रामायण की कहानियाँ सुनाया करते थे।

(घ) भाईं ज्योतिरिद्र और भाभी कादंबरी कविता से जुड़ने में लेखक की सहायता करते हैं।

(ङ) लेखक को सत्येंद्र दादा के पास अहमदाबाद इसलिये रहना पड़ा क्योंकि उन्हें मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास कर कानून की पढाई करनी थी।

(च) रेलगाड़ी के बारे में सत्य बालक रवींद्रनाथ को समझता था कि रेलगाड़ी लोगों को इधर-उधर फेंकती हुई चलती है।

(छ) लेखक को स्कूल से नफ़रत इसलिये थी क्योंकि उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता था और वह स्कूल न जाने के लिए पेट में दर्द का बहाना बनाता था।

(ज) जब वह आठ साल का था, उन्हें पढ़ाने एक मास्टरजी आया करते थे। थोड़े समय में स्कूल जाना शुरू किया और पहले ही दिन उन्हें स्कूल से नफ़रत हो गई। लेकिल स्कूल में विज्ञान और चित्रकारी में उन्हें मज़ा आता था। उन्हीं दिनों वह कविता भी लिखने लगे। एक कॉपी में कविता लिखकर उसे जेब में लिए फिरते। सत्य और सोमेंद्र ने वे कविताएँ पढ़ी, तो उन्हें आश्चर्य हुआ। फिर मेरे शिक्षकों ने भी वे कविताएँ पढ़ी और तारीफ़ की। स्कूल से अरूचि होने के बावजूद उनकी पढ़ाई बराबर चलती रही। घर पर ही भाषा, गणित, विज्ञान, चिकला, संगीत, अंग्रेजी, बाँग्ला, व्याकरण, संस्कृत व खगोल पढ़ाते सोलह साल में उन्हें हो गया था। मेरे भाई-बहन मेरे भविष्य को लेकर चिंता करने लगे थे। भाई सत्येंद्रनाथ ने सुझाव दिया कि मुझे इंग्लैंड भेज दिया। वहाँ मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास कर कानून की पढ़ाई करनी थी।

(झ) जब मैं बारह वर्ष का था, मेरा उपनयन संस्कार किया गया। केसरिया कपड़े पहने, सिर मुड़ाए कमरे में गायत्री का जाप करने मे मुझे बहुत मजा आया। मैं सिर्फ इस बात से परेशान था कि मुंडे सिर के साथ कैसे स्कूल जा पाऊँगा।

(ञ) रवींद्रनाथ ठाकुर के अपने पिता से अच्छे संबध थे। घर से निकलकर यात्रा पर जाने से मुझे बहुत खुशी हो रही थी। मै पिताजी के साथ पहले शांतिनिकेतन गया। पिताजी के नजदीक आने का यह पहला मौका था। मैं उनकी घड़ी में चाबी देता। उनके खुदरे पैसों को सँभालता।

(ट) रबींद्रनाथ ठाकुर जहाज़ के डेक से अचानक इसलिए हट गए क्योंकि उन्हें अपने भारत से बहुत लगाव था और वह भारत को छोड़कर मुम्बई से इंग्लैण्ड के लिए रवाना हुए।

भाषा और व्याकरण

1. (क) iii. रवींद्रनाथ ठाकुर ने कविताएँ लिखीं।
   (ख) iv. उसे अध्यापक ने हिंदी पढ़ाई है।
   (ग) i. कहानियों की एक किताब ले आइए।
   (घ) i. लड़का मिठाई लेकर भागता हुआ घर आया।
2. (क) i. पेट का दर्द
   (ख) iii. रस से भरी
   (ग) i. चित्र की कला
   (घ) ii. घोड़े की सवारी

पाठ-8 : साइकिल की सवारी

मौखिक प्रश्न

(क) लेखक के दिल में ख्याल आया, चलो साइकिल चलाना सीख लें।

(ख) लेखक ने अपनी पत्नी को साइकिल सीखने का कारण बताया कि रो. ज-रोज़ ताँगे का खर्च मार डालता है।

(ग) साइकिल चलाते समय यदि रास्ते में कोई आ जाता तो लेखक के प्राण सूख जाते।

(घ) साइकिल चलाते समय तिवारी जी लेखक को इसलिए रोक रहे थे क्योंकि वे उन्हें बड़ी जरूरी बात बताना चाहते थे।

(ङ) लेखक तिवारी जी पर इलज़ाम लगाना चाहता था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) लेखक ने, 2. (ग) साइकिल दुर्घटना का, 3. (घ) तिवारी लक्ष्मीनारायण।

लिखित प्रश्न

(क) लेखक जब किसी को साइकिल की सवारी करते या हारमोनियम बजाते देखते हैं तो उन्हें अपने ऊपर दया आ जाती है।

(ख) लेखक के मन में साइकिल सीखने का ख्याल इसलिये आया क्योंकि उनके लड़के ने चुप चाप यह विद्या सीख ली और उनके सामने से

सवार होकर निकलने लगा। इस बात पर उन्हें अपने आप पर बहुत लज्जा और घृणा आयी और उन्होंने सोचा, क्या हम ही जमाने–भर में फिसड्डी रह गए हैं? सारी दुनिया साइकिल चलाती है। मूर्ख और गँवार चलाते हैं। हम तो परमात्मा की कृपा से पढ़े–लिखे हैं। क्या हम ही नहीं चला सकेंगे?

(ग) लेखक की पत्नी की उनके साइकिल सीखने की बात पर यह प्रतिक्रिया हुई ''मुझे तो आशा नहीं कि आपसे यह बैल मेढ़ चढ़ सकेंगे। खैर प्रयत्न करके देखिए।

(घ) ''अब रात को आराम की नीद कहाँ।'' तात्पर्य यह है की लेखक को साइकिल सीखने का जुनून सिर पर सवार था आँखें खुलते दिन निकलते ही वह जल्दी से जाकर पुराने कपड़े पहनते। जंबक का डिब्बा हाथ में लिये और नौकर को भेजकर मिस्त्री से साइकिल मँगवा लेते और साइकिल–चलाने निकल पढ़ते।

(ङ) गिर जाने के बाद लेखक के सामने गंभीर प्रश्न यह था कि हैंडल को घुमाया भी जा सकता है।

(च) अपने लड़के को साइकिल चलाता देखकर लेखक के मन में ख्याल आया सोचा क्या हम ही ज़माने भर में फिसड्डी रह गए हैं? सारी दुनिया साइकिल चलाती है। मूर्ख और गँवार चलाते हैं। हम तो परमात्मा की कृपा से पढ़े लिखे भी हैं। क्या हम ही नहीं चला सकेंगे? आखिर इसमें मुश्किल क्या है?

(छ) साइकिल चलाना सीखने के लिए लेखक ने पुराने कपड़े, जंबक का डिब्बा, एक साइकिल ली और खुला मैदान तलाश किया।

(ज) लेखक ने तिवारी जी को साइकिल सीखने के लिए एक साइकिल सिखाने वाले की समस्या बताई और तिवारी जी ने उन्हें बताया की एक साइकिल सिखाने वाला हमारी नजर में है।

(झ) साइकिल सीखने के शुरू के दो दिन इस प्रकार व्यर्थ हुए पहला दिन तो सोचने में चला गया और दूसरा दिन फटे–पुराने कपड़े तलाश करने में।

भाषा और व्याकरण

1. (क) चकमा देकर　　(ख) फूले न समाया

(ग) दिल पसीज गया　　(घ) गला भर आया

(ङ) प्राण सूख (च) आँखे मल-मलकर

(छ) खाली हाथ

2. (क) (i) ख्याल-विचार, (ii) उस्ताद-विशेषज्ञ, (iii) खजाना-कोष, (iv) तलाश-खोज, (v) हवाई जहाज़-वायुयान, (vi) अल्टीमेटम-चेतावनी,

(ख) ओछापन, इलजाम, मजाल, अल्टीमेटम, उस्ताद

3. (क) — iii

(ख) — i

(ग) — v

(घ) — vi

(ङ) — ii

(च) — iv

4. (क) उद्देश्य — अध्यापिका
विधेय — बच्चों को पढ़ा रही हैं।

(ख) उद्देश्य — महादेवी वर्मा
विधेय — ने कई कविताएँ लिखीं।

5. (क) प्रमाण — जाँच
प्रणाम — अभिवादन

(ख) शोक — मातम
शौक — रुचि

(ग) ओर — अंश
और — दूसरा

(घ) पका — बनाया
पक्का — स्पष्ट

(ङ) कोश — शब्द-संग्रह
कोष — खजाना

(च) तरंग — बड़ी लहर
तुरंग — घोड़ा

(छ) ताँगा — घोड़ा गाड़ी
तागा — धागा

(ज) कृपण — कंजूस
कृपाण — खंजर।

पाठ–9 : भक्ति के पद

मौखिक प्रश्न

(क) कृष्ण अपनी माँ यशोदा से कह रहे हैं कि मैया मैंने माखन नहीं खाया है।

(ख) कृष्ण माँ यशोदा को मक्खन न खाने के तर्क दे रहे हैं कि उनकी बाँहें छोटी हैं वे छीके तक नहीं पहुँच पाती हैं।

(ग) दूसरे पद में रघुवर शब्द का प्रयोग श्री राम के लिए किया गया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) वात्सल्य
2. (ख) उनकी बाँहें छोटी थीं।
3. (घ) उपर्युक्त सभी
4. (ख) घुँघरू
5. (ख) ब्रज भाषा

लिखित प्रश्न

1. (क) कृष्ण गाय चराकर शाम को लौटे।

(ख) माता कौशल्या बालक राम को गोद में इसलिए उठा लेती हैं क्योंकि वह बार–बार लड़खड़ाकर गिर जाते हैं।

(ग) तुलसीदासजी राम जी के कमल के समान सुंदर मुख को आनंदित हो रहे हैं।

(घ) माता कौशल्या राम पर प्यार न्योछावर करती हैं।

(ङ) रामचंद्र जी पायल पहन कर ठुमक ठुमक कर चलते हैं। भूमि पर लड़खड़ाते हुए पैरों से कभी चलते हैं, तो कभी गिर जाते हैं। यह देखकर उनकी माँ उन्हें गोदी में ले लेती है और अपने आँचल से राम के अंगों पर लगी धूल साफ करती है और उन्हें प्यार करती है। कमल के समान सुंदर मुख को देखकर तुलसी दास जी आनंदित हो रहे हैं। रघुवर के रूप की तरह ही रघुवर की मीठी बोली है।

(च) श्री कृष्ण बहुत सुन्दर हैं व सभी उनकी मीठी–मीठी बातों में आ जाते हैं।

(छ) स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. (क) बाँहें (ख) जियो (ग) रहस्य (घ) झाड़ना
2. (क) सुरीला (ख) जन्मांध (ग) अदृश्य (घ) प्रत्यक्ष (ङ) सरस (च) नीरस

रचनात्मक कार्य

स्वयं कीजिए।

पाठ–10 : भोलाराम का जीव

मौखिक प्रश्न

(क) चित्रगुप्त वह देवता है जो प्राणियों के पाप–पुण्य का लेखा रखते हैं। वह रजिस्टर में भोला राम के जीव का रिकोर्ड चैक कर रहे थे।

(ख) चित्रगुप्त ने नारदजी को पृथ्वी पर भोलाराम नाम के एक जीव का पता लगाने के लिए भेजा क्योंकि वह यमदूत को चकमा देकर भाग गया था।

(ग) नारदजी ने बड़े साहब को अपनी वीणा इसलिये दे दी क्योकि इसका वजन भोलाराम के दरख्वास्त पर रखा जा सकता था और बड़े साहब ने अपनी लड़की के लिए उस वीणा को दरख्वास्त के वजन के रूप में माँगा था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) आत्मा, 2. (ग) धर्म के रक्षक, 3. (क) गलत दलीलों के कारण, 4. (ग) माँ–बेटी के रोने की आवाज़ से।

लिखित प्रश्न

(क) यमदूत पृथ्वी लोक से खाली हाथ इसलिये लौटा क्योंकि वह भोलाराम का जीव नहीं लाये।

(ख) नारदजी को भोलाराम का जीव दरख्वास्तों से भरी फाइल में मिला।

(ग) नरक में पिछले सालों में बड़ी गुणी कारीगर आ गए जिनमें कई इमारतों के ठेकेदार हैं जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाईं। बड़े–बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर है; जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भरकर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गए ही नहीं। इन्होंने

बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें तान दी हैं। इस प्रकार निवास स्थान की समस्या हल हो गई।

(घ) आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को कुछ चीज़ भेजते हैं और रास्ते मे ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे अफ़सर पहनते हैं। मालगाड़ी के डिब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बंद कर देते हैं।

(ङ) लेखक ने समाज में हो रही भ्रष्टाचारी को एक कहानी के माध्यम से दर्शाया गया है।

भाषा और व्याकरण

1. (क) अन्जान
   (ख) हाथों हाथ
   (ग) प्रति माह
   (घ) यथा संभव
   (ङ) शक्तिनुसार
   (च) जन्मों जन्म
   (छ) बिन मतलब
   (ज) बीचों बीच

2. (क) वाह
   (ख) अरे
   (ग) बाप रे
   (घ) शाबाश
   (ङ) धन्य
   (च) धत्

पाठ-11 : कुछ नए मनभावन खेल

मौखिक प्रश्न

(क) खेलने से निर्भयता, उमंग, आत्मानुशासन, समूह में काम करने की प्रवृत्ति और प्रकृति से प्रेम की भावना जाग्रत होती है। कबड्डी का खेल हो या क्रिकेट का, स्कीइंग हो या शफ्टिंग, पैराग्लाइडिंग हो या बैलूनिंग,

सभी प्रकार के खेल हमारे जीवन में रोमांच; साहस और आत्मविश्वास की भावना जगाते हैं।

(ख) खेल तीन प्रकार के होते हैं—

1. स्थलीय खेल (ख) जलीय खेल (ग) हवाई खेल।

(ग) 'आइस-हॉकी' कनाडा और उत्तरी अमेरिका के बर्फीले इलाकों में खेली जाती है।

(घ) जलाशयों में तैराकी, वॉटर पोलो के अतिरिक्त रिवर राफ्टिंग, क्याकिंग, केनोइंग, पाल नौकायन आदि जल-क्रीड़ाएँ बहुत लोकप्रिय होती जा रही हैं।

(ङ) खिलाड़ी पैरासेल बाँधकर पैरासेलिंग खेल में दौड़ता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) जलीय खेल, 2. (ग) स्कैंडडेनेविया, 3. (क) सिंथेटिक फाइबर, 4. (ग) ब्रिस्टल, 5. (ख) पथारोहण।

लिखित प्रश्न

(क) ज़मीन पर खेले जाने वाले खेलों में से किन्हीं पाँच खेलों के नाम इस प्रकार हैं- हॉकी, क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन, बास्केटबॉल।

(ख) स्थलीय, जलीय और हवाई खेलों में सबसे कम खर्चीला खेल है स्थलीय खेल।

(ग) पर्वतारोहण के समय ऑक्सीजन-सिलिंडर, स्पीलिंग, बैग, धूप का चश्मा, आवश्यक प्राथमिक चिकित्सा सामग्री, ट्रैकिंग के जूते, नोट बुक, कैमरा और अन्य आवश्यक सामान, जिसे उठाकर चला जा सके, साथ ले जाना चाहिए।

(घ) भारत में जोशी मठ के निकट स्थित 'औली का मैदान' स्कीइंग के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

(ङ) 26 नवंबर, 2005 को विजयपत सिंघानिया ने गर्म हवा के बैलून में उड़ते हुए 21, 290 मीटर को ऊँचाई तक पहुँचकर एक नया विश्व रिकार्ड कायम किया।

(च) खेल जीवन के लिए अनिवार्य इसलिए है क्योंकि स्वस्थ शरीर की कार्य सिद्धी का प्रमुख साधन होता है। उत्तम स्वास्थय के लिए व्यायाम अनिवार्य है।

(छ) ऊँचे पहाड़ों, हिममंडित शिखरों पर चढ़ना पर्वतारोहण कहलाता है। इसके लिए निपुणता, कौशल, तत्परता, सजगता, धैर्य और साहस जैसे गुण अनिवार्य हैं।

(ज) इस खेल में खुले मैदान में पैरासेल को रस्सी की सहायता से गाड़ी से बाँधकर दौड़ता है, जिससे पैरासेल में हवा भर जाती है और हवा में ऊपर तैरने का आनंद आता है। इस खेल के लिए विस्तृत खुला मैदान, जीपगाड़ी पैरासेल, रस्सी, हेलमेट, जीवन रक्षक जैकेट आदि की आवश्यकता होती है।

(झ) राफ़्टिंग को जोखिम से भरा खेल इसलिये कहा गया है क्योंकि नदी की तीव्र धारा के प्रवाह की विपरीत दिशा में नाव चलाना एक साहसिक कार्य है। गंगा की धारा देव प्रयाग से आगे बड़ी तीव्र और वेगवती होती है। प्रत्येक नौका में छह: से आठ लोग सवार होते हैं।

भाषा और व्याकरण

1. (क) के लिए
   (ख) के बिना
   (ग) के विपरीत
   (घ) के
   (ङ) के साथ
2. (क) सतीश और उसके दोस्तों ने मिलकर खूब मजे किये।
   (ख) सुमन ने कल या तो पाँच बजे मुझे फोन किया था या सात बजे सही से ध्यान नहीं है मुझे।
   (ग) सड़क पर साइकिल चलाना लेकिन दाँए-बाँए देखते रहना।
   (घ) रमेश शादी में गया था इसलिए वह रात में घर देर से आया।
   (ङ) नेहा ने अपने पापा को बहुत समझाया मगर उन्होंने नेहा की बात नहीं मानी।

पाठ-12 : बिंदा

मौखिक प्रश्न

(क) बिंदा का पूरा नाम विंध्येश्वरी था।

(ख) बिंदा काम करने वाली सेविका थी।

(ग) बिंदा की नई अम्मा को लेखिका पंडिताइन चाची कहकर बुलाती थी।

(घ) लेखिका के घर में सफ़ेद कुतिया, भूरी पूसी, चूहे, कबूतर, गौरैया, बछिया और गाय थे।

(ङ) लेखिका की माँ ने उन्हें बिंदा से मिलने के लिए इसलिए मना कर दिया क्योंकि वह बीमार थी उसकी आँखे गड्ढे में धँस गयी थी, मुख दानों से भरकर ना जाने कैसा हो गया था और मैली-सी चाँदर के नीचे छिपा शरीर बिछौने से भिन्न जान पड़ता था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) बिंदा, 2. (ख) पंडिताइन चाची, 3. (क) चेचक, 4. (ख) निर्दयी।

लिखित प्रश्न

(क) भीत-सी आँखों वाली दुर्बल, छोटी और अपने-आप में ही सिमटी-सी बालिका को देखकर लेखिका को बिंदा की याद आई।

(ख) बचपन में लेखिका की माँ के संबंध में धारणा थी ''क्या पंडिताइन चाची मेरी माँ की तरह नहीं है?

(ग) लेखिका की माँ लेखिका को बहुत प्रेम करती थी।

(घ) बिंदा दूध की पतीली उतार रही थी। वह उसकी उँगुलियों से छूटकर गिर पड़ी। इस अपराध का दंड बिंदा को मिला।

(ङ) लेखिका ने अपनी माँ से तारा न बनने का अनुरोध इसलिये किया क्योकि वह नहीं चाहती थी बिंदा की तरह वह भी दिन-रात काम करने में ही झूठी रहे।

(च) वे अपनी गोरी, मोटी देह को रंगीन साड़ी से सजे-कसे, चारपाई पर बैठकर फूले गाल और चिपटी-सी नाक के दोनों ओर नीले काँच के बटन-सी चमकती हुई आँखें से मोहन को तेल मलती रहती थीं। उनकी विशेष कारीगरी से सँवारी पाटियों के बीच से लाल स्याही की मोटी लकीर-सा सिंदूर, उनींदी-सी आँखों में काले डोरे के समान लगने वाला काज़ल, चमकीले कर्णफूल गले की माला नगदार रंग-बिरंगी चूड़ियाँ और घुँघरूदार बिछुए, ये सभी अलंकार उन्हें गुड़िया की समानता दे देते थे।

(छ) लेखिका को बिंदा की नई अम्मा का व्यवहार अपनी माँ से अलग इसलिए जान पड़ता था क्योंकि वह बिंदा को कभी प्यार नहीं करती थी जबकि लेखिका की अम्मा अपनी बेटी को बहुत प्यार करती थी।

(ज) बिंदा घर में झाडू लगाना, आग जलाना, आँगन के नल से कलसी में

पानी लाना, नयी अम्मा को कटोरे में दूध देना, आदि सारे काम करती थी।

(झ) बिंदा को कोठरी की घास का चुभता हुआ ढ़ेर रेशमी बिछौने जैसा इसलिये लगा क्योंकि उसके जले पैरों को आराम मिल रहा था।

(ञ) बिंदा पंडिताइन चाची की आवाज सुनकर इसलिये सहम जाती क्योंकि उसे उनसे भय लगता था।

2. (क) बिंदा का कद देखकर लेखिका को ऐसा लगता था, मानो किसी ने ऊपर से दबाकर उसे कुछ छोटा कर दिया हो।

(ख) पंडिताइन चाची का स्वर सुनते ही बिंदा थरथरा उठती थी।

(ग) बिंदा की आँखें पिंजरे मे बंद चिड़िया की याद दिलाती थी।

(घ) बिंदा ने अपनी अम्मा के विषय में बताया कि ''वह रही मेरी अम्मा,'' तब मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। क्या सबकी एक अम्मा तारों में होती है।

(ङ) लेखिका की बुद्धि सहज ही पराजय स्वीकार करना नहीं जानती, इसी से मैंने सोचकर कहा— ''तुम नयी अम्मा को पुरानी अम्मा क्यों नहीं कहती, फिर वे न नयी रहेंगी और न डाँटेगी''।

भाषा और व्याकरण

1. (क) मैं बिंदा की नई अम्मा को पंडिताइन चाची कहती थी।

(ख) मेरे लिए घर के सब काम करने असंभव हैं।

(ग) मैं मन-ही-मन में न बुलाने का संकल्प करूँगा।

2. (क) कर्तवाच्य

(ख) कर्तवाच्य

(ग) कर्मवाच्य

(घ) भाववाच्य।

पाठ-13 : दोहा दशक

मौखिक प्रश्न

(क) सच्चा मित्र मुसीबत आने पर सहायता करता है।

(ख) सच बोलने वाले के हृदय में भगवान का निवास होता है।

(ग) छोटी से छोटी वस्तु का अपना महत्व होता है। यह इस दोहे में कहा गया है— रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तरवारि।।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) दया, 2. (ग) सत्यवादी के हृदय में, 3. (क) वह उपयोगी होती है।

लिखित प्रश्न

(क) गुरु और गोविंद मे गुरु का महत्व अधिक है।

(ख) मन की व्यथा को मन में इसलिये रखना चाहिये क्योंकि बाद में लोग उसका उपहास उड़ाते हैं।

(ग) सच्चे मित्र की पहचान यह होती है कि वह संकट के समय अपने मित्र का साथ देते हैं।

(घ) सज्जन लोग दान देने के लिए धन का संग्रह करते हैं।

(ङ) कबीर ने गुरु की महिमा का बखान इन शब्दों में किया है दुविधा में हूँ, किसके पैर लगूं। गुरु गोविन्द दोनों खड़े हैं। फिर मैंने गोविन्द को छोड़ा गुरु के ही पैर छुए, क्योंकि उसकी ही बलिहारी है, उन्हीं ने गोविन्द को बताया है।

(च) रहीम सबके साथ प्रेम से मिलकर हमें समझाना चाहते हैं कि जो हमारे सगे बनने का नाटक करते हैं वह मुसीबत पड़ने पर काम नहीं आते। जो मित्र साथ देते हैं वही सच्चे मित्र होते हैं।

(छ) धरती का उदाहरण देकर रहीम हमें समझाना चाहते हैं कि जैसी इस शरीर पर पड़ती है- सहन करनी चाहिये क्योंकि इस धरती पर भी सर्दी, गर्मी, और वर्षा पड़ती है, और जैसे धरती शीत, धूप और वर्षा सहन करती है। उसी प्रकार शरीर को कुछ दुख सहन करना चाहिए।

(ज) निंदक को अपने निकट इसलिए रखना चाहिए क्योंकि जो हमारी निंदा करता है, वह बिना साबुन और पानी के हमारी कमियाँ बताकर हमारे स्वभाव को साफ करता है।

भाषा और व्याकरण

1. छिमा — माफ़ी
2. साँच — वास्तव में
3. हिरदै — शरीर

4. पाँय — चरण
5. तरवारि — खड़ग
6. सरवर — नदी

2. (क) दिन, दीन
   (ख) अवधि, अवधी
   (ग) सुत, सूत
   (घ) योग, योग्य
   (ङ) नीड़, नीर
   (च) मात्र, मातृ
   (छ) कर्म, क्रम

3. (क) दाएँ-बाएँ
   (ख) झमाझम
   (ग) सदा
   (घ) सुरीला
   (ङ) आज।

पाठ-14 : गोशाला

मौखिक प्रश्न

(क) रामफल काका सबसे धनी किंतु कंजूस व्यक्ति थे।
(ख) अक्कल एक गरीब मजदूर किंतु हरफ़नमौला इंसान है।
(ग) गाँव की बबुइयाँ अक्कल से मन-ही-मन चिढ़ती थीं।
(घ) शहर में गाय का उत्सव मनाया जा रहा था।
(ङ) अक्कल लेखक के पास इंसाफ कराने गया था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) दोनों 'क' व 'ख', 2. (ग) दोनों 'क' व 'ख', 3. (ख) विलायती मैग़जीन।

लिखित प्रश्न

(क) शहर में (गोशाला) इसलिए बनाई गई थी ताकि गोशाला में बूढ़ी, अपाहिज गाय, बैलों की रक्षा हो सके।

(ख) अक्कल मजदूरी करता था और वह मकान भी बनाता था।

(ग) अक्कल के परिवार में तीन सदस्य थे।

(घ) लोग अक्कल की खुशामद इसलिये करते थे क्योंकि, एक कुशल कारीगर थे। घर बनाने में तो उस्ताद थे। गाँव में जितने अच्छे मकान हैं, चाहे उनकी दीवार बनाने में, चाहे छप्पर बनाने में सभी उनके द्वारा ही बनाये गये हैं।

(ङ) गाँव में साधु-संतों के आने पर अक्कल उनकी सेवा करता था।

(च) रामफल काका धनी होकर भी मनुष्यता की कसौटी पर खरे इसलिए नहीं उतरे क्योंकि वे कंजूस व्यक्ति थे।

(छ) बूढ़े अक्कल को देखकर लेखक इसलिये चौंक पड़ा क्योंकि यह वही अक्कल था जिसने गाँव भर को घर दिया, वही बेघर था और भीख माँग रहा था।

(ज) अक्कल ने कथा सुनाई किस तरह जिंदगी की उड़ान के समय अपनी पूरी शक्ति से रामफल बाबू की मजदूरी की, किस तरह उनकी कितनी ही परती ज़मीन को उसने पशु-धन की वृद्धि की, किस तरह उसने उनके मकान बनाए, जिस पर पड़ोस के बड़े-बड़े लोगों को ईर्ष्या होती है।

(झ) अक्कल ने गाँव छोड़ने का निर्णय इसलिये लिया क्योंकि गाँव में अब उनका गुजारा नहीं होता था।

भाषा और व्याकरण

1.

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
अच्छा	उत्तम	सर्वोत्तम

2.

(क)	भुखमरा	भूख से मरने वाला	तत्पुरुष समास
(ख)	आरामकुर्सी	आराम करने वाली कुर्सी	अव्ययीभाव समास
(ग)	व्यवहारकुशल	व्यवहार में कुशल	तत्पुरुष समास

(घ)	खाना–पीना	खाना और पीना	द्वद्व समास
(ङ)	प्रतिदिन	प्रत्येक दिन (रोज़ाना)	तत्पुरुष
(च)	खर–पात	खर और पात	द्वद्व समास
(छ)	भरपेट	पेट भरकर	तत्पुरूष समास
(ज)	कपड़ा–लत्ता	कपड़ा और लत्ता	द्वद्व समास

पाठ–15 : अजंता की चित्रकला

मौखिक प्रश्न

(क) अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र राज्य में स्थित हैं।

(ख) अजंता के कला–मंडप फरदापुर गाँव के निकट स्थित हैं।

(ग) अजंता जाते समय बधोरा नदी को पार करना पड़ता है।

(घ) इन गुफाओं में गुप्त काल के युग में कलाकृतियाँ उकेरी गई थीं।

(ङ) स्तूप–गुफा और विहार–गुफा में प्राचीन चित्रकला आज भी पूरी तरह से सुरक्षित है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) महाराष्ट्र में, 2. (ख) उनतीस, 3. (क) दो।

लिखित प्रश्न

(क) फरदापुर से छह किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ियों में बोधरा नदी बहती है, जिसे आते समय पार करना पड़ता है। नदी में सर्पाकार इतने घुमाव हैं कि जब तक आप एकदम पास न पहुँच–जाएँ, तब तक इन गुफाओं का आभास भी नहीं होता। नदी का अंतिम घुमाव समाप्त होते ही लगभग इक्यानवे मीटर ऊँचा, वर्तुलाकर दीवार–सा खड़ा एक टीला पहाड़ से निकलता दिखाई देता है।

(ख) अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र प्रदेश में हैं। जल गाँव, औरंगाबाद तथा पहूर तीन रेलवे स्टेशनों में से किसी एक स्टेशन से अजंता पहुँचा जा सकता है।

(ग) घाटी मे चारों ओर हरसिंगार का वन दिखाई देता है।

(घ) अजंता की पहली गुफा में सूर्य की किरणें संध्या के समय अंतिम प्रवेश पाती हैं।

(ङ) लेखक ने अजंता की गुफाओं का चुनाव करने वाले को 'शत-शत प्रणाम' इसलिये कहा है क्योंकि यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का पूर्ण विकास अक्टूबर से दिसंबर तक होता है। कला की अभिव्यक्ति के लिए जिन लोगों ने ऐसे अद्भूत स्थान को चुना, उनके चरणों में शत-शत प्रणाम।

(च) चंपेय जातक की कथा है कि बोधिसत्व ने किसी समय नागराज का जन्म लिया था। संयोगवश वे बंदी बनकर काशी के हाट में बेचने के लिए लाए गए थे। उन्हें उस परिस्थिति से छुड़ाकर काशीगज अपने यहाँ ले गए और उनके सारे परिवार को भी निमंत्रित किया। इसका चित्र भी उक्त गुफा में है। एक ओसरे में नागराज तथा काशीराज एक राजासन पर आसीन हैं। चारों ओर राजमहिलाएँ तथा राजपरिवार के लोग घेरे हुए खड़े हैं। नागराज काशीराज को उपदेश दे रहे हैं। चित्र में प्रत्येक व्यक्ति का भाव और मुद्रा बड़ी सफलता से अंकित है।

(छ) यहाँ पर एक तो माता-पुत्र का प्रसिद्ध चित्र है, किंतु इससे चित्र के विषय का आधा ज्ञान होता है यहाँ तो हम इतना ही देखते हैं कि माता अपने पुत्र को किसी के सामने साग्रह उपस्थित कर रही है और पुत्र भी अंजलि पसारकर उस व्यक्ति के सामने उपस्थित है, किंतु कौन है वह व्यक्ति जिस पर इन दोनों की टकटकी लगी हुई है? इन आदमकद चित्रों के सामने एक विशाल महापुरुष स्थित है, जिसके हाथ में भिक्षा-पात्र है। बुद्धत्व प्राप्त करने पर जब भगवान पुन: कपिलवस्तु में आए, तो उन्हें यशोधरा अपने पुत्र राहुल से बढ़कर और कौन-सी भिक्षा दे सकती थी। आत्म-समर्पण की पराकष्ठा का यह चित्र अपना जोड़ नहीं रखता।

(ज) एक स्थान पर मरती हुई राजकुमारी का चित्र है। उसे बचाने के सभी उपाय अवश्यंभावी के आगे व्यर्थ हो गए हैं; इसी कारण अजंता की गुफा के चितेरों के सम्मुखी लोग नतमस्तक हो जाते हैं।

भाषा और व्याकरण

2. (क) वर्तुलाकार
   (ख) यथोचित
   (ग) प्रत्येक
   (घ) अन्वेषण

(ङ) भवन

(च) परमोजस्वी

(छ) महेश

(ज) भानुदय

(झ) चित्ताकर्षक

(ञ) आत्मोत्सर्ग

पाठ–16 : शेर शिवाजी

मौखिक प्रश्न

(क) शिवाजी कुँअर रामसिंह को इस बात का धन्यवाद दे रहे थे कि आप लोगों ने हमारी सुख–सुविधा का सराहनीय प्रबंध कर रखा है।

(ख) मिर्जा साहब रामसिंह के पिताजी हैं।

(ग) मिर्जा साहब का शिवाजी के लिए यह संदेश था कि एक बार आप बादशाह सलामत से मिल लें।

(घ) शिवाजी का सपना था कि मुझे एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना है, जिसमें इन्सान को इन्सान समझा जाए, जिसमें कोई किसी का गुलाम नहीं हो, सब अपनी मर्यादा के अनुरूप काम करें। जहाँ महिलाओं की प्रतिष्ठा हो, बच्चों के विकास की समुचित व्यवस्था हो। विवेक जिसका मंत्री होगा, और न्याय–बुद्धि जिसकी मार्ग दर्शिका।

(ङ) शिवाजी ने भवानी माँ अपनी तलवार को कहा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) दक्खिन का शेर, 2. (क) मिर्जा गालिब, 3. (घ) पूर्व का मंत्री, 4. (क) राजा जयसिंह का पुत्र।

लिखित प्रश्न

(क) रामसिंह को शिवाजी के मारे जाने की आशंका थी।

(ख) शिवाजी के लिए रामसिंह के पिता का संदेश यह था कि एक बार आप बादशाह सलामत से मिल लें।

(ग) मुगल बादशाह औरंगजेब ने शिवाजी का घोर अपमान किया।

(घ) शिवाजी स्वाभिमानी थे।

(ङ) हाँ कुँअर रामसिंह शिवाजी का साथ देने के लिए तैयार हो गए।

(च) शिवाजी इस बात से क्रोधित थे कि राजा ने उन्हें अन्य राजा की तरह समझा था जबकि वह सम्राट की समानता के अभिलाषी थे।

(छ) शिवाजी सम्राट की समानता के अभिलाषी थे और अन्य राजा सम्राट की कृपा के भिखारी थे।

(ज) कुँअर रामसिंह शिवाजी का साथ देने के लिए इसलिए तैयार हो गए क्योंकि वह उनकी रक्षा करना चाहते थे।

(झ) क्योंकि उन्होंने मुगल बादशाह औरंगजेब की मनसबदारी लेने से मना कर दिया था।

(ञ) शिवाजी का सपना था मुझे एक ऐसे राष्ट्र निर्माण करना है, जिसमें इन्सान को इन्सान समझा जाएगा, जिसमें कोई किसी का गुलाम नहीं होगा, सब अपनी मर्यादा के अनुरूप काम करेंगे। जहाँ महिलाओं की प्रतिष्ठा होगी, बच्चों के विकास की समुचित व्यवस्था होगी। विवेक जिसका मंत्री होगा, और न्याय-बुद्धि जिसकी मार्गदर्शिका।

(ट) रामसिंह शिवाजी की मदद उनके बचाव के द्वारा करना चाहते थे।

(ठ) शिवाजी 'शेर' से भी इस प्रकार श्रेष्ठ थे क्योंकि पिंजरे में फँसकर जीवन नष्ट करने वाला शेर आदमी न होकर जानवर होता है। उसमें केवल बल और साहस होता है, बुद्धि और सूझ-बूझ नहीं। पिंजरे से मुक्त होने की विधि वह नहीं सोच पाता। वह मनु की संतान थे। बुद्धि उन्हें विरासत में मिली थी और मनुष्य की बुद्धि और शेर का साहस अद्भुत चमत्कार कर सकते हैं।

भाषा और व्याकरण

1. (क) आना — मेहमान आने वाले हैं।
   (ख) स्वर्ग — उसका घर स्वर्ग की तरह लगता है।
   (ग) देव — उसका नाम देव है।
   (घ) माता — मेरी माता बहुत अच्छी है।
   (ङ) मूर्ख — मूर्ख व्यक्ति फालतू की बातें करते हैं।
   (च) रात — रात को मोहन आएगा।
2. (क) अग्नि, पावक, ज्वाला
   (ख) पानी, नीर, जीवन
   (ग) वायु, पवन, समीर

(घ) भूमि, भू, पृथ्वी

(ङ) आसमान, आकाश, नभ

(च) छात्र, पाठक, विद्यार्थी

3. (क) जहरीला

(ख) स्वाभिमानी, अभिमानी

(ग) आस्थापूर्ण

(घ) साहसी

(ङ) समान

4. (क) शानदार — मकान

(ख) सच्चा — हृदय

(ग) कीमती — सामान

(घ) महान — कार्य

(ङ) पूज्य — पिताजी

(च) अनुकूल — परिस्थिति

(छ) दाहिनी — भुजा

(ज) अद्‌भुत — चमत्कार

पाठ–17 : प्रतिशोध

मौखिक प्रश्न

(क) शक्ति सिंह की पत्नी उसे प्रतिशोध लेने के लिए मना कर रही थी।

(ख) शक्ति सिंह अपने भाई को मारना चाहता था।

(ग) राणा प्रताप की ओर से मुगल मुन्नाजी लड़ रहे थे।

(घ) इस कहानी में मानसिंह की कुमंत्रणा सिद्‌ध हो रही थी।

(ङ) मुगल–राजपूतों के युद्‌ध में भील, धनुष और तोपों के गोले आदि हथियारों का प्रयोग हुआ था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) प्रतिशोध, 2. (ख) सिंह, 3. (क) महाराणा।

लिखित प्रश्न

(क) यह युद्ध हल्दीघाटी की ऊँची चोटियों पर हुआ था।

(ख) युद्ध शक्ति सिंह और महाराणा प्रताप के बीच हुआ था।

(ग) राणा प्रताप के घोड़े का नाम चेतक था।

(घ) पर्वतों के शिखर से विषैले बाण महाराणा प्रताप की सेना छोड़ रही थी।

(ङ) शक्ति सिंह की पत्नी प्रतिशोध की भावना को अनुपयुक्त बता रही थी।

(च) शक्ति सिंह अपने अपमान का बदला महाराणा प्रताप से लेना चाहते थे। वह उनके गर्व को मिट्‌टी मे मिलना चाहते थे।

(छ) मुगल सेना में से शक्ति सिंह इस चातुरी को समझ गया। उसने देखा कि घायल प्रताप रणक्षेत्र से जीते-जागते निकले चले जा रहे हैं और मुगल मन्नाजी को प्रताप समझकर उस पर ही टूट पड़े हैं।

(ज) मन्नाजी ने अपने मस्तक पर राजचिह्न इसलिये धारण किया क्योंकि महाराणा प्रताप की जान खतरे में थी।

(झ) महाराणा से बदला लेने शक्ति सिंह ने मुगलों के साथ हाथ मिला लिया और महाराणा पर हमला कर दिया।

(ञ) शक्ति सिंह ने अपनी गलती का प्रायश्चित करने के लिए दो मुगल सरदार को गोली मारकर अपने भाई (महाराणा प्रताप) की रक्षा की।

2. (क) कई दिनों की जलती आग शांत होगी।

(ख) आज आखिरी फैसला होगा।

(ग) ओह! जीवन कितना नीरस हो गया था।

(घ) मेवाड़ का सम्मान इतना कमजोर नहीं था।

(ङ) मानसिंह की धोखेबाजी सिद्ध होती दिख रही थी।

(च) राणा ने उसकी बेवजह हँसी को गम्भीर रूप से देखा था।

(छ) अब तो तुम्हे धरती माँ की इज्जत का ख्याल करना चाहिए।

भाषा और व्याकरण

(क) वर्तमानकाल (ख) भविष्यत्‌काल

(ग) भविष्यत्‌काल (घ) भूतकाल

(ङ) वर्तमानकाल (च) वर्तमानकाल

(छ) भूतकाल (ज) वर्तमानकाल

(झ) भूतकाल (ञ) भविष्यत्काल।

पाठ–18 : स्नेह शपथ

मौखिक प्रश्न

(क) कवि जिह्वा को सख्त बात कहने से रोक रहा है।

(ख) प्यार से नफरत के गहरे गर्त को भरा जा सकता है।

(ग) हृदय का स्नेह हर किसी पर उड़ेला जा सकता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) कड़वी बात 2. (ख) उसे प्यार से समझाकर।

3. (ख) गिरे हुए को उठाना 4.(क) ताकि वह समय पड़ने पर सख्त बात कहने से अपने को रोके।

लिखित प्रश्न

(क) क्योंकि स्नेह की शक्ति अपार है।

(ख) भेदभाव और कड़वाहट भरे रिश्तों को भी स्नेहपूर्ण तथा मृदुवचनों से प्रेम के रिश्तों में बदला जा सकता है।

(ग) 1. स्नेह की शक्ति अपार है।

2. वह गिरे हुए व्यक्ति को संभाल सकती है।

3. सही राह दिखा सकती है।

4. प्रेम तथा स्नहे द्वारा हर समस्य का समाधान ढूँढा जा सकता है।

5. भ्रष्ट व्यक्ति को भी प्यार सुधार सकता है।

(घ) (i) इसका आशय है कि भेदभाव एवं कड़वाहट भरे रिश्तों को भी स्नेहपूर्ण व्यवहार तथा मृदुवचनों से प्रेम के रिश्तों में बदला जा सकता है।

(ii) प्रेमपूर्ण व्यवहार दुष्ट व्यक्ति को उसकी दुष्टता का ऐहसास करा सकता है। उसे सही राह भी दिखा सकता है।

भाषा और व्याकरण

1. (क) अरी (ख) संतप्त (ग) सिंगार (घ) उपवास (ङ) वेणी

2. (क) जिह्वा (ख) यतन (ग) कार्य (घ) भिक्षा

3. (क) स्त्रीलिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) पुलिंग (घ) स्त्रीलिंग (ङ) पुलिंग
(च) पुलिंग

4. (क) मुलायम (ख) थोड़ा/तनिक (ग) घबरा जाना (घ) साक्षी (ङ) चित

5. कहाँ, मैं, उन्हें, गाँव, अँधेरा, नदियाँ, अंग्रेज़ी, चंद्रमा, हँसमुख

पाठ–19 : पेड़ हमारे मित्र

मौखिक प्रश्न

(क) सुंदरलाल छठी कक्षा में पढ़ता था।

(ख) उसे पेड़ लगाने का बहुत शौक था।

(ग) वह रोज नियमित रूप से स्कूल जाता था। गुरु जी जो पाठ पढ़ाते, उसे पूरी तरह याद करता और परीक्षा में सदा प्रथम आता।

(घ) सुंदरलाल अपनी बी०ए० की परीक्षा के लिए नैनीताल जा रहा था।

(ङ) चिपको आंदोलन का सूत्रपात सुंदरलाल बहुगुणा ने किया।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) पेड़–पौधों 2. (घ) वर्षा 3. (क) अकाल की स्थिति बनेगी

लिखित प्रश्न

(क) उसने अपनी मित्र–मंडली में पेड़–पौधों के प्रति स्नेह भावना जागृत की।

(ख) वह उसे विनम्र भाव से समझाता और पेड़ काटने से रोकता। न मानने पर वह उससे लड़ने–मरने के लिए तैयार हो जाता।

(ग) उसे भयंकर परिणाम दिखाई दे रहे थे कि यदि इस प्रकार सभी पेड़–पौधे धीरे–धीरे कट जाएँगे और गाँव में बसने वाले लोग अनाथ होकर रह जाएँगे।

(घ) उसने लोगों को वृक्षों की कटाई रोकने का एक नया ढंग समझाया कि जब कंपनी के मजदूर किसी पेड़ को काटने लगे, तो लोग उस पेड़ से लिपट जाएँ। इससे कंपनी के मजदूर उस वृक्ष को काट नहीं सकेंगे।

(ङ) स्वयं कीजिए।

(च) वह आस–पास के जंगल से पेड़ों के बीज उठा लाता, उनसे पौध तैयार करता और फिर उन पौधों को लगा देता। उन्हें पानी देता और फिर वे छोटे–छोटे पौधे बड़े वृक्ष बन जाते।

(छ) जब सुंदरलाल अपनी बी०ए० की परीक्षा के लिए नैनीताल जा रहा था तो उसने रास्ते में कुछ लोगों को एक साथ बहुत पेड़ काटते देखा। यह देखकर उसका मन व्याकुल हो उठा पर उसकी हैरानी का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने सुना कि वे लोग कंपनी के नौकर हैं और कंपनी ने जंगल काटने का ठेका ले रखा है। यही कारण था कि वे पेड़ काटना बंद नहीं कर सकते थे। यह जानकर उसे दुख भी हुआ और आश्चर्य भी।

(ज) वह उस कंपनी के मजदूरों को वृक्ष काटने से रोक नहीं सका था, यही उसकी आत्मग्लानि का मुख्य कारण था।

(झ) उसने अपनी मित्र-मंडली की सभा बुलाई और उस सभा में गाँव के सभी लोगों को भी आमंत्रित किया। लोगों को पेड़-पौधों का महत्व समझाया। उसने आस-पास के सभी गाँवों में अपनी यात्राएँ प्रारम्भ की। सभाओं का आयोजन किया और लोगों को वृक्षों के महत्व तथा उनके कटने से सिर पर मँडरा रहे खतरे के बारे में सचेत किया। उसने इस बारे में सरकार को अनेक पत्र लिखे। 'तरु-रक्षण' एवं 'वृक्षारोपण' संस्थान का गठन किया। साथ ही चिपको आन्दोलन का सूत्रपात किया।

भाषा और व्याकरण

1. आस-पास, छोटे-छोटे, पेड़-पौधे, हरे-भरे
2. (क) हरा (ख) सुंदर (ग) शरारती (घ) मीठा (ङ) विशाल
3. (क) बहुत से (ख) बहुत (ग) एक (घ) बहुत (ङ) बहुत
4. (क) पेड़-वृक्ष (ख) आकाश-गगन (ग) मंडली-समूह
   (घ) महत्त्व-उपयोगिता (ङ) अकाल-सूखा
5. (क) पर्यावरण (ख) प्रवक्ता (ग) प्रत्यक्ष (घ) असंभव (ङ) अतुलनीय

■ ■ ■

कक्षा-8

पाठ-1 : सत्कर्त्तव्य

मौखिक प्रश्न

(क) सामान्य-सा पत्ता भी धरती को छाया देने के कार्य में लगा हुआ है।

(ख) सूर्य संसार में अपनी रोशनी बिखेरता है।

(ग) व्यक्ति धरती का अन्न खाकर अपना जीवन-यापन करता है।

(घ) कवि ने स्वार्थ-विवश मनुष्य को कहा है।

(ङ) अपने हित के लिए वसुधा ने मनुष्य पर भरोसा किया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) पत्र, 2. (क) रवि, 3. (क) मनुष्य,

4. (ग) वसुधा

लिखित प्रश्न

1. (क) कवि ने जड़ और चेतन को काम में लगे रहने की विशेषता बताई है।

(ख) है उद्देश्य नितांत तुच्छ तृण के भी लघु जीवन का। उसी पूर्ति में वह करता है अंत कर्ममय तन का।

(ग) पृथ्वी माता के समान है।

(घ) कवि देशवासियों को यह संदेश देना चाहते हैं कि अपरिमित ज्ञान और बल से संपन्न मनुष्य को स्वार्थ का परित्याग कर, मातृभूमि और उसके निवासियों की सेवा करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए।

(ङ) प्रकृति के सभी उपादान कवि को इस प्रकार सक्रिय प्रतीत होते हैं क्योंकि यहीं पर मनुष्य ने जन्म लिया, यहीं का अन्न खाकर व पानी पीकर हम बड़े हुए हैं और यहीं पर रहकर हम खाते, पीते, सोते, हँसते व मौज मस्ती करते है।

(च) कवि ने मनुष्य को स्वार्थी इसलिए कहा है क्योंकि मनुष्य केवल अपने बारे में सोचता है, खाता है, पीता है और सो जाता है।

(छ) कवि ने मनुष्य के मेधाबल की यह विशेषता बताई है कि ये आसानी से कोई भी प्रश्न अपनी बुद्धि से हल कर देते हैं।

2. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. (क) (i) गोद, संख्या (ii) पंख, चिट्ठी

(iii) खेत जोतने का यंत्र, समाधान (iv) स्वभाव, कर्तव्य

(ख) (i) अतुल्य (ii) पापी

(iii) ऋणदाता (iv) उपकारी

(ग) (i) अतिशीघ्र, अतिक्रमण (ii) उपद्रव, उपवन
(iii) सब्जी, समुन्द्र (iv) स्वर्ग, स्वार्थ

(घ) (i) बुराई, अच्छाई (ii) भलाई, चमकीला
(iii) दूधवाला, चायवाला (iv) पीलापन, कालापन

2. (क) गाते हो। (ख) यह क्या हो गया?
(ग) देखकर चलो। (घ) बेटा।
(ङ) कार्य किया है।

3. (क) तो कोई नहीं है। (ख) छेद है।
(ग) गर्म है। (घ) रहती है।
(ङ) सब बैठे हैं।

पाठ–2 : बुद्धि और भाग्य

मौखिक प्रश्न

(क) बुद्धि और भाग्य अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर यह सिद्ध करना चाहते थे कि हम दोनों में से कौन श्रेष्ठ है भाग्य या बुद्धि।

(ख) बुद्धि ने भाग्य को चुनौती देते हुए कहा— ''यह अच्छा न होगा कि हम दोनों अपनी–अपनी शक्ति का प्रदर्शन करके देखें। जो जीतेगा वह बड़ा होगा।''

(ग) भाग्य जब अपना कार्य कर रहा था तब बुद्धि एक दर्शक इसलिये बन गई क्योंकि बुद्धि ने उसका हाथ छोड़ दिया था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) एक बोरी भुना चना, 2. (ग) महामंत्री को, 3. (ख) अपने मित्र को, 4. (क) ये क्या बला होती है, 5. (घ) इनमें से कोई नहीं।

लिखित प्रश्न

(क) बुद्धि और भाग्य में इस बात पर बहस हो रही थी कि हम दोनों में से कौन सर्वश्रेष्ठ है।

(ख) गड़रिया अपने कीमती खड़ाऊँ सौदागर को इसलिये बेच देता था क्योंकि उसे एक बोरी भुने हुए चने उनके बदले में चाहिए थे। वह कहता था कि मैं रोज गाँव जाने से थक जाता हूँ, खा–पीकर यहीं मस्त पड़ा रहा करूँगा।

(ग) सौदागर गड़रिए को सम्राट इसलिये बनाना चाहता था क्योंकि गड़रिए पर भाग्य मेहरबान था और सौदागर गड़रिए के सहारे अपनी किस्मत चमकाना चाहता था।

(घ) पीतल का ढ़ेर सोने में भाग्य के द्वारा बदल गया।

(ङ) सौदागर ने गड़रिए से कीमती खडाऊँ लेकर महामंत्री को भेंट कर दिये।

(च) गड़रिए के पैरों में नित नई खड़ाऊँ का जोड़ा देखकर सौदागर सोचने लगा कि यह कोई जादूगर तो नहीं है?

(छ) सौदागर ने गड़रिए को सम्राट बनाने के लिए सोना बेचकर ज़मीन खरीदी, महल और किला बनवाया सेना भरती की, अब बेशुमार दौलत उसके पास थी। वहाँ के जागीरदारों को मुँह माँगा रुपया देकर कुछ जागीरें भी खरीद लीं। गड़रिए के लिए बढ़िया-बढ़िया कपड़े बनवाए। सजा हुआ गड़रिया शक्ल-सूरत से अब राजा लग रहा था।

(ज) बुद्धि ने सौदागर तथा गड़रिए का तब-तब साथ दिया जब-जब उन पर मुसीबत आ गयी।

(झ) भाग्य ने बुद्धि से हार इसलिये मान ली थी क्योंकि उसने अपनी गलती स्वीकार कर ली थी।

भाषा और व्याकरण

1. (क) प्रेम, (ख) शांत, (ग) पतन, (घ) ऊष्ण, (ङ) विदेश।

2. (क) दिल — पुल्लिग, चिंता — स्त्रीलिंग।
   (ख) भाग्य — पुल्लिग, बुद्धि — स्त्रीलिंग।
   (ग) गड़रिए — पुल्लिग, बरात — पुल्लिंग।
   (घ) सौदागर — पुल्लिग, भेट — स्त्रीलिंग।
   (ङ) आकाश — पुल्लिग, बादल — पुल्लिंग

3. (क) मनोज ने घड़ी खरीदी।
   (ख) मेज पर पुस्तक रखी है।
   (ग) जल्दी घर पर चलना चाहिए।
   (घ) बच्चा खेलते-खेलते गिर गया।
   (ङ) आकाश में बादल देखकर मोर नाच रहे थे।

पाठ–3 : किसका काम ?

मौखिक प्रश्न

(क) उमा की गणित की परीक्षा थी।

(ख) उमा की माँ अपनी माँ से मिलने अस्पताल गयी थी।

(ग) उमा ग्यारह वर्ष की हो गई थी।

(घ) रवि तेरह वर्ष का था।

(ङ) उमा को स्कूल में खेले जाने वाले नाटक संगीत और जादू में मुख्य भूमिका के लिए चुना गया था इसलिए उमा को स्कूल मे रुकना पड़ा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) क्रिकेट, 2. (ग) बीमार नानी से मिलने अस्पताल, 3. (ख) उमा को रवि का, 4. (ग) संगीत और जादू, 5. (घ) कुछ भी नहीं।

लिखित प्रश्न

(क) उमा ने रवि को सैंडविच बनाकर खिलाया।

(ख) चाय बनाने के लिए चीनी, दूध, चाय की पत्ती आदि चीजों की जरूरत होती है।

(ग) रवि ने खाना बनाना सीखने का निश्चय किया।

(घ) उमा और रवि में उमा अधिक जिम्मेदार थी क्योंकि वह अपने कर्तव्य को समझती थी।

(ङ) घर में लड़की की भूमिका के बारे में श्रीमति कहती थी कि ''उमा तो मेरा दाहिना हाथ है।''

भाषा और व्याकरण

1. (क) रसीला, (ख) बलशाली, (ग) शिक्षक, (घ) आलसी।
2. (क) और, (ख) इसलिए, (ग) किंतु, (घ) कि।
3. शब्दों के उचित जोड़े बनाइए–

(क) अजीबो — गरीब

(ख) लाड़ — प्यार

(ग) तर्क — विर्तक

(घ) छोटी — मोटी

(ङ) हट्टा — कट्टा।

पाठ–4 : मित्र का चुनाव

मौखिक प्रश्न

(क) यह पत्र बाप बेटे को मित्रता के चुनाव के बारे में लिख रहा है।

(ख) आदमी की पहचान उसके कर्मों से होती है।

(ग) बुरे लोगों से न प्रशंसा करनी चाहिए न बुराई करनी चाहिये।

(घ) जो लोग मतलबी होते हैं उन लोगों से मित्रता करने से बचना चाहिये।

(ङ) भावुकता पर आधारित दोस्ती ज्यादा दिनों तक नहीं चलती।

(च) किसी को अपना मित्र बनाने से पहले उसे समझ और परख लेना चाहिए कि क्या वह सभी गुण उसमें है जो हमारे मित्र बनने योग्य हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) बुरा, 2. (ख) बुरे लोगों की, 3. (क) बुरा व्यक्ति, 4. (क) एक ही तरह की दिलचस्पी रखने वाले दो लोगों की दोस्ती, 5. (ग) स्पष्टवादियों को।

लिखित प्रश्न

(क) दोस्ती अच्छे लोगों से करनी चाहिये।

(ख) सच्ची दोस्ती हृदय से उत्पन्न होती है।

(ग) जो दोस्ती भावुकता पर आधारित होती है वह दोस्ती क्षणभंगुर होती है।

(घ) दुष्ट और बुरे लोगों को दुश्मन बनाना इसलिये खतरनाक है क्योंकि वह समय आने पर अपना बदला जरूर लेते हैं।

(ङ) सही तरीका तो वही है जो संतों ने सुझाया है, ''बुराई से घृणा करो, बुरे से नहीं'', सभी से अपने को बचाकर रखो और वह भी ऐसे कि उन्हें लगे नहीं कि तुम उनसे बच रहे हो। नहीं तो तुम असामाजिक घोषित कर दिए जाओगे।

(च) जीवन में तुम्हे ऐसे लोग भी मिलेंगे जो बड़ी–बड़ी बातों पर भी चुप्पी साध लेते हैं, दूसरे वे हैं जो मामूली बातों का भी बतंगड़ बनाकर हल्ला मचाते हैं। इन दोनों प्रकारों से बचो। वे पाखंडी हैं।

(छ) सच्ची दोस्ती हृदय से उपजती है और हृदय ही उसे अनुभव करता है।

(ज) सच्ची दोस्ती की दुहाई देने वाले तुम्हें जाने कितने मित्र मिलेंगे जो वास्तव में धूर्त और चालाक होंगे। उन्हें पहचानना कठिन है, पर ऐसा भी नहीं कि तुम भाँप नहीं सकते। यह गुण हर व्यक्ति में होता है, तुम्हारे अंदर भी है। अचानक जोश में आ जाने या भाव–विभोर हो जाने से ऐसे लोगों की सही–सही समझने की क्षमता नष्ट हो जाती है।

(झ) क्योंकि हर व्यक्ति में अपने साथी की नकल करने और उसके जैसा बनने की प्रवृत्ति होती है।

(ञ) मित्र का चुनाव करते समय इन बातों का ध्यान रखना चाहिए कि उनका जन्म किस परिवार में हुआ, उनके साथी कैसे हैं, उनकी आदतें कैसी हैं, उनका चरित्र कैसा है, और उनका समाज में क्या स्थान है।

2. (क) हमें बुराई से घृणा करनी चाहिये बुरे व्यक्ति से नहीं। बुराई हमें गर्त की ओर ले जाती है और अच्छाई हमें स्वर्ग की ओर ले जाती है। बुरे व्यक्ति को भी अच्छाई स्वर्ग की ओर ले जाती है। बुरे व्यक्ति को भी अच्छाई से एक अच्छा इन्सान बनाया जा सकता है।

(ख) जीवन में तुम्हें ऐसे लोग भी मिलेंगे जो बड़ी से बड़ी बातों पर चुप्पी साध लेते हैं, दूसरे वे हैं जो मामूली बातों का भी बतंगड़ बनाकर हल्ला मचाते हैं। इन दोनों प्रकार से बचो। वे पाखंडी हैं।

(ग) बात को आगे बढ़ाने से पहले, यह समझ लो कि तुम्हारी आयु के अधिकतर बच्चे यही समझते हैं कि स्पष्टवादी होना एक अच्छी निशानी है। किसी को अपना मित्र बनाने से पहले, उसे इसके लिए समझने–परखने के पहले, यदि तुम इतने स्पष्टवादी हो गए कि उसकी कमियों की आलोचना करने लगे तो समझो दुनिया में कोई तुम्हारा मित्र न बन पाएगा। साफ़गोई ठीक है पर बहुत सावधानी चाहिए।

(घ) अच्छे लोगों के व्यवहार और बातचीत की एक अपनी शैली, अपना तौर–तरीका होता है। उनका अनुसरण कर वैसे ही बनोगे तो अपने आप को भी सँवारोगे। उन लोगों के बीच भी एक सजावट पैदा करोगे जिनके साथ तुम उठते–बैठते हो। अच्छी संगती का मापदंड एक अच्छे समाज में बनाता है। अच्छों के साथ रहोगे तो अपने आप अच्छे बनोगे।

(ङ) मान लो कि तुम्हारा कोई गहरा दोस्त हो जो शराबी और जुआरी आदि

हो, पर सामाजिक दृष्टि से वह बड़ा अच्छा आदमी भी हो। ईमानदारी से अपना काम करता हो, किसी को हानि न पहुँचाता हो और सभी के साथ सभ्यता से पेश आता हो। क्या तुम उसका साथ इसलिये छोड़ दोगे की वह शराब पीता है या जुआ खेलता है? नहीं। साथ मत छोड़ो पर उसके अवगुणों की नकल न करो। कोई कवि या शायर बहुत बड़ा शराबी हो सकता है। उसमें कुछ और दुर्गण भी हो सकते हैं, अक्सर होते भी हैं पर उन्हें हम सिर्फ क्षमा करते हैं भूलते नहीं। अच्छाई की नकल करो, उसके साथ जो कलंक है उसकी नहीं। याद रखो, बुराई सब में होती है तुम्हारे में भी होगी, पर अपनी बुराई को न दूसरों पर लादो, न दूसरे की लेकर अपनी बुराइयों की संख्या बढ़ाओ।

भाषा और व्याकरण

1. (क) मित्र — सखा, दोस्त, यार, मीत, हितैषी (ख) समाज — समुदाय, संप्रदाय, कौम, वर्ग (ग) राजा — बादशाह, भूपति, सुल्तान, सम्राट, प्रभु।
2. दंडनीय, मित्रता, सामाजिक, ईमानदारी, समझदारी, नैतिकता।
3. (क) एक-दूसरे
   (ख) धन-दौलत
   (ग) ऊँच-नीच
   (घ) भला-बुरा
   (ङ) अपना-पराया।

पाठ-5 : मनभावन सावन

मौखिक प्रश्न

(क) सावन में मेघ झम-झम करके बरसते हैं।

(ख) पीउ-पीउ तथा म्याव-म्याव की ध्वनि कोयल और मोर करने लगते हैं।

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) सावन में बेला के फूल की कलियाँ हर पल बढ़ती हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1.(ख) तड़-तड़, 2. (ग) घुमड़-घुमड़, 3. (ग) बेला और हरसिंगार, 4. (ख) सावन

लिखित प्रश्न

(क) पक्षियों के समूह गाना गाते हैं।

(ख) ताड़ के पेड़ की डाली झूम-झूमकर सिर हिला रही है।

(ग) कविता में कवि सबको इंद्रधनुष के झूले में झूलने का संदेश दे रहा है।

(घ) ताड़ के वृक्ष की हथेलियाँ चौड़ी हैं।

(ङ) वर्षा होने पर वृक्ष इसलिये झूमने लगते हैं क्योंकि वर्षा के द्वारा उन्हें जल जाता है।

(च) वर्षा होने पर पक्षी खुशियाँ मनाते हैं।

(छ) वर्षा की बूँदें पड़ने से धरती के रोम सिहर उठते हैं।

(ज) कवि सावन को बार-बार इसलिये बुलाना चाहता है ताकि यह पल हर बार आये और पेड़-पौधे सभी जानवर खुश रहें।

(झ) कविता में हरियाली को हँसमुख इसलिये कहा गया है क्योंकि पशु-पक्षी मंगल गाते हैं।

(ञ) स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. (क) मेघ — जलज

   (ख) तरु — शाख

   (ग) तम — रजनी

   (घ) वारि — तोय, बूँद

2. चिता — मुर्दा जलाने के लिए लकड़ियों का ढ़ेर— शमशान में रामू के पिता की चिता जल रही थी।

   चिंता — परेशानी— चिंता चिता से बड़ी होती है।

   वश — अधिकार — माता-पिता की सम्पत्ति पर बच्चों का ही अधिकार होता है।

   वंश — संतान — लव-कुश राम जी के वंश थे।

   गदा — प्राचीन अस्त्र — भीम ने अपनी गदा से दुर्योधन पर प्रहार किया।

   गंदा — अपवित्र — गंदगी गंगा जी को गंदा किये जा रही है।

   मद — नशा — किसी भी व्यक्ति को मद की आदत नहीं डालनी चाहिए।

मंद — धीमा — कछुआ मंद गति से चलता है।

दगा — धोखा — हमें किसी को भी दगा नहीं देना चाहिए।

दंगा — लड़ाई — हमें दंगा नही करना चाहिए।

सत — सार — लोग अंग्रेजी के चुने हुए शब्दों का प्रयोग करते थे जिसका कोई सत नहीं होता था।

संत — महात्मा — संत लोगों के प्रवचनों को हमें ध्यान से समझना चाहिए।

पथ — रास्ता — सच्चाई का पथ हमें स्वर्ग तक ले जाता है।

पंथ — सम्प्रदाय — हमें हर व्यक्ति का सम्मान करना चाहिए, चाहे वह किसी भी पंथ का हो।

3. (क) कमरे
 (ख) फुट
 (ग) कारखाने
 (घ) आँखों
 (ङ) लड़कों

4. (क) प्रश्नवाचक
 (ख) विधानसूचक
 (ग) निषेधवाचक
 (घ) विधानसूचक
 (ङ) निषेधवाचक
 (च) प्रश्नवाचक
 (छ) विधानसूचक।

पाठ–6 : कितनी ज़मीन

मौखिक प्रश्न

(क) छोटी बहन का विवाह देहात में किसान के घर हुआ था।

(ख) सौदागर ने दीना को बताया कि दरिया किनारे कोलों की बस्ती है।

(ग) दीना ने कोलों के सरदार को उपहार में एक बढ़िया लबादा और चाय का बड़ा डिब्बा तथा अन्य चीजें भेंट की।

(घ) दीना सोचने लगा कि अब सूरज छिपने से पहले मैं वहाँ कैसे पहुँचूँगा।

(ङ) कोल लोग दया और व्यंग्य से इसलिये हँसने लगे क्योंकि दीना मर चुका था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1.(ख) सौदागर, 2. (ग) दीना, 3. (ख) कोलों की

लिखित प्रश्न

(क) यात्रा शुरू करने से पहले दीना ने सोचा यहाँ की जमीन, घर-बार बेच-बाचकर नकदी बनाकर वहीं क्यों न पहुँच जाऊँ और नये सिरे से जीवन शुरू करके देखूँ। उसने अपनी तैयारी शुरू की, बीबी से कहा कि घर की देख-भाल करना और खुद नौकर को लेकर यात्रा के लिए निकल पड़ा।

(ख) जमीन का कागज पक्का करने के लिए दीना ने सरदार से कहा '' सुना है, यहाँ एक सौदागर आया था। उसको भी आपने जमीन दी थी और उस जमीन का कागज पक्का कर दिया था। वैसे ही मैं चाहता हूँ कि कागज पक्का हो जाए।''

(ग) दीना को रातभर इसलिये नींद नहीं आयी क्योंकि वह जमीन के बारे में सोच रहा था।

(घ) तकलीफ घड़ी-दो घड़ी की है, आराम जिंदगी भर का हो जाएगा– दीना ने ऐसा इसलिये कहा कि जमीन सारी मुझे मिल जाएगी तो सारी जिंदगी कुछ नहीं करना पड़ेगा।

(ङ) सरदार पेट पकड़कर इसलिये हँस रहा था क्योंकि दीना की टाँगों ने जवाब दे दिया था। वह मुँह के बल आगे को गिरा और उसके हाथ टोपी तक जा पहुँचे।

(च) दीना दरिया किनारे बसने की बात इसलिये सोचने लगा था क्योंकि वहाँ जमीन बहुत उम्दा है उसने सोचा कि मैं यहाँ तंग सँकरी-सी जगह में पड़ा क्या कर रहा हूँ। जबकि दूसरी जगह मौका खुला पड़ा है। यहाँ की जमीन, घर-बार बेच-बाचकर नकदी बनाकर वहीं क्यों न पहुँचू और नये सिरे से जीवन शुरू करके देखूँ।

(छ) लालच के कारण दीना अपनी जान गँवा बैठा। दीना को जमीन के अलावा कुछ दिखाई नहीं दिया। उसने अपनी जान खो दी। मनुष्य को लालच नहीं करना चाहिए। मनुष्य कितना भी कमा ले उसका पेट कभी नहीं भरता।

(ज) इस कहानी की सबसे मार्मिक बात यह है कि मनुष्य जीवनभर अपनी इच्छापूर्ति हेतु सभी कुछ हासिल करने में लगा रहता है परन्तु अंत में वह इस दुनिया से खाली हाथ ही जाता है।

(झ) स्वयं कीजिए।

2. (क) बड़ी बहन का विवाह एक सौदागर से हुआ।

(ख) ''देखो, कैसे आराम से हम रहते हैं। फैंसी कपड़े और ठाठ के सामान! स्वाद-स्वाद की खाने-पीने की चीजें और फिर तमाशे-थियेटर, बाग-बगीचे।

(ग) क्योंकि छोटी बहन को बड़ी बहन की बात लग गई थी।

भाषा और व्याकरण

(क) बड़ी बहन ने कहा— हमारे शहर में खाने-पीने की चीजें मिलती हैं।

(ख) शहर के तमाशे-थियेटर, बाग-बगीचे देखने लायक होते हैं।

(ग) दीना के मन में अधिक जमीन खरीदने की चाह जागी।

(घ) दरिया के पास जमीन-ही-जमीन थी।

(ङ) दीना ने पूछा, ''कीमत की दर क्या होगी ?''

(च) दीना ने कहा— सवेरा हो गया है।

(छ) अरे! इतनी ही जमीन क्या थोड़ी है?

पाठ-7 : कश्मीर से केरल

मौखिक प्रश्न

(क) जम्मू से श्रीनगर जाते हुए लेखक के मन में एक तरफ ऊँचे पहाड़ों से भरी पत्थरों को लुढ़ककर गिरने की संभावना दूसरी तरफ जरा-सा फिसलने पर पाताल में बहती चिनाब की धारा में गिर जाने का भय था।

(ख) काजीगुंड से श्रीनगर की यात्रा समतल थी।

(ग) श्रीनगर पहुँचने पर लेखक की पहली मानसिक प्रतिक्रिया भगवान को धन्यवाद देने की थी।

(घ) पहले शिकारे के मल्लाह ने उन्हें घुमाने से इसलिये मना कर दिया क्योंकि उसे नमाज पढ़ने जाना था।

(ङ) पाठ के अंतिम अनुच्छेद में लेखक ने कश्मीर की इन विशेषताओं का वर्णन किया है। कश्मीर की मिट्टी में ही प्यार-मुहब्बत की महक है। वहाँ की

प्रकृति ने जिस प्रकार मिठास और मोहक रंग सेब और केसर में भर दिए हैं, उसी प्रकार की मिठास और रंग यहाँ के किशोर और किशोरियों को भी दिल खोलकर प्रदान किए हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1.(ख) मंगलोर की बनी बीड़ियाँ देखकर, 2. (ख) केरल में, 3. (क) जवाहर सुरंग को

लिखित प्रश्न

1. (क) लेखक ने अपनी यात्रा कश्मीर से प्रारंभ की।

(ख) श्री शंकराचार्य पहाड़ी श्रीनगर का सबसे ऊँचा स्थान है।

(ग) कोचीन झील सबसे बड़ी है।

(घ) यात्रा साहित्य में कश्मीर का वर्णन पढ़ते-पढ़ते लेखक के मन में कश्मीर देखने की इच्छा हुई।

(ङ) कश्मीर के इतिहास से सम्राट ललितादित्य का नाम इसलिये उल्लेखनीय है क्योंकि वे स्वयं साहित्यकार और कला प्रेमी थे।

(च) जवाहर सुरंग को पार करते हुए लेखक को ऐसा लगा कि इस पथ को पार करते हुए पुलकित हुए बिना नहीं रह सकता। इंजीनियरों की अद्‌भुत प्रतिभा, अदम्य साहस और कार्य शक्ति ने इस दुर्गम पर्वत में विशाल सुरंग पथ बनाकर कश्मीर और शेष भारत का पथ पूरे वर्ष भर चलने लायक बना दिया।

(छ) श्री शंकराचार्य पहाड़ी श्रीनगर का सबसे ऊँचा स्थान है। यह मठ बहुत पुराना और जनश्रुति के अनुसार यहाँ का मंदिर पांडव वंश के राजाओं का बनाया हुआ है। यहाँ शिवाजी और शंकराचार्य की मूर्तियाँ हैं और मंदिर तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। पहले सड़क से पैदल ही मंदिर तक पहुँच सकते थे। अब मोटर से भी जाया जाता है।

(ज) डल झील को देखकर लेखक के मन में विचार आया की डल झील कश्मीर की जान है। शायर इसकी तारीफ करते नहीं अघाते, छायाकार इसकी रंगीन छवियों को भिन्न-भिन्न कोणों से अब भी उतारते रहते हैं। प्रथम दृष्टि से मेरा मन कहने लगा की चीन की विशाल झील के सामने यह कुछ भी नहीं है। पर पहाड़, बरफ, झील की नौका यात्रा, हाउस बोट आदि अनेक प्रकार के आनंद एक साथ ही एक जगह मिलते हैं, तो कश्मीर में डल झील उसका मुख्य केंद्र हैं।

2. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. (क) ईश्वर की इच्छा
   (ख) इतिहास की लम्बी परंपरा, ललितादित्य का नाम
   (ग) कितने ही मामूली लोग, पर्वतीय प्रदेश, कृषक जीवन
   (घ) स्थानीय भूगोल की जानकारी
   (ङ) मल्लाह यूसुफ किशोर

2. व्यक्तिवाचक संज्ञा – कोचीन, श्रीनगर, जम्मू
   जातिवाचक संज्ञा – रेल, बस, चालक
   भाववाचक संज्ञा – जोशीला, शीतलता, घबराया, सकपकाया।

पाठ–8 : सुभागी

मौखिक प्रश्न

(क) सुभागी पर एक दिन बड़ी विपदा आ गई। वह छोटी उम्र में ही विधवा हो गई।

(ख) गाँव के लोग सुभागी के बारे में वाहवाही कर रहे थे।

(ग) तुलसी महतो के घर का बँटवारा सुभागी के कारण हुआ।

(घ) सुभागी अपने पिता की तेरहवीं धूमधाम से इसलिये करना चाहती थी क्योंकि वह भाई को दिखाना चाहती थी कि अबला क्या कर सकती है। वह समझते होंगे, इन दोनों के किए कुछ न होगा। उनका घमंड तोड़ दूँगी।

(ङ) आज उसके जीवन का कठोर व्रत पूरा हो गया। इसका यहाँ सजन से सुभागी ने जो तीन हजार रुपये लिये थे वह उसने चुका दिये थे मतलब है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1.(ख) दो, 2. (क) लक्ष्मी, 3. (ख) सजन सिंह ने, 4. (ग) तीन साल।

लिखित प्रश्न

(क) हरिहर ने सुभागी को समझाया कि बेटी हम तेरे ही भले के लिए कह रहे

हैं। माँ–बाप अब बूढे हो गए हैं, उनका क्या भरोसा। तुम इस तरह कब तक बैठी रहोगी।

(ख) सुभागी ने भैंस अपने बूढ़े माता–पिता को दूध पिलाने के लिए खरीदी।

(ग) माँ के देहांत के बाद सुभागी के जीवन का एक लक्ष्य रह गया था सजन सिंह के रुपये चुकाना।

(घ) रामू को यह बात बुरी लगती कि अम्मा और दादा को तिनका तक नहीं उठाने देती और मुझे पीसना चाहती है।

(ङ) सुभागी ने अपने माँ–बाप का क्रिया कर्म सजन सिंह से कर्ज लेकर किया। तीन हजार रुपये पिता के क्रिया कर्म में लगे थे। लगभग दो हजार रुपये माता के क्रिया कर्म में लगे। पाँच हजार रुपये का ऋण था।

(च) कर्ज चुकाना हो जाने के बाद सजन सिंह ने सुभागी के सामने अपने बेटे से शादी के लिये प्रस्ताव रखा।

(छ) पुत्र को रत्न समझा था पुत्री को पूर्व जन्म का दंड। वह रत्न कितना कठोर निकला और यह दंड कितना मंगलमय। यह कथन तुलसी ने कहा और यह इसलिये कहा क्योंकि पुत्री ने मेरा साथ दिया और पुत्र कपूत निकला।

भाषा और व्याकरण

1. (क) संज्ञा — तुलसी महतो, सुभागी, रामू

   (ख) सर्वनाम — अपनी, वह, उसका, जो

   (ग) विशेषण — छोटी उम्र, चतुर, निपुण, बड़ा, कामचोर, आवारा।

2. (क) जब आपकी बात कोई न सुन रहा हो तब सुनाने से फायदा ही क्या।

   (ख) जब वर्षा हो रही हो, तो रुक जाना चाहिए।

   (ग) जब लोग प्रार्थना न सुन रहे हो तो, प्रार्थना करने से क्या फायदा।

   (घ) जब स्कूल में पढाई न हो रही हो तो स्कूल जाने से क्या फायदा।

   (ङ) जब हम मित्र न बन सकें तो दोस्ती करने से क्या फायदा।

3. (क) जीवन पहाड़–सा कटना (बहुत मुसीबत आ जाना)— राहुल के पिता के देहान्त के पश्चात उसकी माँ का जीवन राहुल को पहाड़ा–सा कटता हुआ प्रतीत होता है।

   (ख) दाँतों तले उँगली दबाना (आश्चर्य में पड़ जाना)— परीक्षा में मेहनत

करने के बाद भी परिणाम देखकर राखी ने दाँतों तले उँगली दबा ली क्योंकि उसका परिणाम अच्छा नहीं था।

(ग) आँखें खुलना (सचेत होना) ठोकर खाने के बाद ही बहुत से लोगों की आँखें खुलती हैं।

पाठ–9 : युगावतार गाँधी

मौखिक प्रश्न

(क) यह कविता युगावतार गाँधी जी के विषय में लिखी गई है।

(ख) देश के करोड़ों लोग गाँधी जी का अनुसरण करते थे।

(ग) गाँधी जी ने उन पर पद प्रहार किया है जो लोग दिखावा करते हैं।

(घ) कवि ने गाँधी जी को दिग्विजयी इसलिये कहा क्योंकि उन्होंने भारत को आजादी दिलायी और आगे बढ़ते रहे।

(ङ) अधमरे लोगों को जीवन–दान सेना के लोगों ने दिया।

(च) गाँधी जी की सेना ने गृह–प्रयाण किया।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) महात्मा गाँधी, 2. (ग) महात्मा गाँधी, 3. (ग) महात्मा गाँधी, 4. (ग) सभी देशवासी, 5. (ग) दोनों (क) व (ख)।

लिखित प्रश्न

1. (क) युग–कर्म से आशय युग का करणीय कर्म और युगधर्म से आशय युग के अनुसार आचरण से है।

(ख) गाँधी जी उन लोगों को धरा–ध्वस्त किया है जो लोग दिखावा करते हैं।

(ग) रामराज गढने से कवि का तात्पर्य उन लोगों से है जो सभी दिशाओं को जीतने वाला है, वह रामराज को बनाता है।

(घ) जो लोग पिस रहे हैं, जल रहे हैं, गाँधी जी ने उन्हें अभय दान दिया।

(ड़) गाँधी जी के स्वर को कवि ने मोक्ष–मंत्र इसलिये कहा है क्योंकि वह अंहिसावादी बातें करते थे।

(च) भारत की जनता ने गाँधी जी का साथ उनका समर्थन करके दिया।

(छ) 'मानवता के पावन मंदिर का निर्माण' से कवि धर्मांडबर के भाव को स्पष्ट करना चाहते है।

(ज) दिग्विजयी राजा की विशेषताएँ होती हैं कि वह दिग्विजयी बनकर रामराज गढ़ते हुए चलता है।

(झ) मातृभूमि के लिए 'ताज' का निर्माण गाँधी जी की सेना ने अपनी आत्माहुति देकर किया।

(ञ) अस्त्र-शस्त्र के बिना युद्ध में विजय अंहिसा आन्दोलन द्वारा मिली।

2. (क) करोड़ों कदम उस दिशा की ओर चल पड़े जिस ओर गाँधी जी के पड़े थे।

(ख) करोड़ों की दृष्टि जिस ओर पड़ी गाँधी जी की ओर उठी।

(ग) गाँधी जी के सिर झुकाने से तात्पर्य करोड़ों की रक्षा करने से है।

भाषा और व्याकरण

1. ङ — बङ्गाल गङ्गा

ड — डमरू डाल

ड़ — सड़क घोड़ा

2. (क) धर्माडंबर — ध् + र् + म् + आ + ड् + अं + ब् + र्

(ख) युगावतार — य् + उ + ग् + आ + व् + अ + त् + आ + र् + अ

(ग) आत्माहुति — आ + त् + अ + म् + आ + ह् + उ + त् + इ

(घ) अधमरे — अ् + ध् + अ + म् + अ + र् + ए

(ड़) मानवता — म् + आ + न् + अ + व् + अ + त् + आ

(च) खंडहर — ख् + अं + ड् + अ + ह् + अ + र् + अ

3. (क) मूरत से विश्वास हिल गया।

(ख) उसे बालक से प्रेम हो गया।

(ग) परमेश्वर की इच्छा को हम नहीं जान सकते।

(घ) मूरत अपने काम-धंधे में लग गया।

(ड़) मूरत का मित्र तीर्थयात्रा से लौट आया।

(च) कृष्ण भगवान की इच्छा ही ऐसी है।

(छ) प्राणीमात्र पर दया करना ही परमात्मा से दर्शन करना है।

(ज) बर्फ हटाने को कोई कुली आया।

(झ) अरे! तुम अभी तक यहीं हो।

4. (क) सन्यासी — संन्यासी (ख) चाद — चाँद

(ग) प्रात — प्रात: (घ) सतरा — संतरा

(ङ) अगारे — अंगारे (च) उदयान — उद्यान

(छ) विदया — विद्या (ज) आसू — आँसू

(झ) नम — नम: (ञ) लगूर — लंगूर

(ट) भाति — भाँति (ठ) अतंस्थ — अंतस्थ

5. (क) अपना — पराया (ख) निडर — साहसी

(ग) सृजन — विखण्डन (घ) वरदान — अभिशाप

(ङ) स्वतंत्र — परितंत्र (च) रक्षक — भक्षक

(छ)पवित्र — अपवित्र (ज) स्तुति — निंदा

पाठ-10 : नीलकंठ

मौखिक प्रश्न

(क) लेखिका ने मोर के बच्चों को तीस रुपये में खरीदा क्योंकि वह उन्हें पालना चाहती थी।

(ख) नीलाभ ग्रीवा के कारण मोर का नाम रखा गया 'नीलकंठ' और उसकी छाया के समान रहने के कारण मोरनी का नामकरण हुआ 'राधा'।

(ग) लेखिका ने मोर-मोरनी के बच्चों को एक कमरे में लाकर खोला पिंजरे में रखा, फिर दो कटोरी में सत्तू की छोटी-छोटी गोलियाँ और पानी रखा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) चिड़ियावाले, 2. (क) तूफान मेल, 3. (ग) चिड़ियाखाने, 4. (ग) नीलकंठ, 5. (घ) कूदने लगता 6. (ख) कुब्जा।

लिखित प्रश्न

(क) लेखिका बड़े मियाँ चिड़ियावाले की दुकान पर इसलिये रुकी क्योंकि वह मोर मोरनी के बच्चे खरीदना चाहती थी।

(ख) कुब्जा एक मोरनी थी।

(ग) नीलकंठ और राधा को वर्षा ऋतु सबसे प्रिय थी।

(घ) नवागंतुकों ने पहले से रहने वालों में वैसा ही कौतूहल जगाया जैसा नववधु

के आगमन पर परिवार में स्वाभाविक है। लक्का कबूतर नाचना छोड़कर दौड़ पड़े और उनके चारों ओर घूम-घूमकर गुटर गूँ-गटरगूँ अलपाने लगे। बड़े खरगोश सभ्य सभासदों के समान क्रम से बैठकर गंभीर भाव से उनका निरीक्षण करने लगे।

(ड़) मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊँची तथा चमकीली हो गई। चोंचें अधिक बंकिम और पैनी हो गईं, गोल आँखों में इंद्रनील की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लंबी नील-हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूपछाँही तरंगें उठने-गिरने लगीं। दक्षिण-वाम दोनों पंखों में सलेटी और सफेदी आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूँछ लंबी हुई और उनके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंग-रहित पैरों को गर्वीली गति ने एक नई गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गरदन ऊँची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीची कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौंदर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है। गति का चित्र नहीं आँका जा सकता।

(च) नीलकंठ ने अपने आपको चिड़ियाघर के निवासी जीव-जंतुओं का सेनापति और संरक्षक नियुक्त कर लिया क्योंकि वह सवेरे होते ही सब खरगोश, कबूतर आदि की सेना एकत्र कर उस ओर ले जाता जहाँ दान दिया जाता है और घूम-घूमकर मानो सबकी रखवाली करता रहता। किसी ने कुछ गड़बड़ की और वह अपने तीखे चंचु-पहार से उसे दंड देने दौड़ पड़ता।

(छ) कुब्जा का व्यवहार सबसे अलग इसलिये था क्योंकि उसके आने से पहले नीलकंठ और राधा साथ रहते थे। अब कुब्जा उन्हें साथ देखते ही मारने दौड़ती। चोंच से मार-मारकर उसने राधा की कलगी नोच डाली, पंख नोच डाले। कठिनाई यह थी कि नीलकंठ उससे दूर भागता था और वह उसके साथ रहना चाहती थी। न किसी जीव-जंतु से उसकी मित्रता थी, न वह किसी को नीलकंठ के समीप आने देना चाहती थी।

(ज) (i) नीलकंठ में उसकी जातिगत विशेषताएँ तो थीं ही, उनका मानवीकरण भी सिद्ध हो गया था। क्योंकि उसने खरगोश को साँप से बचाया था।

(ii) जब लेखिका मोर और मोरनी को लेकर घर पहुँची तब घर पहुँचते ही सब कहने लगे— "तीतर हैं, मोर कहकर ठग लिया है।" इसलिए अनेक बार ठगे जाने के कारण ही ठगे जाने की बात मेरे चिढ़ जाने की दुर्बलता बन गई है।

(iii) बड़े मियाँ के भाषण की तूफानमेल के लिए कोई निश्चित स्टेशन नहीं है। सुननेवाला शककर जहाँ रोक दे वहीं स्टेशन मान लिया जाता है।

भाषा और व्याकरण

1. (क) पढ़ाई - पढ़+आई
   (ख) बचपन - बच+पन
   (ग) चंचलता - चंचल+ता
   (घ) ध्यानपूर्वक - ध्यान+पूर्वक
   (ङ) घबराहट - घबरा+हट
   (च) चमत्कारिक - चमत्+कारिक
2. (क) ताली एक हाथ से नहीं बजती है।
   (ख) पाँच-सात मिनट रुको, फिर चलते हैं।
   (ग) तुम सब मेरी बात सुनोगे।
   (घ) वह अगले वर्ष जापान जाएगा।
   (ङ) प्रत्यक्ष, अतिथि
   (च) कान तथा संख्या '100' का सूचक
   (छ) मेघ + आच्छन्न, मंडल + आकार
3. (क) त्रिनेत्र — तीन नेत्रों वाला
   (ख) पंकज — जो कीचड़ में उगता है।
   (ग) गिरिधर — गिरि को धारण करने वाला
   (घ) गजानन — गज के समान आनन
   (ङ) धर्मात्मा — धर्म से युक्त है, जो आत्मा
   (च) पवनपुत्र — पवन का पुत्र
   (छ) महावीर — महान वीर
   (ज) चक्रपाणि — चक्र को धारण करने वाला
   (झ) लौहपुरूष — लौह के समान पुरुष

पाठ–11 : पर्यावरण में बढ़ता प्रदूषण

मौखिक प्रश्न

(क) यहाँ घास खाने वाले जानवर पर्याप्त संख्या में थे और इन जानवरों की संख्या अधिक न हो जाए, इसलिए हिंस्र जंतु भी थे। इस प्रकार प्रकृति में वनस्पति, जीव–जंतु आदि का अनुपात संतुलित और नियंत्रित बना रहता था। इससे पर्यावरण स्वच्छ और जीवन के अनुकूल बना रहता था।

(ख) 'जनसंख्या का भी विस्फोट हुआ है' लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि आज मनुष्य ने प्रकृकि का संतुलन बिगाड़ दिया है। आधुनिक युग में वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण बड़े पैमाने पर उद्योग–धंधे पनपे हैं।

(ग) मनुष्य को जंगल काटने की आवश्यकता पड़ी है खेती करने के लिए, घर बनाने के लिए, कल–कारखाने लगाने के लिए, सड़कें और रेल की पटरियाँ बिछाने के लिए।

(घ) उर्वरकों और कीटनाशी दवाइयों के कारण मिट्टी प्रदूषित होती जा रही है।

(ङ) रॉकेट के द्वारा अनेक प्रकार के अंतरिक्ष यान अंतरिक्ष में छोड़े जा रहे हैं। इनसे हमारी पृथ्वी का ओजोन मंडल प्रभावित हो रहा है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) यह सूरज की पराबैंगनी किरणों से जीव–जंतुओं और वनस्पतियों की रक्षा करती है।
2. (ख) हवा और गंदगी के कारण
3. (क) पर्यावरण में प्रदूषण बढ़ गया है।

लिखित प्रश्न

1. (क) भूमि प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण।

   (ख) तेज गति के वाहनों के निम्नलिखित लाभ हैं—इससे यातायात में बड़ी सुविधा हुई है। दुनिया छोटी ही गई है और लोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक शीघ्रता और सुगमता से आने–जाने लगे हैं।

   (ग) पीपल, बरगद, आम, नीम, जामुन, आँवला जैसे उपयोगी वृक्षों के रोपण को महान धार्मिक कृत्य माना गया है।

(घ) पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि प्रदूषक कार्यों को रोका जाए। सरकारी स्तर पर इस दिशा में अनेक कदम उठाए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में हम स्वयं भी सहयोग दे सकते हैं। हम गंदगी न फैलाएँ और दूसरा यह कि जहाँ गंदगी हो, उसे साफ करने में सहयोग दें। अपने घर, पास-पड़ोस और विद्यालय के परिवेश को साफ-सुथरा रखें। जहाँ-तहाँ कूड़ा-कचरा आदि न फेंकें। वृक्षों की टहनियों को न तोड़ें। साथ ही अधिक से अधिक वृक्ष लगाएँ। इससे वृक्ष की संख्या भी बढ़ेगी और वन महोत्सव के उद्देश्य भी पूरे होंगे-एक पंथ कई काज।

(ङ) यदि प्रदूषण इसी प्रकार बढ़ता रहा, तो प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा।

(च) बड़े-बड़े नगरों में मल-निकासी के लिए बड़ी-बड़ी नालियाँ निकाली गईं, जो अंततः नदियों में ही गिरीं। कारखानों से लगातार निकलता हुआ कचरा भी अंत में नदियों या जलाशयों में ही गिरता है। इस कारण नदियों और जलाशयों का जल प्रदूषित होता जा रहा है।

(छ) साँस की अधिकतर बीमारियाँ हवा और गंदगी के कारण होती हैं और पेट की बीमारियाँ गंदे जल के कारण। जीवन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए साँस लेने योग्य वायु और पीने योग्य पानी दोनों ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। कल-कारखाने और तेज चलने वाले वाहन भी भीषण शोर करते हैं। उन्हें भी नियंत्रित करने की आवश्यकता है क्योंकि इनके बीच रहने से मानसिक तनाव बढ़ता है, हृदय की धड़कने तेज हो जाती हैं।

(ज) अधिक शोर के कारण मानसिक तनाव बढ़ता है, हृदय की धड़कने तेज हो जाती हैं।

(झ) वृक्षों की संख्या बढ़ाने के लिए हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने जन्म दिन पर अथवा अन्य किसी शुभ अवसर पर वृक्ष जरूर लगाएँगे।

2. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. (क) पौधों को कीटाणु हानि न पहुँचाए, इसलिए कीटनाशी दवाइयों की आवश्यकता है।

(ख) सभी जीव-जंतु और पेड़-पौधों को शुद्ध पानी की आवश्यकता है।

(ग) अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विविध प्रकार की सामग्री की आवश्यकता है।

(घ) आबादी को खिलाने के लिए अन्न, सब्जी, फल आदि की आवश्यकता है।

2. (क) प्रकृति का संतुलन (ख) उद्योग और धंधे (ग) बुरा प्रभाव (घ) जीव और जंतु (ङ) कम वर्षा

3. (क) परि + आवरण (ख) वात + आवरण (ग) महा + उत्सव

(घ) दुष + प्रभाव (ङ) जीवन + आधार

पाठ-12 : सत्य की शक्ति

मौखिक प्रश्न

(क) राजा हरिश्चंद्र को लोग आज भी इसलिये याद करते हैं क्योंकि वह सत्यवादी थे।

(ख) थोड़े-से लोग माल हाथ में रोककर उनके दामों को बड़ा कर बेच देते हैं, इसी को ही चोर बाजारी कहते हैं।

(ग) जिसके बल पर गाँधी जी ने ब्रिटिश राज को हिला दिया था वह शक्ति, सत्य और प्रेम था।

(घ) उनकी वाणी और आचारण में कोई अंतर न था। जो कहते थे करके दिखाते थे। सत्य को मानने से कभी घबराते नहीं थे। इसलिए लाखों नर-नारी उनके पीछे चलते थे।

(ङ) गाँधी जी हमसे पुकार-पुकारकर कह रहे हैं कि सत्य और अहिंसा के आदर्श पर चलो। आपस मे प्रेम करो। सत्य कितना ही अप्रिय क्यों न हो, उसे ग्रहण करो।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) उसे समाज के द्वारा सताया गया।
2. (ग) वे दूसरों को अपने से आगे बढ़ता नहीं देख सकते।

लिखित प्रश्न

1. (क) इस पाठ में राजा हरिश्चंद्र, ईसा और गाँधी के नाम आए हैं।

(ख) ईसा ने अपना बलिदान लगभग 2000 वर्ष पहले दिया था।

(ग) बचपन से ही हमें सिखाया जाता है कि हमें झूठ नहीं बोलना चाहिए। हमें हमेशा सत्य बोलना चाहिये।

(घ) जो सत्य के आदर्श को मानता है वह सदा सत्य की खोज करता रहेगा और सत्य चाहे कितना ही कड़वा क्यों न हो, चाहे उसके पुराने विचारों और विश्वासों को उससे कितनी ही चोट पहुँचे, वह साहस के साथ और स्थिर स्वार्थों की परवाह न करके सत्य को ही ग्रहण करेगा।

(ङ) उपनिषदों में कहा गया है कि सत्य की जीत होती है, झूठ की नहीं।

(च) यूरोप का इतिहास इसकी सत्यता को सिद्ध करता है। प्रचलित विश्वास का जिसने भी विरोध किया, वहीं सताया गया। किसी को आग में जला दिया गया, किसी को सूली पर चढ़ा दिया।

(छ) विज्ञान अपना काम सफलता में इसलिये नहीं कर सका क्योंकि विज्ञान द्वारा मनुष्य ने प्रकृति पर विजय पाई है। विज्ञान द्वारा हम अपनी दरिद्रता को दूर कर सकते हैं और अपने जीवन को सुखी बना सकते हैं। लेकिन विज्ञान को विजय सुगमता से नहीं मिली है। एक लम्बे अरसे तक उसे स्वार्थों से लड़ना पड़ा है।

(ज) सारा संसार इस भट्टी में जल रहा है। राष्ट्रों के गुट बन रहे हैं। सभ्यता को बरबाद करने वाले अस्त्र तैयार हो रहे हैं। लेकिन निराशा आशा की एक क्षीण रेखा है। गीता में कहा गया है कि थोड़ा भी धर्म हमें बहुत बड़े भय से बचाता है। थोड़े से लोग सत्य के लिए आत्म बलिदान करते हैं और तब तक यह है, हमको निराश होने का कोई कारण नहीं है। मनुष्य गिर–गिरकर उठता है। यही उसका बड़प्पन है।

(झ) ईसा को सूली पर चढ़ाकर उनके दुश्मनों ने सोचा था कि ईसा का संदेश जगत से उठ जाएगा, पर सत्य अत्यचार से और प्रचलित होता है। ईसा को शहीद हुए लगभग दो हजार वर्ष हो गए, लेकिन आज भी ईसा का पैगाम हमारे दिल पर असर करता है और उसके मानने वालों की संख्या में कमी नहीं है।

2. गीता में कहा गया है कि कम किया गया धर्म का कार्य भी हमें बहुत बड़े डर से बचाता है जो लोग सत्य के पुजारी होते हैं वह सत्य की खातिर अपने आपको बलिदान कर देते हैं। जब तक हमारे देश में ऐसे सत्यवादी हैं हमारे देश का कुछ बुरा नहीं होगा। मनुष्य को ठोकर लगने के बाद ही समझ आता है। यह मानव का बड़प्पन है कि वह सभी को एक समान समझें।

भाषा और व्याकरण

1. संज्ञा शब्द – देश, उपनिषदों, लोगों, राजा हरिश्चंद्र
   सर्वनाम शब्द – आप, हमारे, जिन, उनकी, हम, किसको, उन्होंने
   विशेषण शब्द – सत्य, महिमा, जीत, झूठ
   क्रिया शब्द – कहा, कष्ट उठाया, पूजा करना

2. (क) संसार – सांसारिक (ख) प्रकृति – प्राकृतिक (ग) पूजा – पूजन
   (घ) विजय – विजयी (ङ) इतिहास–इतिहासकार (च) स्वार्थ – स्वार्थी
   (छ) प्रकाश – प्रकाशित (ज) धर्म – धार्मिक (झ) विकास – विकसित

3. (क) जन – परिजन (ख) वार – परिवार (ग) स्थिति – परिस्थित
   (घ) श्रम – परिश्रम (ङ) धान – परिधान (च) चालक–परिचालक।

पाठ–13 : झाँसी की रानी

मौखिक प्रश्न

(क) कविता में बुंदेले और 'हर बोलों' शब्द का प्रयोग हर पद्यांश में हुआ है क्योंकि बुंदेलखंड के लोगों ने यह कथा सभी को सुनायी है।

(ख) कवयित्री ने लक्ष्मीबाई के लिए 'मर्दानी' विशेषण का प्रयोग इसलिये किया गया है क्योंकि वह मर्दों की तरह लड़ी थी।

(ग) हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में इस पक्ति में 'वीरता' और वैभव से कवयित्री का तात्पर्य यह है की रानी झाँसी ने साहस के ऐश्वर्य के साथ सभी तरह के अस्त्र-शस्त्र चलाने सीख लिये थे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) छबीली, 2. (क) शिवाजी की, 3. (घ) इनमें से कोई नहीं, 4. (क) बुंदेलखंड के लोग, 5. (क) तलवार से, 6. (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं, 7. (ख) तेईस वर्ष।

लिखित प्रश्न

(क) लक्ष्मीबाई की तलवार सत्तावन सन में चमकी उठी थी।

(ख) लक्ष्मीबाई के बचपन के मित्र बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी थे।

(ग) झाँसी के राजा की मृत्यु हो जाने पर डलहौजी इसलिये प्रसन्न हुआ क्योंकि वह उनका राज्य हड़पना चाहता था और यह उनके लिए अच्छा अवसर था।

(घ) ह्यूरोज के वार से लक्ष्मीबाई घायल हो गई थी।

(ङ) रानी लक्ष्मीबाई और लेफ्टीनेंट वाकर का युद्ध झाँसी में हुआ। दोनों में जमकर युद्ध हुआ। रानी तलवार चलाती गयी। वॉकर जख्मी होकर वहाँ से भाग गया उसे अजब हैरानी थी।

(च) रानी लक्ष्मीबाई ने जी-जान से अंग्रेजी सेना का मुकाबला किया पर घायल होकर ग्वालियर के पास कोटा की सराय में ब्रिटिश सेना से लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हो गयीं।

(छ) लक्ष्मीबाई के जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें भी उनकी तरह वीर बनना चाहिये। जो कार्य उन्होंने अपने दम पर किये हैं वे सभी कार्य हमें भी करने चाहिए। देश के लिए उन्होंने अपने आपको बलिदान कर दिया।

(ज) (1) तलवार चलाने में निपुण
(2) साहसी
(3) मर्दानी
(4) निडर
(5) स्वतंत्र नारी।

भाषा और व्याकरण

1. (क) बहन — संगिनी
(ख) पिता — भर्ता
(ग) नया — नयन
2. (क) गुलामी — आज़ादी
(ख) नरक — स्वर्ग
(ग) कायरता — वीरता
4. (क) कालवाचक क्रि० वि०
(ख) रीतिवाचक क्रि० वि०
(ग) स्थानवाचक क्रि० वि०

पाठ-14 : मैं और मेरा देश

मौखिक प्रश्न

(क) भूकंप मस्तिष्क में आया था।

(ख) कि जीवन एक युद्ध है और युद्ध में लड़ना ही तो कोई एक काम नहीं होता है लड़ने वालो को रसद न पहुँचे, तो वे कैसे लड़ें? किसान

ठीक खेती न उपजाएँ, तो रसद पहुँचाने वाले क्या करें और लो, जाने दो बड़ी-बड़ी बातें, युद्ध में जय बोलने वालों का भी महत्त्व है।

(ग) युवक शिक्षा प्राप्त करने के लिए जापान देश में गया था।

(घ) पाठ के अनुसार तुर्की के राष्ट्रपति कमालपाशा थे।

(ङ) प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के लिए किसान एक रंगीन सुतलियों से बुनी हुई एक खाट उपहार में लाया था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) जापान
2. (ख) पाव-भर शहद
3. (ग) दूसरे देशों को श्रेष्ठ और अपने देश को हीन सिद्ध करते हुए

लिखित प्रश्न

1. (क) मैं सोचा करता था कि मेरी मनुष्यता में अब कोई अपूर्णता नहीं रही, मुझे अब कुछ न चाहिए, जो चाहिए, वह सब मेरे पास है-मेरा घर, मेरा पड़ोस, मेरा नगर और मैं। वहा! कैसी सुंदर, कैसी संगठित और कैसी पूर्ण है मेरी स्थिति।

(ख) एक दिन आनंद की इस दीवार में एक दरार पड़ गई और तब मुझे सोचना पड़ा कि अपने घर, अपने पड़ोस, अपने नगर की सीमाओं में ममता, सहारा, ज्ञान और आनंद के उपहार पाकर भी मेरी स्थिति एकदम हीन है और हीन भी इतनी कि मेरा कहीं भी कोई अपमान कर सकता है- एक मामूली अपराधी की तरह और मुझे यह भी अधिकार नहीं कि मैं उस अपमान का बदला लेना तो दूर रहा, उसके लिए कहीं अपील या दया-प्रार्थना ही कर सकूँ।

(ग) 'मानस में भूकंप उठा' से लेखक का यह अभिप्राय है कि एक तेजस्वी पुरुष का अनुभव ही वह भूकंप था, जिसने मुझे हिला दिया।

(घ) दर्शकों की तालियों से खिलाड़ियों के पैरों में बिजली लग जाती है और गिरते खिलाड़ी उभर जाते हैं।

(ङ) कवि-सम्मलनों और मुशायरों की सारी सफलता दाद देने वालों पर ही निर्भर करती है।

(च) वे तेजस्वी पुरुष थे स्वर्गीय पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय। अपने महान राष्ट्र की पराधीनता के दिनों में जिन लोगों ने अपने रक्त से गौरव के

दीपक जलाए और जो घोर अंधकार और भयंकर बवंडरों के झकझोरों में जीवनभर खेल, उन दीपकों को बुझने से बचाते रहे, उन्हीं में एक थे हमारे लाला जी, उनकी कलम और वाणी दोनों में तेजस्विता की ऐसी किरणें थीं कि वे फूटतीं, तो अपने मुग्ध हो जाते और पराए भौंचक्के!

(छ) स्वामी रामतीर्थ को खाने के लिए फल की आवश्यकता थी। जापानी युवक भागा और कहीं दूर से एक टोकरी ताजे फाल लाया। वे फल उसने स्वामी रामतीर्थ को भेंट करते हुए कहा, ''लीजिए, आपको ताजे फलों की जरूरत थी।''

(ज) कमालपाशा ने हँडिया को स्वयं खोला और उसमें दो उँगलियाँ भरकर चाटने के बाद तीसरी उँगली शहद से भरकर बूढ़े के मुँह में दे दी। बूढ़ा निहाल हो गया। राष्ट्रपति ने कहा ''दादा, आज सर्वोत्तम उपहार तुमने ही मुझे भेंट किया, क्योंकि इसमें तुम्हारे हृदय का शुद्ध प्यार है।'' उन्होंने आदेश दिया कि राष्ट्रपति की शाही कार में शाही-सम्मान के साथ उनके दादा को गाँव तक पहुँचाया जाए।

(झ) क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं? अपने घर का कूड़ा बाहर फेंकते हैं? मुँह में गंदे शब्दों से गंदे भाव प्रकट करते हैं? होटलों, धर्मशालाओं में या दूसरे ऐसे ही स्थानों में, जीनों में, कोनों में पीक थूकते हैं। उत्सवों, मेलों, रेला और खेलों में ठेलमठेल करते हैं, निमंत्रित होने पर समय से लेट पहुँचते हैं या वचन देकर भी घर आनेवालों को समय पर नहीं मिलते और इसी तरह किसी भी रूप में क्या सुरूचि और सौंदर्य को आपके किसी काम से ठेस लगती है?

(ञ) जिस देश के नागरिक यह समझते हैं कि चुनाव में किसे अपना मत देना चाहिए और किसे नहीं, वह देश उच्च है और जहाँ के नागरिक गलत लागों के उत्तेजक नारों या व्यक्तियों के गलत प्रभाव में आकर मत देते हैं, वह हीन है।

2. (क) उनका अनुभव यह था— ''मैं अमेरिका गया, इंग्लैंड गया, फ्रांस गया और संसार के दूसरे देशों में भी घूमा, पर जहाँ भी गया, भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा।''

(ख) मेरा कर्त्तव्य है कि मुझे निजी रूप में सारे संसार का राज्य भी क्यों न मिलता हो, मैं कोई ऐसा काम न करूँ, जिससे मेरे देश की स्वतंत्रता को, दूसरे शब्दों में, उसके सम्मान को धक्का पहुँचे, किसी भी प्रकार से उसकी शक्ति में कमी आए।

(ग) मेरा यह अधिकार भी है कि अपने देश के सम्मान का पूरा–पूरा भाग मुझे मिले और उसकी शक्तियों से अपने सम्मान की रक्षा का मुझे, जहाँ भी मैं रहूँ, भरोसा रहे।

(घ) (i) लेखक ने।

(ii) लेखक कहता है, कि मेरा देश गुलाम है यह कलंक मेरे माथे पर लगा हुआ है जिसने मुझे मानसिक रूप से झकझोर कर रख दिया है।

भाषा और व्याकरण

1. (क) अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।
   (ख) रस्सी जल गई पर बल नहीं गया।
   (ग) हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े लिखे को फारसी क्या?
   (घ) आँख का अंधा नाम नयन सुख।
   (ङ) अँधेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा।
   (च) खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।
2. (क) कहीं सुख, कहीं दुख (ख) दोहरा लाभ (ग) ऊँट के मुँह में जीरा
3. (क) स्थानवाचक क्रिया (ख) स्थानवाचक क्रिया (ग) परिमाणवाचक क्रिया (घ) रीतिवाचक क्रिया।
4.

	मूल शब्द		**प्रत्यय**
(क)	तेजस्वी	+	ता
(ख)	मानस	+	इक
(ग)	विज्ञान	+	इक
(घ)	धन	+	पति
(ङ)	धर्म	+	शाला
(च)	मुसाफिर	+	खाना
(छ)	गड़बड़	+	ई
(ज)	समूह	+	इक

पाठ–15 : नदी का रास्ता

मौखिक प्रश्न

(क) कवि नदी से प्रश्न कर रहा है कि नदी को रास्ता किसने दिखाया?

(ख) नदी की यात्रा जंगलों और नगरों मे जाकर पूरी होती है।

(ग) भूमि नदी के रास्ते के बारे में यह दावा करती है कि नदी को मार्ग उसने ही बताया था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) कंदराओं में, 2. (क) चंचल, 3. (क) धीमी, 4. (ख) फेन की माला से, 5. (ख) परिस्थिति या परिवेश का।

लिखित प्रश्न

1. (क) नदी स्वयं को निर्भीक इसलिये कहती है क्योंकि उसने अपने-आप संघर्ष करना सीखा है।

(ख) नदी की प्रतिक्षा में सागर खड़ा था।

(ग) भूमि शिलाएँ सामने कर देती हैं।

(घ) नदी अपनी निर्भीकता कई ऊँचे प्रतापों से गिरकर, प्रत्येक बाधा-विघ्न को उत्साह से ठोकर मारती हुई निरंतर एक तट को दूसरे से दूरर्तर करती। बड़ी सम्पन्नता से और अपने दूर-दूर तक फैले साम्राज्य के अनुरूप गति को मन्द कर पहुँची जहाँ सागर खड़ा है।

(ङ) मनुष्य का जीवन नदी के समान इस प्रकार है। मनुष्य को बड़ा बनने के लिए लग्न से कार्य करना पड़ता है। अपना मार्ग खुद बनाना पड़ता है नदी की तरह।

(च) परिस्थिति क्योंकि मनुष्य परिस्थतिनुसार ही कार्य करता है।

(छ) स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. (क) सिंधु — सागर, नदी, सरिता

(ख) नदी — सरिता, तटिनी, वाहिनी

(ग) वेग — चाल, गति, प्रवाह

(घ) तट — किनारा, तीर, कगार

(ङ) कंदरा — गुफा, सुरंग, गुहा

(च) निरंतर — नित्य, सदा, सर्वदा

(छ) जंगल — वन, अरण्य, कान्तार।

2. सही विलोम शब्द लिखिए—

(क) मंद — तीव्र

(ख) भोली — चालाक

(ग) उत्साह— निरूत्साह

(घ) उत्तर — प्रश्न

(ङ) सबलता — निर्बलता

(च) दाहिना — बायाँ

(छ) गंभीरता — चंचलता

(ज) समतल — उबड़-खाबड़

3. (क) अभि — अभिमान, अभिशाप, अभिव्यक्ति

(ख) सं — संपन्नता, संगम, संचय

(ग) सु — सुख, सुंदर, सुशील

(घ) उप — उपकार, उपमान, उपर्युक्त

पाठ-16 : हमारी वन-संस्कृति

मौखिक प्रश्न

(क) जब तक हम समस्त जीवन को एक रूप में देखने की कला ही फिर से नहीं सीखेगें तब तक हममें न राष्ट्रीय आत्मविश्वास आएगा और न इस भंयकर परिस्थिति से पार उतरने की शक्ति आएगी।

(ख) अतीत में भारत की आर्थिक स्थिति अच्छी थी।

(ग) आज भारतीयों के हृदय में असंतोष इसलिए है "वृक्ष ही जल है, जल रोटी है और रोटी ही जीवन है।" यह अक्षरश: सत्य है। क्योंकि हमारे पास अन्न नहीं हैं, क्योंकि पानी संग्रह करने की पुरानी पद्धति हम सुरक्षित नहीं रख सके।

(घ) पुत्र और तरू में भी भेद है। पुत्र को हम स्वार्थ के कारण जन्म देते हैं, परन्तु तरू को हम परमार्थ के लिए उगाते हैं।

(ङ) अग्निपुराण में गृह-निर्माता से कहा गया है- घर के उत्तर में पलाश, पूर्व में वट, दक्षिण में आम और पश्चिम में अश्वत्थ के वृक्ष लगाने चाहिए। दक्षिणवर्ती सीमा पर काँटेदार झाड़ियाँ लगानी चाहिए। घर के पास फूलों के पौधे और शीशम के वृक्ष लगाए जाएँ।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) ऋषि-मुनियों के, 2. (घ) ये सभी, 3. (ख) भगवान बुद्ध को, 4. (ग) शकुंतला।

लिखित प्रश्न

1. (क) जब तक हम समस्त जीवन को एक रूप में देखने की कला फिर से नहीं सीखेंगे, तब तक हममें न राष्ट्रीय आत्मविश्वास आएगा और न ही इस भयंकर परिस्थिति से पार उतरने की शक्ति आएगी।

(ख) आज हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है, भारत में अन्न की कमी नहीं थी। भारत धन-धान्य से समृद्ध था। आज न्यूनता हमारे सामने तांडव कर रही है। जो धरती माता अभी सुजला, सुफला शस्यश्यामलां थी, वह क्षीण हो गई है। अपनी संतान को भी वह खिला नहीं सकती। क्योंकि जो हमारी सांस्कृतिक प्रणाली है, उसको नवीन दृष्टि से देखने की शक्ति हममें नहीं रही। किंतु यह बात निश्चय समझिए कि इस शक्ति के बिना हम जीवन में टिक नहीं सकेंगे।

(ग) हमारे पास अन्न नहीं है, क्योंकि पानी संग्रह की पुरानी पद्धति हम सुरक्षित नहीं रख सके। हमारे पास पानी नहीं है। वर्षा अनिश्चित है क्योंकि हम तरू-महिमा भूल गए हैं। हजारों वर्षों तक हम जीवित रहे लेकिन हमारी दृष्टि संकुचित हो गई। हम नए बन गए। तरू-महिमा की हमको परवाह ही नहीं रही।

(घ) हमें धरती को स्वर्ग बनाने के लिए जगह-जगह पर वृक्षारोपण करना चाहिए, सभी को पेड़-पौधे लगाने के लिए जाग्रत करना चाहिए और इनकी देखभाल करनी चाहिये।

(ङ) भारतीय संस्कृति का उद्भव आश्रमों और तपोवनों में हुआ था।

(च) वेदों, पुराणों में वृक्षों के बारे में यह कहा गया है कि ''जो मनुष्य लोगों के हित के लिए वृक्ष लगाता है, वह मोक्ष प्राप्त करता है।''

(छ) आज वृक्षारोपण की आवश्यकता इसलिये बढ़ गई है क्योंकि सभी कुछ हमें पेड़-पौधों से प्राप्त होता है। जगह-जगह पेड़-पौधे लगाने से हमारे

आस-पास का वातावरण शुद्ध रहता है। पशु पक्षी भी अपना घर पेड़ों पर बनाते हैं। जितने ज्यादा पेड़ लगेंगे उतना ही अधिक फायदा मनुष्य को होगा। फल, सब्जी, फूल आदि ऐसी बहुत सी चीजें हैं, जो हमें वृक्षों से मिलती हैं।

2. (क) हृदयों में असंतोष भरा है, क्योंकि हमारे पास खाने को पर्याप्त नहीं। हमारे पास अन्न नहीं है, क्योंकि पानी संग्रह करने की पुरानी पद्धति हम सुरक्षित नहीं रख सके। क्योंकि हम जीवित रहे लेकिन हमारी दृष्टि संकुचित हो गई। तरू महिमा की हमको परवाह नहीं। वृक्ष को हम काटने लगे। वृक्षारोपण आज एक फैशन बन गया है; क्योंकि उसमें जो धार्मिक श्रद्धा का तत्व था। वह सामाप्त हो गया।

(ख) पुत्र को हम स्वार्थ के कारण जन्म देते हैं परंतु तरू को हम परमार्थ के लिए उगाते हैं। ऋषि-मुनियों की तरह हमें वृक्षों की पूजा करनी चाहिए क्योंकि जो उन्हें काटते हैं वृक्ष उन्हें भी छाया, पुष्प और फल देते हैं; इसलिए वृक्षों का रोपण करना चाहिए।

भाषा और व्याकरण

1. (क) घृणा

(ख) मृत्यु

(ग) समता

2. (क) वृक्ष + रोपण

(ख) परम + अर्थ

(ग) राज + ऋषि

(घ) जीवन + उल्लास।

पाठ-17 : काबुली वाला

मौखिक प्रश्न

(क) मिनी ने लेखक से यह जटिल-प्रश्न किया कि '' बापूजी, माँ आपकी कौन लगती है?

(ख) रहमत से एक आदमी ने चद्दर खरीदी थी। उसके कुछ रुपये उसकी तरफ बाकी थे, जिन्हें देने से नाट गया। बस इसी बात पर दोनों में बात बढ़ गई और रहमत ने छुरा निकालकर भोंक दिया।

(ग) जब रहमत जेल से छूटकर लेखक के घर आया तो लेखक का मन एकाएक इसलिये सिकुड़ गया क्योंकि किसी खूनी को उन्होंने कभी आँखों से नहीं देखा था।

(घ) मिनी को देखकर रहमत इसलिये उदास हो गया क्योंकि उसकी शादी थी और वह बड़ी हो गयी थी।

(ङ) लेखक ने रहमत के हाथ में कुछ रुपये के नोट निकालकर रख दिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) एक साल की उम्र में, 2. (ख) घर के अंदर भाग गई, 3. (ग) कई साल की।

लिखित प्रश्न

1. (क) मिनी की जब काबुली से मित्रता हुई तब उसकी उम्र पाँच साल थी।

(ख) रामदयाल कौए को काक कहता था।

(ग) जेल से छूटने के बाद रहमत लेखक के घर मिनी से मिलने आया था।

(घ) काबुली को आते देखकर मिनी घर के अंदर इसलिए भाग गई क्योंकि उसने चिल्लाकर कहा था '' काबुली वाले, ओ काबुली वाले।

(ङ) उसके मन में एक अंधविश्वास-सा बैठ गया कि उस झोली के अंदर तलाश करने पर उस जैसी भी दो-चार जीती जागती लड़कियाँ निकल गई हैं।

(च) जब रहमत जेल से छूटकर आया तो लेखक उसे इसलिये नहीं पहचान सका क्योंकि उसके पास न तो झोली थी, न वैसे लंबे-लंबे बाल थे और न चेहरे पर पहले जैसा तेज था।

(छ) मिनी के जाने के बाद रहमत गहरी साँस लेकर-जमीन पर इसलिए बैठ गया क्योंकि उसकी समझ में यह बात एकाएक स्पष्ट हो गई कि उसकी लड़की भी इतने दिनों में बड़ी हो गई होगी।

2. (क) मिनी जितनी देर भी जागती वह लगातार बोलती रहती। वह एक क्षण भी खामोश नहीं बैठती। मैंने अपने उपन्यास के सत्रहवें परिच्छेद में हाथ लगाया ही कि इतने में मिनी ने आकर कहना शुरू कर दिया "बापू जी, रामदयाल दरबान काक का 'कौआ' कहता था, वो कुछ जानता नहीं न बापू जी?' मेरे कुछ कहने से पहले ही उसने दूसरा प्रसंग छेड़ दिया—

"देखो बापू जी, भोला कहता था, आकाश हाथी सूँड से पानी फेंकता है, इसी से वर्षा होती है। अच्छा बापूजी, भोला, झूठ-मूठ को बहुत बकता है न! खाली बक-बक किया करता है, रात-दिन करता है। "।

(ख) रहमत की बात को वह साफ-साफ नहीं समझ पाती थी लेकिन किसी भी बात का जवाब बिना दिए शांत नहीं रहती थी। यह उसके आचारण के खिलाफ था। उलटे वह रहमत से पूछती- "तुम ससुराल जाओगे?" रहमत काल्पनिक ससुर के लिए अपना मोटा घुँसा तानकर कहता- "हम ससुर को मारेगा"

भाषा और व्याकरण

1. मैं अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में बैठा हुआ हिसाब लिख रहा हूँ। इतने में रहमत आया और सलाम करके खड़ा हो गया। पहले तो मैं उसे पहचान न सका। उसके पास न तो झोली है, न वैसे लम्बे-लम्बे बाल हैं, और न चेहरे पर पहले जैसा तेज है। अंत में उसकी मुस्कराहट पहचान सका कि वह रहमत है।

2.

जटिल	जटिलता	जरूरी	जरूरत	कठिन	कठिनाई
संदिग्ध	संदिग्धता	निश्चित	निश्चित	उदास	उदासी
प्रफुल्ल	प्रफुल्लता	खामोश	खामोशी	झूठा	झूठापन

(क) परिचय

(ख) सयाने, सहज, अच्छा

(ग) चुप, विरूद्ध

(घ) मुस्कराहट

(ङ) लज्जा।

पाठ–18 : संसार पुस्तक है

मौखिक प्रश्न

(क) हिंदुस्तान दुनिया का एक छोटा–सा हिस्सा है।

(ख) नहीं।

(ग) पहले उस भाषा के अक्षर सीखने पड़ते हैं।

(घ) पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियाँ आदि से हमें पुराना हाल मालूम हो सकता है।

(ङ) हर एक टुकड़ा खुरदरा और नुकीला होगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) जवाहरलाल नेहरू ने

2. (ख) मसूरी में

3. (ख) लाखों–करोड़ों वर्ष पुरानी

लिखित प्रश्न

1. (क) यह पत्र इलाहाबाद से लिखा गया था।

(ख) केवल जानवर थे।

(ग) भारत अपेक्षाकृत बड़ा देश है।

(घ) क्योंकि तब यह धरती बेहद गरम थी।

(ङ) पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियाँ आदि से हमें पुराना हाल मालूम हो सकता है।

(च) दरिया के पेंदे में लुढककर, उसके किनारे घिसकर वह चिकना व चमकदार हो जाता है।

(छ) बच्चे रेत में खेलते हैं, वहाँ रेत के घरौंदे बनाते हैं।

भाषा और व्याकरण

1. स्वयं कीजिए।

2. (क) पूछा करती (ख) ध्यान रखना (ग) रह सकती (घ) सोच निकालें (ङ) पढ़ना जानती।

■ ■ ■